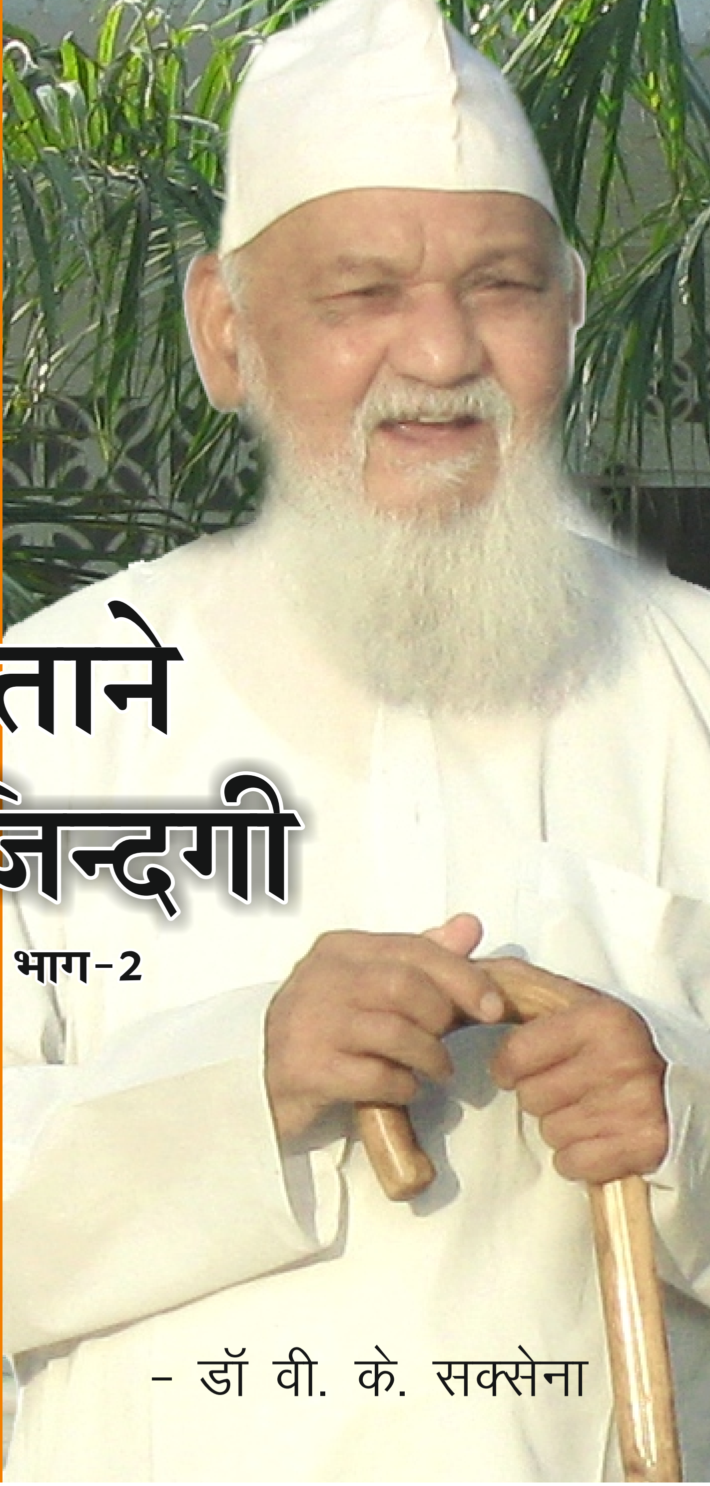

दास्ताने जिन्दगी

भाग-2

- डॉ वी. के. सक्सेना

परमपूज्य महात्मा राम चन्द्र जी महाराज उर्फ लालाजी महाराज
अधिष्ठाता रामाश्रम सत्संग फतेहगढ़ नवदियां फतेहगढ़
जन्मतिथि 02.02.1873   निर्वाणतिथि 14.08.1931

परम पूज्य महात्मा रघुवर दयाल जी महाराज उर्फ चच्चा जी महाराज
नौबस्ता नवीनगल्ला मण्डी कानपुर
जन्मतिथि 07.10.1875 निर्वाण तिथि 07.06.1947

दास्ताने-जिन्दगी

भाग– 2

अपने परम पूज्य गुरूदेव
डा0 श्रीकृष्ण लाल भटनागर जी
एवं
अपने आराध्य मुर्शिदे–कामिल
डा0 श्याम लाल सक्सेना जी
के चरण कमलों में
सादर समर्पित

–दास
डा. वी. के. सक्सेना

प्रथम संस्करण–
2016

मूल्य–
75 रूपये

प्रिन्टर
एक्सेल प्रकाशन
स्टेशन रोड़, लखनऊ

प्रकाशकः
रामाश्रम सतसंग, लखनऊ

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	दो शब्द	4
2.	आभार	7
3.	हमारे पूज्य गुरुदेव	10
4.	भण्डारे के अनुभव	12
5.	भण्डारा फतेहगढ	14
6.	गाजियाबाद भण्डारे का संक्षिप्त इतिहास़	25
7.	भण्डारा गाजियाबाद	29
8.	संतमत की शिक्षा का निचोड़	39
9.	लखनऊ सत्संग व भण्डारा	44
10.	अनुभूति एवं संस्मरण	58
11.	आध्यात्मिक स्वप्न	111
12.	आशीर्वाद गीत	223

ॐ

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक दास्ताने जिंदगी का ही एक अंग है परन्तु उस पुस्तक में बहुत सामग्री आ जाने से वह बहुत भारी व मोटी हो गयी है, इस कारण पठन–पाठन की सुविधा का ध्यान रखते हुए इस दास्ताने जिंदगी को दो भाग में कर दिया गया है। वह पहली पुस्तक जीवन चरित्र है। जीवन चरित्र किसी के आचरण, व्यवहार, रहन–सहन, वंश तथा उस व्यक्ति के कार्य–कलापों की एक श्रृंखला होती है परन्तु मैंने अपने दास्ताने जिंदगी में इन सबको गौण कर, अपने बुजुर्गों से सीखे हुए सब तौर–तरीके, उनके द्वारा दया कर बताये हुए परमार्थ की हर गूढ़ विषयों, जितना मैंने समझा, वह सब लिखकर पुस्तक को विशेषता दी है। मैंने वह सब लिख दिया है जो मैंने जाना है। पुस्तक का ऑकलन हर व्यक्ति अपनी श्रद्धा, अपने विश्वास तथा अपने पारमार्थिक कमाई के मापदण्ड से ही कर पायेंगे परन्तु परमार्थ के वो अनुभव तथा बुजुर्गों की कृपाधार का वर्णन कवि बिहारी का वो दोहा–

सतसइया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगें, घाव करें गम्भीर।।

को चरितार्थ करता है। जो कुछ गुरुजनों ने बताया है, वह सब उस पुस्तक में लिखा गया है जो देखने में बहुत सरल है परन्तु जब उनको अपनाया जायेगा तो वह जीवन को नई दिशा देने वाले आत्मोद्धार के आयाम सिद्ध होंगे। पुस्तक के तीन आयाम हैं, एक भण्डारे जिनमें मुख्य फतेहगढ़, गाजियाबाद, लखनऊ तथा कुछ सेन्टरों के भी हैं जिनका अनुभव बहुत ही महत्वपूर्ण है। दूसरा आयाम संस्मरण है वो मेरे निज के ही अनुभव व अनुभूति है परन्तु उनमें बुजुर्गों की दया, कृपा तथा आशीर्वाद जुड़ा है। उसी उद्देश्य से यहाँ लिखा जा रहा है। तीसरा आयाम स्वप्न है।

इस जीवन चरित्र का जो भाग छूट गया है, वह 84 वर्ष के जीवन के अनुभव, संस्मरण तथा स्वप्न हैं जिन्हें भी पाठकों को उपलब्ध कराना मैं अपना फर्ज समझता हूँ। संस्मरण एवं अनुभूति तो शत–प्रतिशत सत्य हैं, वहीं स्वप्न तो स्वप्न ही हैं, वह मानस के चित्र के समान होते हैं। बहुत से स्वप्न जो परमार्थ के किसी रहस्य को परत–दर–परत खोलते हैं, जिनको हम अल्पबुद्धि समझ नहीं पाते हैं। परन्तु बहुत से स्वप्न समय के अंतराल में सत्य सिद्ध हुए। स्वप्नों के माध्यम से प्रभु एवं प्रकृति के द्वारा कई इशारे होते हैं, पर हम समझ नहीं पाते हैं। मैंने जैसा अनुभव किया, जैसा समझ पाया, जैसे स्वप्न देखे, वैसे ही लिख रहा हूँ। कुछ जगह नाम हटा दिए गये हैं क्योंकि किसी पर आक्षेप करना या किसी को आहत करना मेरा उद्देश्य

नहीं है। मेरा उद्देश्य अपनी सब भावनाओं, अनुभूतियों, अपने गुरुजनों की दया, कृपा तथा अनुग्रह को अपने भाइयों एवं बच्चों के लिए लिखकर अपने को मुक्त कर, केवल चातक की तरह अपने गुरुदेव एवं परम् पूज्य बाबूजी महाराज के स्वाति की बूंद की प्रतीक्षा करना है, यही मेरी अन्तिम इच्छा है। मुझे अब इस बात की कोई फिक्र नहीं कि किसको क्या अच्छा लगेगा, क्या बुरा? यदि किसी को कुछ अच्छा न लगे तो उसके लिए क्षमा–प्रार्थी अवश्य हूँ। अब तो बस एक ही आरजू है, एक ही विनती है, एक ही प्रार्थना है कि ''हे गुरुदेव बस आप ही आप हो'' बस यही चाहता हूँ कि आपका सहारा, आपके श्री चरणों में, आपकी गोद में, आपके सानिध्य में यह प्राण जायें और लोग कह उठें कि–

बड़े शौक से सुन रहा था जमाना।
तुम्ही सो गये (गुरुदेव की) दास्ताँ कहते–कहते।।

–सेवक
डा0 वी0के0 सक्सेना
बी–1/26 सेक्टर–के,
अलीगंज, लखनऊ

आभार

यद्यपि बुजुर्गों के काम को करने या परमार्थ का कोई भी कार्य करने वाला स्वयं ही प्रभु प्रेम की ओर अग्रसर हो जाता है। उसको अपने इस कार्य का स्वयं यथार्थ लाभ मिल जाता है। परन्तु अदब एवं कृतज्ञता के दृष्टिकोण से मेरा यह अहम् कर्तव्य बनता है कि मैं उन सब लोगों का, जिन्होंने इस कार्य को पूर्ण करने में मेरा सहयोग किया है, उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करूँ और अपने बुजुर्गों एवं ईश्वर से उनके लिए प्रार्थना करूँ।

सबसे प्रथम हृदय से पूर्ण समर्पण के साथ अपने गुरुदेव परमसंत डा0 श्रीकृष्ण लाल, सिकन्द्राबादी एवं अपने मुर्शिदे कामिल पिता परम संत डा0 श्यामलाल सक्सेना जी तथा अपने बड़े भाई डा0 आर0के0 सक्सेना के चरणों में प्रणाम करते हुए आभार प्रकट करता हूँ कि जो कुछ कर पाया, उनकी दया, कृपा एवं आशीर्वाद से ही कर सका हूँ। उनको शत–शत नमन् के साथ प्रार्थना करता हूँ कि वो अपना आशीर्वाद मुझ पर और मेरे परिवार पर सदैव बनाये रखें और पूरे सत्संग परिवार को अपनी छत्रछाया में रखकर मानव जीवन के उद्देश्य को पूरा करने का बल प्रदान करें।

मैं श्री आर0के0 शुक्ला जी का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने सारी डायरी को, सब पत्रों को जो पुराने होने से बहुत जीर्ण अवस्था में हैं, उन सबको नई डायरियों में लिखकर पुस्तक योग्य बनाने में बहुत सहयोग किया है। उनके अथक परिश्रम की मैं तहे दिल से सराहना करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर उन्हें तथा उनके परिवार को सदा सच्चे रास्ते पर कायम रखे।

मैं श्री अशोक अवस्थी जी, गोमतीनगर निवासी का भी बहुत हृदय से आशीर्वाद के साथ आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने कुशल टाइपिंग से सत्संग के पुस्तक प्रकाशन में बहुत सुन्दर योगदान दिया है, ईश्वर उनको तथा उनकी औलाद को सदा सुखी रखे और सत्संग के प्रति ऐसी ही निष्ठा सदा बनी रहे।

मैं चि0 गौरव पुत्र श्री त्रिभुवन सिंह एवं श्री त्रिभुवन सिंह का भी आभारी हूँ जिन्होंने भी पठन–पाठन तथा टाइप आदि का काम बहुत श्रद्धापूर्वक किया है। ईश्वर इन सबको अपना सच्चा प्रेम देकर इस राह पर सदैव प्रशस्त रखे।

श्री मुरलीधर ने भी अपना बहुत व्यस्त समय निकाल कर पुस्तक की पूर्णता में अपना योगदान दिया है। ईश्वर उन्हें दीन और दुनिया की हर बला से बचाकर अपने प्रेम का पात्र बनाये।

अंत में राजेन्द्र गोयल का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन का पूरा भार लेकर मुझे हर भार से मुक्त कर दिया। यह मेरी अन्तिम पुस्तक है। अपने इस

अन्तिम पड़ाव में जो कुछ जाना, जो समझा, जो अनुभव किया, यहाँ तक कि जो उनके आशीर्वाद से ख्वाब या संस्मरण के रूप में घटित हुआ, जिसमें प्रभु गुरुजनों का इशारा भी है और मानसिक पड़ाव भी, अपने पूरे व्यक्तित्व को खोलकर आप सब को भेंट करते हुए प्रार्थना करता हूँ, उचित अनुचित पर ध्यान न दें, यह मेरा हर पाठक से निवेदन है। पुस्तक के प्रकाशन कराने वाले को बहुत–बहुत आशीर्वाद। वह दीन और दुनिया दोनों में मालामाल हों और बुजुर्गों के प्रति पूर्ण समर्पित भी रहें, ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

जो कुछ दिया था आपने, यह सब को बाँट दी।

आमीन–आमीन–आमीन।

पूर्ण आभार एवं इस प्रार्थना के साथ–

या इलाही ता अबद कायम रहे ये सिलसिला।

सेवक,
डा0 वी0के0 सक्सेना
बी–1/26 सेक्टर–के, अलीगंज, लखनऊ

देवस्थली आश्रम
चकगंजा गिरी, रैथारोड, लखनऊ

हमारे पूज्य गुरुदेव

विकल प्राणों को संजीवन थे, जीवन के सहारे थे।
वो थे परमात्मा का रूप, अवलम्बन हमारे थे।
वे क्या थे, कौन थे, कैसे थे, कह सकता नहीं कोई।
जब आती याद तो फिर, मौन रह सकता नहीं कोई।

बड़े ही थे विलक्षण गुण, न कोई थाह पाता था।
ठगा सा देखता रहता था, जो सानिध्य पाता था।।
था उनसे आत्मा की दृष्टि से, एक प्रेम का नाता।
बड़ा सौभाग्यशाली था, जो उनके पास था जाता।।

था कोमल और मधुर स्वर, प्रेम से भीगी हुई बोली।
धनी निर्धन को भर देते थे, एक आनन्द से झोली।।
अहर्निश आत्मा में लीन रहते थे, महा–ज्ञानी।
बड़े थे प्रेम के दानी, नहीं थे लेश भर मानी।।

निरन्तर प्रेम का झरना बहा करता था बातों में।
छलकता प्रेम का प्याला था, निर्मल दिव्य दांतों में।।
हटा देते थे मन बाहर से, अंतर से लगाते थे।
वचन और कर्म मन की एकता, रखना सिखाते थे।।

वे साधना के रहस्यों को, सदा खुल कर बताते थे।
चरित उज्जवल बने दिन–दिन, यही संयम सिखाते थे।।
रजा में थे सदा राजी, बड़े सन्तुष्ट रहते थे।
सदा समभावना से दुःख सुख के द्वन्द सहते थे।।

सहा जाता था न दुःख उनसे, किसी भी जीव का कोई।
तड़पती थी शमॉ जो देखती, जलता शलभ कोई।।
लहर ऊपर से उठती थी, हृदय गंभीर सागर था।
हर एक छोटा बड़ा अच्छा बुरा उनको बराबर था।।

निरन्तर दर्शनों से तृप्ति होती थी न आंखों की।
मधुर वचनामृतों से प्यास बुझती थी न कानों की।।
जो उनके एक–एक गुण को सभी रोमावली गायें।
तो सम्भव है कई जन्मों में पूरी साध कर पायें।।

पर अपने में कहां हम इस कदर सामर्थ पाते हैं।
उन्हीं को सर झुकाते हैं उन्हीं से लौं लगाते हैं।।
जब आती है हृदय में याद जी भरकर रूलाने को।
वचन भी संग आते हैं हमें धीरज बधाने को।।

नहीं अब वह सुनहरे दिन कभी जीवन में आयेंगे।
कहां सत्, चित परम आनन्द की वह मूर्ति पायेंगे।।
बस दो यही वरदान अब तक की शरीअत को।
सदा पालन करें और सार्थक कर दें नसीहत को।।

प्रभो, निसदिन है तुमसे प्रार्थना कातर करूण मन की।
जहाँ भी हो वहीं से लेते रहना सुध दुखीजन की।।
दयामय आप जैसा कौन हित चिन्तक हमारा है।
तुम्हारे दीन दासों को तुम्हारा ही सहारा है।।

भंडारे के अनुभव

भंडारे का अर्थ हमारे संतमत में एक ऐसे पर्व का अर्थ रखता है जिसमें उस संत के सब अनुयायी एकत्र होकर एक साथ अपने इष्ट का आह्वान करके अपने गुरुदेव के चरणों में अपने श्रद्धा–सुमन अपर्ण करते हैं। उस समय का सिखाने वाला उस भंडार से अपने को जोड़कर अर्थात् अपने को इष्ट में लय करके लोगों को उनके फैज से फैजयाब करते हैं इसलिये भंडारा बहुत मुबारक और पवित्र होता है। भंडारे में ऐसे–ऐसे रहस्य खुलते हैं जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते।

हमारे परम् पूज्य बाबूजी महाराज भंडारे की पवित्रता पर बहुत जोर देते थे। भंडारे की तैयारी महीनों पहले से होने लगती है।

परम् पूज्य ताऊजी महाराज एवं परमपूज्य बाबूजी महाराज डायरी लिखने पर बहुत जोर देते थे। बाबूजी महाराज ने तो डायरी को अपने जीवन का निचोड़ माना है। उन्होंने डायरी में प्रत्येक भंडारे की हालतों का वर्णन किया है। वो हम लोगों से भी भंडारों की हालत लिखने को कहते थे जो हम लोगों ने पत्रों द्वारा लिखकर भेजी है और 1987 तक का 'वह सब **'अनमोल रत्न'** नामक पुस्तक में छप चुका है। मैं ने भी सदैव से ही डायरी लिखी है। अपनी स्टूडेन्ट लाइफ से हर

बात नोट कर भंडारे में अपने पूज्य गुरुदेव को दिखाता था। मैंने अपने परम पूज्य बाबूजी को सदा अपना आदर्श (आइडियल) माना है। इस कारण भरसक जीवन भर उनका अनुकरण करने की कोशिश की है। उन्हीं का अनुकरण कर मैं ने भी सभी भाई–बहनों से भंडारे की हालतें लिखकर देने को कहा। मुझे हर्ष है कि बहुत से भाइयों ने लिखकर दिया भी है। कुछ भाइयों की हालत सराहनीय भी है, परन्तु उन्हें सदा अपनी उन्नति के प्रति सचेत रहना चाहिये, क्योंकि माया बहुत प्रबल है। मैं इस पुस्तक के माध्यम से अपने निजी अनुभव जो मुझे विभिन्न भंडारों में हुए, लिख रहा हूं। कई भाई–बहनों के अनुभवों में समानता भी है। आप सबसे निवेदन है कि अपने–अपने अनुभवों को मेरे अनुभवों से मिला लें और बुर्जुगों के प्रति श्रद्धा रखते हुए आत्मिक उन्नति जो मानव जीवन का लक्ष्य है, उस ओर बढ़ें। परमात्मा आप सबको स़च्ची राह पर चलाये और आप उस परमपद को प्राप्त कर लें जो मानव जीवन का वास्तविक लक्ष्य है। ये काम केवल मैं ही नहीं कर रहा हूं, हर एक सेक्ट के प्रेमी भाइयों ने विभिन्न पुस्तकों में अपनी भंडारे की हालते लिखी हैं।

–डा. वी. के. सक्सेना

भण्डारा फतेहगढ़

''फतेहगढ़ हमारी जड़ है'' का संदेश देने वाले हमारे परम पूज्य बाबूजी के जीवन में फतेहगढ़, परम पूज्य लालाजी की समाधि ही आदि और अन्त था। उनका हर अनुभव हर घटना हर छोटी–बड़ी वस्तु फतेहगढ़ से ही आरम्भ होती थी और उसी पर विराम भी। अपने पूज्य गुरुदेव के चरणों में वर्ष में एक बार आदर श्रद्धा से नमन करना उनका सभी निजजनों को आदेश था। विलक्षण सूझ–बूझ रखने वाले परम पूज्य बाबूजी ने हम सब के लिए एक राह प्रशस्त कर दी है। हमें तो बस उस आदेश का पालन करना है।

मैं अपने जीवन में पहली बार वर्ष 1958 में अपने गुरुदेव डा0 श्रीकृष्ण लाल जी के आदेश से अपने छोटे भाई के काम से गया था। तब तक शायद मुझे उनकी महानता का ऑकलन करने की इतनी तमीज या योग्यता नहीं थी। मेरे गुरुदेव ने कहा था कि स्टेशन पर नल लगा है, नहाकर पहले समाधि पर जाना, फिर काम के लिए जाना। मैंने वैसा ही किया। आशीर्वाद अवश्य ही मिला होगा पर कुछ याद नहीं है। उसके बाद वर्ष 1970 तक कभी भण्डारे में गया कभी नहीं गया और पढ़ाई एवं परीक्षाओं के कारण शुक्रवार की शाम तक हम दोनों भाई पहुँचते थे। सन् 1961 में नौकरी में आ जाने के बाद भी वर्ष 1972 तक क्रम ऐसा ही रहा। सन् 1973

में परम पूज्य लालाजी महाराज की जन्म शताब्दी थी। एक जनसमूह उमड़ पड़ा था। छोटे से शहर में लोगों का सैलाब सा आ गया था। पूज्य बाबूजी का आदेश था, मय बच्चों के आना। लिहाजा बच्चों के साथ गया। एक अजीब समां था जो सब पर हावी हो रहा था। उस भण्डारे का वर्णन कर सकना असम्भव है। सारी अव्यवस्थाओं में भी एक सुन्दर व्यवस्था ईश्वर का एवं बुजुर्गों का करिश्मा था। व्यवस्था के संस्थापक श्री अखिलेश जी चारपाई पर पड़े थे। समाधि के बाहर जैसे सारी व्यवस्था कोई अदृश्य शक्ति कर रही थी। इस भण्डारे ने दिल दिमाग पर ऐसा असर डाला कि 1973 से आज 2016 तक उनकी दया से कोई नागा नहीं हुआ। उनकी मेहरबानियाँ, उनकी कृपाधार का अनुभव स्वयं भी करने लगा तथा परम पूज्य बाबूजी द्वारा भी कराया जाने लगा।

फतेहगढ़ भण्डारा 1973 से 1987

1973 से 1987 तक हम लोगों के ऊपर परम पूज्य बाबूजी का साया व वरद्हस्त रहा था। हम लोग उनके संरक्षण में फतेहगढ़ जाते थे और उनकी दुआ से परम पूज्य लालाजी महाराज के कृपाधार से खूब लाभान्वित होते रहे। पूज्य बाबूजी के अनुभव में ''कि परम पूज्य लालाजी ने खुद अपने मुबारक हाथों से सेठ के गले में माला डाल दी और दीन्नू जो कि आखिर तक मेरे साथ थे, उनके ऊपर बहुत से

फूल छिड़क कर फूलों की वर्षा की'' हमारे परम पूज्य बाबूजी इससे बहुत खुश थे।

फतेहगढ़ भण्डारा 1988 से 2001

फतेहगढ़ भण्डारे 1988 में एक अजीब सा सूनापन, परम पूज्य बाबूजी का अभाव हम दोनों भाइयों को लगा परन्तु कुछ भी हो समाधि में बहुत अच्छा लग रहा था। प्रकाश ही प्रकाश एक अजीब शान्ति और परम पूज्य लालाजी महाराज का एहसास बना रहा। रायपुर एवं कुबेरपुर में भी बड़ी दया रही।

फतेहगढ़ भण्डारा 2002 से 2006

इन भण्डारों में स्थिति दिन पर दिन बहुत अच्छी होती गई और उनके फैज की कभी–कभी बहुत ही अच्छी हालत रही। उन दोनों भण्डारों पर भी बहुत अच्छा रहा।

फतेहगढ़ भण्डारा 2007 से 2012

इन भण्डारों में बहुत लताफत आ गयी। एक दम सुन्न की स्थिति थी, हर जगह परम पूज्य लालाजी का आशीर्वाद एवं उनके होने का प्रबल एहसास था। समाधि प्रकाश से भरी रहती और वातावरण में उनकी दया एवं फैज था। सभी लोग खुश थे। भण्डारे इन सब वर्षों में बहुत अच्छे रहे।

इन भण्डारों में एक समूह सा बुजुर्गों का मालूम पड़ता था कि मेरे पीछे हैं और एक खास तरह की खुशबू फैल रही

थी। ऐसी खुशबू पहले भी कई बार हुई थी पर इस बार इसका ठहराव बहुत देर तक रहा और बहुत से लोगों को इसका एहसास हुआ।

फतेहगढ़ भण्डारा–2013 (दिनांक 28–31 मार्च)

परमपूज्य चच्चाजी की समाधि पर हम लोग बराबर सन् 1994 से जा रहे हैं। इस वर्ष जैसी खुशी थी, मन जितना उत्साहित था, इसके पूर्व कभी इतना नही था। हम लोग अपनी INNOVA गाड़ी से सुबह 6 बजे अपने बड़े पुत्र अतुल कुमार के परिवार सहित चलकर 8:15 बजे परमपूज्य चच्चाजी महाराज की समाधि पर पहुॅच गये। हाथ मुँह धोने के बाद सभी लोगों के साथ करीब पौने 9 बजे समाधि परिसर में फूल आदि चढ़ाकर पूजा के लिए बैठ गये। प्रसन्न मन के साथ–साथ मन इतना शान्त था, जिसका बयान नहीं कर सकता। समाधि पर बैठते ही सर की तरफ परमपूज्य चच्चाजी महाराज को बड़ा खुश पाया। समाधि में चारो तरफ जितने लोग बैठे हुए थे उन पर White प्रकाश पड़ रहा था।

परमपूज्य चच्चाजी महाराज के पीछे, परम पूज्य बाबूजी महाराज को बड़े खुश एवं प्रसन्न मुद्रा में मुस्कराते हुए बराबर खड़े हुए देखा। परमपूज्य चच्चाजी महाराज साहब सभी पर थोड़ी–थोड़ी देर पर पीले रंग के फूल फेंक रहे थे और सबको देखकर बहुत प्रसन्न मालूम हो रहे थे।

गो कि मेरे छोटे पुत्र अनमोल वहॉ मौजूद नहीं थे मगर उनकी मौजूदगी का अहसास बराबर 11 बजे तक बना रहा।

परमपूज्य चच्चाजी महाराज के पोते की समाधि पर पीले फूल चढ़ाकर हम लोग वहॉ से चल दिये। रास्ते भर मन बड़ा शान्त और खुश रहा। कोई भी थकावट का नाम निशान नहीं था। Guest House तक पहुॅच गये। गेस्ट हाउस से शाम को 5 बजे सभी भाई गाजियाबाद वाले भी मौलवी अहमद अली साहब की समाधि पर गए।

2013 के भण्डारे से देख रहा हूँ कि सब पाण्डाल खाली है और लोग दूसरी तरफ बाहर सड़क के पार बैठे हैं। कह नहीं सकता यह क्या है परन्तु इसका बहुत साफ अनुभव हो रहा है।

फतेहगढ़ भण्डारा 2015

(दिनांक 03,04,05 अप्रैल, शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार)

हमलोग 2 अप्रैल, बृहस्पतिवार को प्रातः 6.00 बजे घर से परम् पूज्य चच्चाजी महाराज की समाधि (कानपुर) पर गये। समाधि पर बैठते ही मुझे ऐसा लगा कि परम् पूज्य बाबूजी महाराज (डा0 श्याम लाल सक्सेना) मेरे बाईं तरफ बैठे हैं, जहाँ पर उनके बैठते ही यह एहसास हुआ कि परम् पूज्य चच्चा जी महाराज मेरी तरफ मुँह करके समाधि पर बैठे हैं, फिर ऐसा उनका फैज जारी हुआ कि उसके बाद कोई होशो—हवास नहीं रहा, जब तक समाधि पर बैठे रहे।

सायं को जब हम लोग फतेहगढ़ पहुँचे तो काफी भीड़ हो गयी थी। पाण्डाल में पूजा हुई। पूजा में बैठते ही मुझे अपने चारों तरफ एक बहुत अच्छी खुशबू महसूस हुई जो कि बराबर बनी रही। परम् पूज्य बाबूजी महराज की बराबर व कभी –कभी ताऊ जी महाराज की मौजूदगी बनी रही। गो कि और सेक्ट के लोग भी काफी संख्या में थे, पूजा में बहुत अच्छी तबियत लगी।

फतेहगढ भण्डारा 03 अप्रैल, 2015

सुबह के वक्त मेरे अगल–बगल प्रभात पुत्र श्री ओंकार भाई साहब तथा चन्दा बाबू पुत्र पोस्टमास्टर साहब, बैठे थे। मेरे दायीं तरफ विनय (प्रपौत्र पूज्य लालाजी महाराज) बैठे थे। उस रोज भी वह खुशबू बराबर मौजूद रही। पाण्डाल खचाखच भरा था। प्रकाश सुनहरे रंग का रह–रह कर पूरे पाण्डाल पर छा जा रहा था। यद्यपि लगातार नहीं था।

दिनांक 03 अप्रैल को दोपहर में रायपुर के लिए रवाना हुए। परम पूज्य फज्ल अहमद साहब की समाधि पर बैठते ही एक बुजुर्ग, जिनको मैंने वर्ष 2012, 13 व 2014 के भण्डारों पर देखा था, वह इस बार भी बराबर बैठे रहे। दो बार समाधि से एक अजब सा नूर निकल कर सब पर छा गया। अन्त में मेरे साथ बगल में मेरे छोटे पुत्र अनमोल बैठे थे, वह नूर उन्हीं में समा गया। बहुत अच्छी हालत रही और आनन्द व खुशी

रही। उसके बाद हम लोग परम् पूज्य अहमद अली साहब की समाधि पर गये। मजार पर शजरा पढ़ने के बाद ही एक अजब सी महवियत छा गयी और एक खिंचाव सा महसूस हुआ, उसके बाद कुछ होश नहीं रहा।

दिनांक 04 अप्रैल, 2015

हर दिन की तरह वह खुशबू मेरे चारों ओर आती रही। लेकिन बूँदा–बॉदी की वजह से लोग उठने–बैठने लगे जिससे डिस्टर्ब हो गया। कुछ बारिश भी ज्यादा हो गयी। उसी समय मैंने अपने पूज्य गुरुदेव डा0 श्रीकृष्ण लाल जी को तथा अपने पिता डा0 श्यामलाल जी को तथा एक और बुजुर्ग दाढ़ी वाले थे, जिनको मैं नहीं पहचान पाया, वह पाण्डाल में चारों तरफ घूम रहे थे। मेरे गुरुदेव मुझसे कह रहे थे कि परेशान मत हो, मैं अभी सब खत्म कर दूँगा, सब ठीक हो जायेगा और वैसा ही हुआ। मैंने सभी सत्संगी भाईयों से कहा कि परेशान न हो, सब ठीक हो जायेगा। यही कृपा होती है और उस समय मैंने कृपा और आशीर्वाद के बारे में ही समझाया, परन्तु वह हालत ऐसी थी कि मैं नहीं मेरे गुरुदेव ही बोल रहे हों। सुबह की बैठक भी काफी अच्छी रही।

04 अप्रैल को जब घर पर गये, बहुत अच्छा वातावरण रहा। चि0 दिनेश जी बहुत प्रेम से मिले। मैंने बारिश एवं आँधी आदि परेशानी को दूर करने के लिए एक हाल बनवाने का

विचार रखा। उन्होंने अपनी सहमति दे दी। शाम को 5 बजे से 6 बजे तक पूज्य पोस्टमास्टर साहब की समाधि पर गये। वहाँ पहले से अन्य लोग भी बैठे थे। जब हम लोग पहुँचे तो चन्दा बाबू भी हम लोगों के साथ बैठे। इस बार उतनी दया नहीं हुई जितनी परसाल हुई थी। शायद उनको पूज्य लालाजी महाराज की समाधि पर पूजा का समय हो रहा है, इसका ख्याल Prevail कर रहा था।

04 अप्रैल की सायं को पाण्डाल मे ंपरम पूज्य बाबूजी महाराज की मौजूदगी हर जगह और वही खुशबू और प्रकाश रह–रह कर दिखाई दे रहा था। विशेष बात यह थी कि खुशबू बराबर पूरे दिन बनी रही।

दिनांक 05 अप्रैल 2015

उस दिन पूजा समाधि मंदिर के अन्दर हुई और बहुत फैज था, परम् पूज्य लालाजी महाराज का। तमाम समाधि पूरे प्रकाश से भरी हुई थी जिसका रंग सफेद था। हर वक्त परम पूज्य लालाजी महाराज की मौजूदगी समाधि पर बनी रही। त्रिकोण के आकार में छोटे–छोटे बल्ब से जल रहे थे। परम् पूज्य लालाजी महाराज की समाधि के ऊपर काफी ऊँचाई तक बहुत से बुजुर्ग बैठे हुए एक के ऊपर एक दिखायी दिए। सबसे ऊपर जैसे आसमान की ऊँचाई के लगभग परम् पूज्य ताऊ जी एवं परम पूज्य बाबूजी महराज दिखाई दिए। बीच के

बुजुर्गों को पहचान न सका। यह दृश्य बहुत सुन्दर था। इसी प्रकार का दृश्य एक बार पूज्य बाबूजी के साथ में भी दिखाई दिया था जिसको मैंने उन्हें पत्र द्वारा सूचित किया था।

इसी बीच में विनय ने कहा चाचा जी विदाई का गीत पढ़िये। उस गीत को मेरी पत्नी ने पढ़ा जिससे एक समां सा बँध गया। सभी लोग बहुत मानूस हुए। सब पर महवियत की हालत छा गयी।

इस प्रकार परम् पूज्य बाबूजी महराज डा0 श्याम लाल सक्सेना जो कि परम् पूज्य लालाजी महाराज के प्रिय शिष्य थे, ने सन् 1981 में यह कहा था कि बेटे! मैं देख रहा हूँ कि गाजियाबाद और फतेहगढ़ में इतना आदमी आयेगा जो सड़क तक फैल जायेगा कि तुम लोगों को सम्हालना मुश्किल हो जायेगा। आज इस बार करीब 34 वर्ष बाद शत–प्रतिशत उनकी बात सही हुई।

इस बार बृहस्पतिवार से ही इतना आदमी था जितना मैं 1970 से जा रहा हूँ, कभी नहीं देखा। ईश्वर से एवं बुजुर्गों से दुआ करता हूँ कि वह अपनी कृपाधार ऐसे ही सबपर बनाये रखें। हमें और हमारी बुद्धि को सदैव सत् पर रखें जिससे हम आपकी कृपाके पात्र बने रहें और आपके द्वारा लगायी हुई सत्संग रूपी वाटिका सदा–सदा सुगन्ध से भरी लहलहाती रहे।

फतेहगढ़ 91वाँ भण्डारा 2016

(25, 26 एवं 27 मार्च, शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार)

हम सभी लोग लखनऊ से दिनांक 25.03.2016 को सुबह साढ़े नौ बजे करीब फतेहगढ़ समाधि पर पहुँचे। उस समय तक वहाँ वही लोग पहुँच पाये थे जो अपनी कार से गये थे। समाधि पर बैठते ही परम् पूज्य लालाजी महाराज, परम पूज्य चाचा जी महाराज, परम पूज्य ताऊ जी महाराज एवं परम पूज्य बाबूजी महाराज साहब की कृपा का प्रत्यक्ष अनुभव होने लगा। थोड़ी देर बाद प्रिय विनय ने एनाउन्स किया कि सब लोग जो समाधि में बैठे हें, पण्डाल में पूजा के लिए आ जायें। उसमें से उठते ही इन चारों बुजुर्गों के अलावा न जाने कितने और बुजुर्ग मेरे साथ चल रहे हैं और मेरे पीछे थोड़ी ऊँचाई पर वह लोग बैठे हैं।

ॐ शान्ति का जाप शुरू हुआ, जिसमें बुजुर्गों की कृपाधार बराबर बनी रही। जब मैं बोल रहा था, तब यह लग रहा था कि परम पूज्य ताऊ जी महाराज साहब बोल रहे हैं और परम पूज्य बाबूजी महाराज साहब पण्डाल में घूम रहे हैं। शाम के वख्त भी पूजा में स्थिति अच्छी रही।

दिनांक 26.03.2016 को सुबह पूजा के वक्त पूरा पाण्डाल प्रकाश से भरा था, उस दिन भी बुजुर्गों की लाइन पीछे ऊँचाई पर बैठी दिखायी दी, मन में बड़ी खुशी थी और शान्ति थी, 2 बजे बगैर कुछ खाये पिये चलकर हम लोग साढे तीन बजे परम पूज्य अहमद अली साहब की समाधि पर पहुँच गये। मौलवी अहमद अली साहब की मजार पर बैठते ही

उनकी कृपाधार जारी हो गयी। मजार के अन्दर काफी भीड़ थी, ज्यादातर लोग बाहर ही बैठे थे। ज्यों ही मैने ''करूँ इल्तजा'' वाली प्रार्थना पढ़ी और जब वह समाप्त होने वाली थी, उसी समय ऐसा लगा कि कोई बुजुर्ग मुझसे कह रहे हैं कि यह दो लाइन भी पढ़ो। मैंने वह दो लाइन पढ़ दी।

रहमत पर तुम्हारे हमने इतने दिन गुजारे हैं।
एक बार तो कह दो, तुम हमारे हम तुम्हारे हैं।।

वहाँ पूजा में बहुत अच्छी तबियत लगी। उसके बाद करीब 5 बजे हम लोग परम पूज्य फजल अहमद साहब की समाधि पर पहुँचे। वहाँ शुरु–शुरू में बहुत तबियत भी लगी और प्रकाश का भी अनुभव हुआ।

परम पूज्य मौलवी फजल अहमद अली की मजार शरीफ पर बब्बू (जो कि मेरे बगल बैठे थे), अनमोल, अंकुर, अंकित के लिए दुआ की । वहाँ से साढ़े छः बजे आये तब मन बहुत शान्त था और पूजा में बहुत तबियत लगने लगी।

दिनांक 27.03.2016 को समापन के वक्त हमेशा की तरह हालत बहुत अच्छी रही, विशेषकर जब परम गुरू राम मिलावन हार और भण्डारे का विदाई गीत पढ़ा गया।

दिनांक 25.03.2016 के सुबह से लेकर 27.03.2016 की शाम तक मैंने केवल एक पाव दूध 25 को तथा 26 को एक ब्रेड पीस के अलावा कुछ भी ग्रहण नहीं किया परन्तु बिल्कुल भी कमजोरी नहीं थी और बहुत अच्छा रहा। दिनांक 30.03.2016 की सुबह से कमजोरी महसूस होने लगी है।

गाजियाबाद भंडारे का संक्षिप्त इतिहास

परमपूज्य बाबूजी महाराज (परमसंत डा. श्यामलाल सक्सेना) पूज्य लालाजी महाराज (परमसंत रामचन्द्र जी महाराज) के उम्र में सबसे छोटे शिष्य थे। व्यक्तित्व से गंभीर, दीन और दुनियां का अनोखा सामंजस्य बनाने वाले महापुरूष, जिनका जीवन केवल मानव कल्याण के लिये समर्पित था। उनके जिम्मे उनके सद्‌गुरूदेव ने परमार्थ की मशाल पकड़ाकर उन्हें भूले–भटकों को सच्ची राह पर लाने का काम सौंप दिया। उस काम को उन्होंने बड़ी श्रद्धा, लगन और परिश्रम से किया और अपने जीवन का महान लक्ष्य प्राप्तकर हजारों को परमार्थ की सच्ची राह पर लगाया, उनमें प्रभु–प्रेम की प्यास जगाकर अपने गुरूदेव के आदेश का पालन किया।

परमसंत लालाजी महाराज के विशाल के बाद परमपूज्य चच्चाजी महाराज, वक्त के बुर्जुग थे। सभी लोग उनसे जुड़ गये और सत्संग का काम होने लगा। परमपूज्य लालाजी साहब ने पूज्य बाबूजी महाराज को यह कहा था कि तुम डा. श्रीकृष्ण लाल के साथ रहना, क्योंकि उनकी पैदाइश महामाया के मुकाम से है और यह आवेश में आकर अनहोनी को होनी कर सकते हैं। उन महापुरूष की इच्छा ही रही होगी कि इन दोनों महान हस्तियों में बहुत प्रेम हो गया। ऐसा लगता था कि वे दो शरीर और एक जान हैं। उन दोनों में एक

अजीब रूहानी एकत्व हो गया। सत्संग का काम खूब अच्छा चल गया। वक्त के अन्तराल में कुछ इशारा बुर्जुगों तथा लालाजी महाराज की तरफ से ऐसा हुआ कि बनारस के ठाकुर शिवनरेश सिंह की दीक्षा के समय उनके ये कहने पर कि वह पूज्य ताऊजी की इज्जत तो बहुत करते हैं परन्तु प्रेम पूज्य बाबूजी से ही करते हैं।

पूज्य ताऊजी ने पूज्य बाबूजी से कहा '' श्यामलाल अब वक्त आ गया है कि तुम ही इनको दीक्षा दो''। वही इशारा गाजियाबाद सत्संग के निर्माण का भी था। धीरे–धीरे परमपूज्य लालाजी महाराज के इशारे पर, उन्हीं के आशीर्वाद और दुआ से सन् 1963 के जून के महीने में गाजियाबाद के इसी पावन घर 7,रामकृष्णा कालोनी में गाजियाबाद के पहले भंडारे का शुभारम्भ हुआ।

थोड़े से लोग थे, सच्चे और सीधे प्रेमी और उन सीधे–सादे मुट्ठी भर लोगों ने अपने गुरूदेव की शरण लेकर एक इन्कलाब पैदा कर दिया। सत्संग में लोगों की तादात दिन पर दिन बढ़ने लगी। परमपूज्य ताऊजी ने बहुत खुश होकर कहा था कि ''जो मेरे बाद करते, वो मेरी जिन्दगी में कर रहे हैं, इससे ज्यादा क्या खुशी की बात हो सकती है''। संतों की दृष्टि, उनके इशारे और उनके कार्य सब रहस्यमय होते हैं और साधारण व्यक्ति की समझ के बाहर।

सन् 1963 से आरम्भ हुआ भंडारा 1987 तक परमपूज्य

बाबूजी की पावन अध्यक्षता में अबाध गति से चलता गया। संख्या की दृष्टि से एक बड़ी संख्या हो गई और सन् 1987 में अपनी पारलौकिक यात्रा के पूर्व स्पष्ट रूप से उन्होंने हम दोनों भाइयों पूज्य सेठ भाई साहब (डा. आर. के. सक्सेना) तथा मुझ सेवक डा. वी. के. सक्सेना को अपना उत्तरदायित्व सौंपकर सत्संग की सुन्दरता बनाये रखने का आदेश देकर वे जीवन मुक्त हो गये।

वह पावन ज्योति परमधाम को सिधार गई। सन् 1981 में ही सब सेन्टर आदि के बारे में बताकर एक पावन घोषणा द्वारा सबको बता दिया कि ''फतेहगढ़ हमारी जड़ है, वहां जाना मुझसे वास्ता रखने वालों का धर्म है''। जहां तक मैं जानता हूं ऐसी विलक्षण घोषणा शायद किसी ने आज तक नहीं की है। यह गुरू प्रेम का जीता–जागता ज्वलंत उदाहरण है। मैं नतमस्तक हूं अपने परमपूज्य बाबूजी के चरणों में और दुआ करता हूं उस महान हस्ती से कि आखिरी सांस तक हमें ईमान और गुरूचरणों के प्रेम में सलामत रखे।

परमपूज्य बाबूजी के आदेश के फलःस्वरूप मैं अपनी सूझ–बूझ से इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूं कि परमपूज्य बाबूजी से वास्ता रखने वालों के लिये तीन भंडारे मुख्य है।

1. फतेहगढ़ भंडारा, 2. गाजियाबाद भंडारा, 3. लखनऊ भंडारा

फतेहगढ़ —परमपूज्य बाबूजी का गुरू—धाम है।

गाजियाबाद— परमपूज्य बाबूजी के स्वयं की कर्म—भूमि है, इसलिये ये हम सबके लिये पावन व आदरणीय स्थान है।

लखनऊ— यह स्थान 1962 में पूज्य ताऊजी महाराज द्वारा स्थापित किया गया सेन्टर है जिसको सन् 1981 में परमपूज्य बाबूजी ने 10—15 दिन के अपने लखनऊ प्रवास में स्थापित करके सुन्दर एवं सुदृढ़ बना दिया।

गाजियाबाद भंडारा

परमपूज्य बाबूजी महाराज के विसाल के बाद एक अजीब सन्नाटा सा हम दोनों भाइयों के मन में छा गया था। यद्यपि पूजा में हालतें काफी अच्छी थी, परन्तु उनका शारीरिक विछोह हावी हो–हो जा रहा था। ईश्वर की कृपा बरसी, मदद आयी और सब कुछ उनकी इच्छानुसार समय के प्रवाह से संभव हो गया।

गाजियाबाद भंडारा– सन् 1988, 1989 व 1990

इन भंडारों में गोकि परमपूज्य बाबूजी महाराज की दया थी, परन्तु उस प्रत्यक्ष कृपा का अवश्य कुछ अभाव था, जो पहले सहज ही सबको मिला करता था। इस कारण इन वर्षों में भंडारे में स्थूल तत्व हावी था, वह लताफत नहीं थी जो बाद के भंडारों में मौजूद रही।

गाजियाबाद भंडारा– सन् 1991 से 2001

इन वर्षों के भंडारों में दिन–ब–दिन लताफत और ईश्वर की कृपा के साथ–साथ विशेष रूपसे परमपूज्य लाला जी महाराज, परमपूज्य चाचाजी महाराज, परमपूज्य ताऊ जी महाराज तथा परमपूज्य बाबूजी महाराज की विशेष कृपा रही, जिसका अनुभव बहुत सारे सत्संगी भाई–बहनों ने किया।

भंडारे में बहुत लताफत आने लगी, विशेषकर 1994 के भंडारे में जो कि परमपूज्य ताऊजी महाराज की जन्म शताब्दी थी, उनका फैज आम था। पूरा पंडाल नूर से भरा था। यह सब उन बुजुर्गों की दया से ही था।

गाजियाबाद भण्डारा वर्ष 2002

वर्ष 2002 के भण्डारे में यद्यपि बुजुर्गों का फैज था परन्तु मेरा मन पूज्य सेठ भाई साहब के विछोह से रह–रह कर बहुत व्याकुल हो जा रहा था। कहीं ऐसा लग रहा था कि उनका न रहने का ख्याल मेरे व्यक्तित्व पर हावी होता जा रहा था। मैं अंतर में एक तरह से बहुत दुःखी था परन्तु पूज्य गुरुदेव एवं पूज्य बाबूजी महाराज की दया ने मुझपर रहम किया और संयत हो गया। गाजियाबाद में सब भाई परम पूज्य भाई साहब से ही अधिक सम्पर्क में थे और उन्हीं पर उनका प्रेम और श्रद्धा थी। यह भी कारण था कि उन लोगों के मन में उनका विछोह था। कुल मिलाकर एक अजीब सी स्थिति थी। जब सुबह के पूजा के लिए जा रहा था, मैं उदास था और उनका शारीरिक विछोह हावी था परन्तु बैठते ही ऐसा लगा कि वह मेरे बगल में बैठे हैं और मुझे आशीर्वाद दिया। मैं पूर्णरूप से अपने ध्यान में समा गया और वातावरण बदल गया। पूजा बहुत अच्छी रही।

मेरे बार–बार इशारा करने और मना करने पर भी

कुछ लोग नहीं माने और फोटो लगाने में कुछ ऐसी बेअदबी हो गयी (ईश्वर उन्हें माफ करे) जो बुजुर्गों से नहीं सही गयी और एक भयंकर तूफान आया जिसने सब तहस–नहस कर दिया। पूरा पाण्डाल गिर पड़ा, फट गया। दो चार मिनट तो कुछ समझ में नहीं आया। भाईयों ने बड़ी मेहनत करके सबको सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। उस समय नागर दूध डेरी वालों की मदद सराहना के योग्य रही। घर से सबके खाने का इन्तजाम किया गया। ईश्वर की एवं बुजुर्गों की दया और मदद आई, सुबह मौसम बहुत अच्छा हो गया। सुबह क्योंकि पाण्डाल फट गया था, ग्राउन्ड में ही पूजा हुई। वह दिन परम् पूज्य चच्चा जी महाराज का था, उनकी इतनी दया थी कि फैज की बारिश हो रही थी। आँखें खोलने की तबियत नहीं चाह रही थी और बहुत खुशी हुई जिसका जिक्र बहुत से भाईयों ने एक स्वर से किया है।

इस तूफान की यह विशेषता थी कि बुजुर्गों की ऐसी दया थी कि किसी का कुछ भी,रूमाल तक गायब नहीं हुआ और सब कुछ शान्त हो गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। भाई साहब का फोटो गिरा और कोई फोटो नहीं गिरा। यह देख मुझे बहुत दुःख था, किसी से बात करने की तबियत नहीं चाही और भण्डारा खत्म होते ही मैं सरहिन्द चला गया।

नोटः– इस तरह की घटना के होने की सम्भावना मुझे थी कि भण्डारा ठीक से बीत जाये, इसकी प्रार्थना भी कर रहा

था क्योंकि मैं स्वप्न में पूज्य ताऊ जी, पूज्य बाबूजी का भण्डारे का निमंत्रण फाड़–फाड़ कर फेंकना और पूज्य सेठ भाई साहब का कुछ लोगों को बुरी तरह डाटना देख चुका था। बहरहाल भण्डारे में फैज और दया रही परन्तु कुछ स्थूल तत्व अधिक अवश्य रहा।

गाजियाबाद भण्डारा वर्ष 2003, 2004 व 2005

गाजियाबाद भण्डारा परम सन्त परम पूज्य बाबूजी का भण्डारा है वहीं उसके नियंता एवं अधिष्ठाता हैं। उनकी ही दया, कृपा एवं आशीर्वाद के फलस्वरूप भण्डारे होते हैं। किसी एक इन्सान की औकात नहीं कि वह भण्डारा कर सके। यह उनकी ही कृपा से सम्भव एवं फलीभूत होते हैं। सभी वर्ष के भण्डारे अच्छे रहे। परमार्थ की दृष्टि से बहुत सफल परन्तु कहीं–कहीं मनभेद एवं स्थूल तत्व अवश्य रहा था। इन सब वर्षों में मुझे परम पूज्य बाबूजी की कही हुई बात जो उन्होंने हम दोनों भाईयों से कही थी, कि बब्बू और भैया का ध्यान रखना, यह इस रास्ते में अच्छे साबित होंगे, हावी होने लगी थी और परिवार की शान और एकता का भी ख्याल जब वहॉ जाता तो आ जाता। मैंने इन दोनों भाईयों के लिए प्रार्थना की और शुक्र है कि दुआ कबूल हुई। वो लोग तथा सभी भाई ठीक राह चल रहे हैं। परन्तु पूज्य भाई साहब ने मुझसे केवल अनमोल के लिए कहा था और किसी के लिए नहीं कहा। मैंने उनके कहने से अनमोल के लिए भी दुआ की और वह भी ईश्वर की दया से बुजुर्गों ने कबूल की है।

गाजियाबाद भण्डारा 2006, 2007 एवं 2008

गाजियाबाद के इन भण्डारों में ईश्वर की दया और इन चार बुजुर्गों की परम पूज्य लालाजी महाराज, परमपूज्य चच्चा जी महाराज, परमपूज्य ताऊ जी महाराज एवं परमपूज्य बाबूजी महाराज की बड़ी मेहरबानी और बड़ी दया एवं कृपाधार रही। लोगों को भी इसका एहसास होने लगा और सब सामान्य सा हो गया। परम पूज्य सेठ भाई साहब की मेरे ऊपर बड़ी मेहरबानी रही, उनका मेरे साथ रहना ही मेरे लिए एक बहुत बड़ा बल हो जाता है। इन दिनों में मैने सत्संग की सुविधा के लिए कई नये सेन्टर बनाये और लोगों के जिम्मे काम दिया। परम पूज्य भाई साहब से वास्ता रखने वाले कई भाइयों एवं बच्चों को दीक्षा भी दी और उनके लिए दुआ भी की और करता रहूँगा। यह सेन्टर आदि का काम परमार्थ नहीं है परन्तु परमार्थ के लिए उपयोगी एवं वातावरण बनाता है। इन भण्डारों में स्थूल तत्व नहीं के बराबर था, सूक्ष्म और लताफत रही।

गाजियाबाद भण्डारा वर्ष 2009, 2010, 2011

वर्ष 2009 से गाजियाबाद भण्डारे में सिलसिले के बुजुर्गों की महान दया का अनुभव किया। अभी तक केवल चार बुजुर्गों और पूज्य भाई साहब की कृपा का एहसास होता था परन्तु इन भण्डारों में बहुत से बुजुर्गों को लाइन से अपने पीछे बैठे देखा और बहुत खुश देखा। सारा पाण्डाल प्रकाश

से भर गया और सबको उस प्रकाश ने सराबोर कर दिया हो ऐसा देखा। भण्डारा कबूल रहा और बड़ी खुशी का वायस रहा। सब इनायत उनकी ही है जिनका यह भण्डारा है। सब खुशगवार रहा। यद्यपि कभी–कभी जिस्म टूटा सा एहसास हुआ परन्तु दूसरे ही क्षण ऐसी ताकत मालूम होती थी जिसका बयान नहीं कर सकता। सब भण्डारों में उन बुजुर्गों की दया रही।

गाजियाबाद स्वर्ण जयन्ती भण्डारा 2012

(21 से 24 अक्तूबर)

21 तारीख प0 पू0 ताऊजी महाराज साहब का दिन था, उस दिन उनकी बहुत रहमत थी। परन्तु अन्य वर्षो से कम थी, जिसका कारण मैं न ढूंढ पाया परन्तु बहुत दुख था।

22 तारीख जो कि प0 पू0 चच्चाजी महाराज का दिन था। वह दिन सबसे अच्छा भण्डारे का दिन था। मेरे पीछे लाइन से संतो की Presence थी। जिसमें पू0 राम कृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द जी, पू0 लालाजी महाराज, पू0 चच्चाजी महाराज, गुरूनानक देव जी, कबीर साहब, गांधी जी और कई जिन्हें मैं नहीं पहचान पाया। बहुत सुंदर वातावरण था। इसकी पुष्टि बहुत से लोगों ने मुझसे की।

23–24 इन दोनों दिनों में प0 पू0 लालाजी महाराज एवं पू0 बाबूजी महाराज की बड़ी दया, फैज एवं प्रकाश हर वक्त बना रहा। दोनों दिन पू0 भाई साहब की भी मौजूदगी रही।

बाहर से आने वालों में से आदरणीय तोहा साहब,

आदरणीय चन्दा बाबू पुत्र पू0 पोस्टमास्टर साहब, श्री श्याम बिहारी जी के छोटे पुत्र, गोपाल जी बक्सर एवं मथुरा के काफी सतसंगी आए थे।

51वॉ गाजियाबाद भण्डारा 2013 (10 से 13 अक्तूबर)

10 अक्टूबर शाम के वक्त ऐसा अनुभव हुआ कि तमाम हाल खाली है। मैं हूॅ और सामने नन्हू बैठै हैं। मेरी सब तवज्जोह उन्ही की तरफ थी। 11 अक्टूबर को बुजुर्गो की सबसे ज्यादा दया थी। मेरे पीछे बुजुर्गो की लाइन बैठी हुई थी। जिनमें से कुछ को मैं पहचानता भी नहीं हूॅ। बुजुर्गो का फैज बरस रहा था। 12–13 अक्टूबर को भी बुजुर्गो का वही़ फैज जारी रहा। सबसे अच्छी बात यह रही कि लोगों ने दुनिया की बातें दौराने भण्डारे बहुत कम की या ना के बराबर की। सब फोटो हटा दिये गये थे।

52वाँ गाजियाबाद भण्डारा– 2014

(30 सितम्बर, 1, 2 व 3 अक्टूबर)

30 सितम्बर, 2014ः– दिन मंगलवार, आज भण्डारे का पहला दिन था। आज का दिन हम लोग अपने सिलसिले के सभी बुजुर्गों और विशेषकर परम पूज्य ताऊ जी महाराज साहब के लिए मनाते हैं। ध्यान का विराट रूप जो कि जिधर मैं बैठा था, वहाँ पूरी दीवाल के बराबर और उससे बहुत जबरदस्त प्रकाश पूरे हाल और समाधि की तरफ पूरी बाउन्ड्री हाल तक फैल गया जो सभी लोगों को, जो वहाँ मौजूद थे, सब पर छा गया और सब उसमें गोते खाने लगे। जब तक पूजा चलती

रही, तब तक बराबर यही हालत रही। उस प्रकाश का हाल के बाहर न दाहिनी तरफ कुछ असर था, न बाईं तरफ। यह हालत बराबर प्रसाद तक रही। आँख खोलने की तबियत नहीं हो रही थी, परन्तु देर होने के कारण पूजा समाप्त करनी पड़ी। गो कि मन उठने को नहीं कर रहा था। मुझमें स्वयं इतनी शक्ति लगने लगी कि थकावट का नामो निशान नहीं था। इसीलिए पूजा के बाद भी फिर पॉच बजे सायं पूजा में बैठ गया और सबको 6 बजे तक उनकी दिक्कत को पूछता रहा और फिर साढ़े छः बजे से पूजा शुरू कर दिया। मन बहुत प्रसन्न था, कोई थकावट नहीं थी। रात को अनमोल के साथ देहली चला गया।

दिनांक 01.10.2014

आज का दिन परम् पूज्य चाचा जी महाराज का था। सुबह से ही उनकी दया सबपर दिखाई पड़ रही थी। सुबह में पूजा के समय बीच –बीच में ऐसा मालूम होता था कि पूज्य चाचा जी महाराज की समाधि के भीतर का हिस्सा जहाँ मैं बैठा था, उसके सामने आ जाती थी, जिधर में बैठा था, उधर एक तरफ पूज्य बाबूजी महाराज साहब बराबर मौजूद थे। मेरे दूसरी तरफ मेरे छोटे पुत्र अनमोल बैठे थे। समाधि (परमपूज्य बाबूजी की) के पीछे 15–20लोग थे पर कौन थे, याद नहीं। समाधि तथा पूरे हाल में सफेद रंग का प्रकाश ही प्रकाश था। शाम को भी बहुत अच्छी हालत रही। थकावट बिल्कुल नहीं

थी। रात को अनमोल के साथ दिल्ली चला गया। मैंने अपने पुत्र अनमोल से उस दिन की पूजा के बारे में पूछा, उन्होंने भी इस बात की हूबहू तस्दीक की। मुझे खुशी हुई।

दिनांक 02.10.2014

परम् पूज्य लालाजी महाराज का दिन था, उस दिन सुबह से रात तक एक ऐसे जज्ब की हालत रही जिसका बयान करना मुश्किल है। इसका जिक्र बहुत लोगों ने किया। परम् पूज्य ताऊ जी साहब एवं परमपूज्य लालाजी महाराज एवं परमपूज्य बाबूजी महाराज की पूरे समय बहुत Presence रही। मन बहुत खुश था, उस रोज रात को गाजियाबाद ही रुका था।

दिनांक 03.10.2014

आज का दिन परम् पूज्य बाबूजी का दिन था। सुबह की पूजा में सभी बुजुर्गो की बहुत दया रही, विशेषकर परमपूज्य बाबूजी की। ॐ शान्ति का जाप बहुत अच्छा रहा। इसके बाद क्योंकि लोग जाने की तैयारी कर रहे थे, इसलिए पूजा खत्म करनी पड़ी। मेरे लिए गाजियाबाद का 2014 का यह सबसे अच्छा भण्डारा था। रात को देहली चला गया।

2011 के फतेहगढ़ के भण्डारे से बराबर अपने पीछे बुजुर्गों की एक लाइन बैठे देखता हूँ और उनके फैज का भी असर महसूस करता हूँ।

2013 का फतेहगढ़ का भण्डारा बहुत अच्छा रहा।

बुजुर्गों का इतना जबरदस्त फैज था और एक अजब खुशबू थी, जो बयान नहीं की जा सकती है। मन में मैं कह रहा हूँ कि 128 बुजुर्ग थे तो कोई बुजुर्ग कह रहे हैं कि हम लोग 138 लोग हैं। जो उस रोज का फैज था वही दिनांक 02.10.2014 में गाजियाबाद भण्डारे में पूज्य लालाजी महाराज वाले दिन रहा। दिनांक 04.10.2014 को देहली में शनिवार था, अनमोल के घर पूजा थी, जिसमें 15–16 लोग थे। पूजा बहुत अच्छी रही, बुजुर्गों की बड़ी दया थी। वही पूजा की हालत अभी तक(19.10.2014) बनी हुई है।

53वाँ गाजियाबाद भण्डारा 2015

(19 से 22 अक्तूबर)

भण्डारे के चारों दिन बड़ी लताफत और अच्छी हालत रही परन्तु विशेषकर 19 तारीख को परम् पूज्य ताऊ जी महाराज एवं 22 अक्टूबर को परम पूज्य बाबूजी के दिन बहुत अच्छी हालत रही। हर रोज विशेषकर सुबह के समय ऐसा लगता था कि हर तरफ प्रकाश ही प्रकाश है।

गाजियाबाद स्वर्ण-जयंती भण्डारे के शुभ अवसर पर संतमत-शिक्षा का निचोड़

(दिनांक 21,**से** 24 **अक्टूबर**, 2012)

सन्तमत के अधिष्ठाता परम् पूज्य हमारे लालाजी महाराज ने बहुत से उसूल किताबों में दर्ज किए हैं और बहुत से अपने प्रेमियों को एकांत में जबानी बतलाए हैं। हमारे यहाँ यह तरीका है कि हम किसी भी तरीके की बुराई नहीं करते, सबको ठीक मानते हैं लेकिन जो तरीका हमारे बुजुर्गों ने चलाया, वह निराला और सबसे आसान है। इसमें अपने मन से तरमीम या तब्दीली करने का हरेक को अधिकार नहीं है। बीच–बीच में सन्त आते हैं जो मुजद्दिद कहलाते हैं और जो वक्त और जमाने व जीवों की हालत के अनुसार तब्दीली कर सकते हैं क्योंकि वे ज्यादा शक्ति लेकर आते हैं। बाकी सब तालीम दे सकते हैं और सिलसिला कायम रखते हैं लेकिन कोई तब्दीली नहीं कर सकते। ऐसे सन्त (मुजद्दिदी) 1100 या 1200 साल बाद आते हैं।

ऐसे गुरुमुख शिष्य को जो पूर्ण रूप से अपने गुरु के हुक्म की तामील करे, उसे इजाजत तालीम (शिक्षा देने की अनुमति) दे सकते हैं।

हर एक समाज में चाहे वह दुनिया का काम कर रहा हो या दीन का, कुछ नियम होते हैं, जिनपर अमल करने की (चलने की) लोगों को नसीहत की जाती है। परम पूज्य

लालाजी महाराज साहब के भी दुनियावी जिंदगी बसर करने और अभ्यास वगैरह के मुताल्लिक कुछ नियम थे। उन्होंने उन उसूलों को अपने ऊपर पूरी तरह निभाया। उनमें से कुछ यह हैं जो मेरे परम् पूज्य गुरुदेव डा0 श्री कृष्ण लाल भटनागर जी ने तथा मेरे परम् पूज्य बाबूजी महाराज डा0 श्याम लाल सक्सेना ने मुझे बताया वह आप सबको बताकर उनके प्रेम की हरारत तथा मुख्य शिक्षा को आप सब तक पहुँचाने का प्रयास कर रहा हूँ:–

(1) हर एक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि जब तक जीवित रहे और हाथ–पाँव सही रहें तो अन्त तक अपनी रोजी आप कमावे। अगर वह बूढ़ा है, कोई भारी भरकम काम करने के योग्य नहीं है तो हल्का सा काम घर का ही कर ले। जो कमावे वह हक हलाल का हो। बच्चों को पढ़ाने या घर की देखभाल का काम ले ले। कहने का मतलब ये है कि हर आदमी काम करे, हराम की न खाए और खाली न बैठे।

(2) सेवा करो, कराओ मत। जो काम खुद न हो सकता हो, नौकरों या छोटे भाइयों से ले लो, लेकिन जो काम तुम कर सकते हो वह दूसरों पर मत छोड़ो, जब तक कोई खास मजबूरी न हो।

(3) अगर चाहते हो कि दुनियाँ में खुश रहो तो अपनी इच्छाओं को कम करो। अगर एक या दो जूते हों तो तीसरा मत खरीदों। बहुत सा सामान मत भरो। अपनी आमदनी का कुछ न कुछ हिस्सा खैरात (दान) करो। उसमें पहला फर्ज यह है कि अपने जरूरतमंद सम्बन्धियों को दो।

(4) जब तक कोई तुमसे पूछे नहीं, बगैर माँगे नसीहत मत दो।

(5) बड़ों की इज्जत और छोटों से प्रेम करो। औरों के बच्चों को अपनी ही औलाद की तरह प्रेम और व्यवहार करो।

(6) अगर अपना कोई रिश्तेदार गलत रास्ते पर जा रहा हो तो उसे समझा–बुझाकर राह–रास्त पर लाने की कोशिश करो, वरना उससे सम्बन्ध तोड़ दो।

(7) विधवाओं की मदद करो और अगर उनकी रजामंदी हो तो उनके विवाह कराओ।

(8) सबसे बराबरी का बर्ताव करो। लेकिन दफ्तर का बर्ताव वहाँ के कायदों के मुताबिक होना चाहिए। घर में सबसे एक सा बर्ताव होना चाहिए।

(9) जो लोग पदाधिकारी (ओहदेदार) हैं, उनकी इज्जत करो क्योंकि ईश्वर ने उन्हें इस योग्य बनाया है कि वह बड़े ओहदे पर हैं। हमारा भी फर्ज है कि जिसे

परमात्मा ने बड़ाई दी, उसकी इज्जत करें।

(10) जुआ मत खेलो।

(11) औरतों और बच्चों की सोहबत से जहाँ तक हो, परहेज करो।

(12) खाली वक्त न बैठो। कुछ न कुछ करते रहो। एकांत सेवन ज्यादा करो और बराबर अपने अभ्यास में व्यस्त रहने की कोशिश करो।

(13) जो कपड़ा पहनो, वह साफ और मजबूत हो मगर कीमती न हो। परम पूज्य लालाजी महाराज रेशमी कपड़ा पहनना पसन्द नहीं करते थे।

(14) जेवर गहने औरतें कम से कम पहनें, मर्द सिर्फ एक अँगूठी पहन सकते हैं।

(15) जो आदतें नुकसान देने वाली हैं, (जैसे पेट के दर्द में तम्बाकू पीना,) उसके अलावा शौक के लिए कोई आदत नहीं डालनी चाहिए।

(16) खाने पीने में जो चीजें छोड़ने लायक हैं (जैसे प्याज आदि) उन्हें छोड़ देना चाहिए और अगर वे नहीं छूटती हैं तो ज्यादा तवज्जह मत करो। गोश्त वगैरह खाने की सख्त मनाही है।

(17) अगर स्त्री मर गयी हो और नफ्स (इन्द्रिय भोग) पर काबू न हो तो चाहे बूढ़ा ही क्यों न हो, फिर से शादी कर लेनी चाहिए।

(18) परम पूज्य लालाजी महाराज सत्संगियों के साथ ही जमीन पर सोया करते थे। अगर चारपाई पर सोना होता था तो अलहदा हो जाते थे। बहर हाल तहजीब का बड़ा ख्याल रखते थे।

(19) परमपूज्य लालाजी महाराज खाना सबके साथ खाते थे जैसा सब खाते थे वैसा ही खुद भी खाते थे। अकेले में तथा औरों से अच्छा खाना नहीं खाते थे।

(20) रात को 10 बजे के बाद आराम फरमाते थे और 5 बजे सबेरे तक बिस्तर छोड़ देते थे। पान कभी–कभी खाते थे। गोश्त कभी नहीं खाते थे। कबीर पंथी, नानक पंथी, राधा स्वामी मत और बुद्ध भगवान का मत इन सबसे आपके यहाँ इजाजत है। इन सिलसिले के महापुरुषों से हमें फायदा पहुँचा है और हमारे बुजुर्गों ने उनके अनुयाइयों को फायदा पहुँचाया है। इन सिलसिलों के बुजुर्गों की अपने ही बुजुर्गों की तरह इज्जत करते थे। हर समय बुजुर्गों से मदद माँगते थे। अपने जिस्मानी माँ बाप का दुआ के जरिए रोज श्राद्ध करते थे।

लखनऊ सत्संग तथा भण्डारा

ईश्वर की जब दया होती है, तभी कोई शुभकर्म इस पृथ्वी पर घटित होता है। वह स्थान, वह व्यक्ति, वह लोग सब बधाई के पात्र होते हैं, जिन पर उस परम्पिता के स्नेहिल आशीर्वाद की किरण पड़ती है। लखनऊ सत्संग की भी ऐसी ही कथा है। सन् 1962 में स्व0 श्री डी0एन0 श्रीवास्तव जी एफ–1/बी, रीवर बैंक कालोनी में ट्रान्सफर होकर आये। वह और उनकी पत्नी दोनों ही लोग सिकन्द्राबाद के परम्संत डा0 श्रीकृष्ण लाल भटनागर से दीक्षित थे। उन परम् संत की आपकी पत्नी पर बहुत कृपा एवं आशीर्वाद था और वह भी पूर्ण समर्पण की स्थिति में थी। उस समय उन महान संत से सम्बन्ध रखने वाले 4 या 5 परिवार यहाँ लखनऊ में थे। आपने दया करके 1962 में इनके यहाँ रीवर बैंक कालोनी में साप्ताहिक सत्संग की नींव डाली। इस पर एक सत्संगी भाई ने उनसे कहा कि हम लोग जाते हैं श्रीवास्तव साहब कभी दौरे पर रहते हैं, कभी–कभी दोनों लोग नहीं रहते हैं। आपने जज्ब की हालत में कहा ''अगर वहाँ ताला भी बन्द है तो उनके लान में बैठ जाइयेगा, तब भी आपको वैसा ही फायदा होगा। आप अभी की सोच रहे हैं, मैं आगे की देख रहा हूँ। इस प्रकार 1963 से 1977 तक सत्संग अबाधगति से चलता रहा और 1963 से 1969 तक वहाँ आपका खूब आना जाना

रहा। श्रीवास्तव साहब (जो मेरे श्वसुर थे) की पत्नी को 1977 में कैंसर रोग हो गया। उनके दोनों लड़के बाहर थे, इसलिए तय पाया गया कि मैं (डा0 वी0के0 सक्सेना) अपना ट्रान्सफर करवा के लखनऊ आ जाऊँ, क्योंकि मैं डाक्टर हूँ तो उनकी देखभाल में सहुलियत होगी और ईश्वर की दया से मेरा ट्रान्सफर यहाँ हो गया। मैं यहीं रिवरबैंक कालोनी में रहने लगा क्योंकि उस समय शर्मा बहन भी और मेरी सास दोनों मरीजों की देखभाल एक जगह रहकर अच्छी तरह हो जायेगी। मेरे आने पर उसी दौरान पूज्य सरदार जी भाई साहब के पैर में फ्रेक्चर हो गया और वह भी उस दौरान 10 दिन तक यहीं रीवर बैंक कालोनी में रहे।

उसी समय परम पूज्य बाबूजी का भी पटना से लौटकर 3–4 दिन का रुकना हुआ। मेरे आने के बाद यहाँ सत्संग रविवार की सुबह (जो पहले भी होता था) उसके अतिरिक्त नित्य शाम को भी सत्संग होने लगा। 1978 में दोनों महिलाओं ने शरीर त्याग दिया, ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे। उस दौरान सत्संग में तेजी आने लगी थी वह और तेज हो गया, लोग जुड़ने लगे। शुक्ला जी)अमीनाबाद वाले) के पिता श्री रामेश्वर प्रसाद शुक्ला तथा पूज्य हरबंशलाल त्रिपाठी जी के बहुत से प्रेमीजन शाम के सत्संग में आने लगे थे।

सन 1981 में परम् पूज्य बाबूजी महाराज ने मुझ पर

विशेष कृपा की और इसी लखनऊ रीवर बैंक कालोनी में 15 दिन का प्रोग्राम रहा। जगह–जगह से प्रेमीलोग उमड़ पड़े। पटना, समस्तीपुर, गोरखपुर, बनारस, गाजियाबाद और उस समय उन्होंने तार देकर पूज्य सेठ भाई साहब को भी बुलवाया। प्रेमियों की भीड़ लग गई। सुबह शाम कुछ पता नहीं लग रहा था, लगता था जैसे समय थम सा गया हो। लखनऊ सत्संग को सुदृढ़ बनाने के लिए ही उन महान सन्त ने यहाँ 15 दिन कयाम किया। मैं उनके इस उपकार का वर्णन करने में असमर्थ हूँ। उस दौरान बहुत से नये लोग भी जुड़ गये और समय बहुत सन्दर बीता।

इसके बाद मैं अस्पताल में सुपरिटेन्डेन्ट बलरामपुर हो गया और कैम्पस में रहने आ गया, कारण अब वहाँ मेरी कोई जरूरत भी नहीं थी और उनके लड़के अजय कुमार भी ट्रान्सफर होकर आ गये थे। बलरामपुर अस्पताल में आ जाने से सत्संग अब यहीं होने लगा और रीवरबैंक कालोनी में रिक्तता आ गयी। 1983 के बाद वहाँ वैक्यूम सा हो गया और सत्संग लखनऊ अस्पताल के कैम्पस में ही होने लगा। सन् 1986 में परम् पूज्य बाबूजी महाराज बी–1/26 सेक्टर–के, अलीगंज में मेरे मकान के गृहप्रवेश में अपनी गहन बीमारी में भी आये और इस घर को पवित्रता की संज्ञा दे गये। 1992 में रिटायरमेंट के बाद पूजा और सत्संग खूब जोर शोर से होने लगा। यह सेन्टर बुजुर्गों के आशीर्वाद से फलने–फूलने

लगा। वर्ष 1992 से इसी मकान बी–1/26 में परम् पूज्य बाबूजी महाराज के जन्मदिन का भण्डारा होने लगा। बनारस, गोरखपुर आदि जगहों से लोग आते थे और घर की छत पर पंडाल लगाकर भण्डारा किया जाने लगा। दया, कृपा और फैज की बरकत रहती थी। इसके बाद वर्ष 2001 के जन्म शताब्दी भण्डारे (जो कि परम पूज्य बाबूजी महाराज के जन्म शताब्दी का था) ने इसमें चार चाँद लगा दिए। उसका बहुत वर्णन यहाँ नहीं कर रहा हूँ, पर इतना अवश्य कहना चाहता हूँ कि यह भण्डारा स्वर्णिम भण्डारा था। जन समूह उमड़ा हुआ था। परम् पूज्य लालाजी महाराज एवं परमपूज्य चच्चा जी महाराज के सभी वंशज तथा सभी प्रेमी जैसे नसीराबाद, बहराइच, फर्रूखाबाद एवं भोपाल, दिल्ली ने शिरकत की। फैज की वर्षा हो रही थी, हर एक व्यक्ति सराबोर था और एक अजीब बरकत और खुशी का मंजर था। लगता था कि आदमी ही आदमी हैं और जिस समय पूज्य सेठ भाई साहब ने पूज्य बाबूजी के चित्र का तथा परमपूज्य लाला जी महाराज की प्रतिमा का अनावरण किया, लोग रो पड़े। उन महान सन्त की याद में कई प्रेमियों की चीख निकल गयी। आँख में आँसू थे। दिल उनकी याद में व्यथित हो उठा। परमात्मा का फैज था। सड़क पर जाते हुए लोग रुक जा रहे थे। एक विलक्षण भण्डारा था। सन् 2003 में देवस्थली आश्रम का वरदान देकर पूज्य गुरुदेव एवं पूज्य बाबूजी महाराज ने मुझे तथा प्रेमीजनों

को कृतार्थ किया और स्वप्न में आदेश दिया कि हम सब यही साथ–साथ रहें। उनके आज्ञानुसार परम् पूज्य ताऊ जी परम पूज्य बाबूजी महाराज मेरे प्रिय बड़े भाई पूज्य सेठ भाई साहब की स्मृति स्थल का निर्माण किया गया और उनके अवशेषों को रखकर उन्हें जागृत अवस्था में लाया गया। उसी जगह मैंने अपने लिए भी स्थान का निर्माण कर लिया क्योंकि मेरे गुरुदेव ने यह महामंत्र दिया था ''बेटे जो कुछ भी करना है, खुद अपनी जिंदगी में कर लो, इसके लिए अपनी औलाद पर भी भरोसा मत करो।'' इस प्रकार स्वप्न की पुष्टि भी हुई। कालान्तर में बहुत से प्रेमी भाइयों ने लखनऊ में ही घर बना लिए जिससे सत्संग में और सुदृढ़ता आई।

अब देवस्थली में साप्ताहिक पूजा के अतिरिक्त प्रतिवर्ष एक दिवसीय एवं चार दिवसीय भण्डारा होता है।

लखनऊ में कई प्रेमी भाईयों के स्थायी निवास होने ये यह भी प्रक्रिया की गयी कि हर शनिवार को विभिन्न भाईयों के यहाँ पूजा रखी जाये। इसका ध्येय यही था कि सब भाइयों के परिवार भी जुड़ जायें और ऐसा ही क्रम बन गया, यह प्रभु की और बुजुर्गों की दया है।

यहाँ के स्थानों में मेरे अपने घर के सत्संग के अतिरिक्त सत्संग सबसे पहले श्री के0के0 शुक्ला के यहाँ अमीनाबाद में महीने में एक दिन सत्संग का आरम्भ किया गया, उनके पिताजी श्री रामेश्वर प्रसाद शुक्ला एवं वह स्वयं

बहुत संस्कारी थे और वहाँ सत्संग होता रहा। कुछ समय बाद घर के लोग इधर उधर हो गये और दुःख है कि उनके बाद वह सिलसिला टूट गया।

समय के अनुसार यहाँ के सत्संग स्थान

दिन	स्थान
प्रथम शनिवार वर्ष 2002 से प्रारम्भ	डा0 एस. एन. राय 7, डालीबाग, लखनऊ
द्वितीय शनिवार वर्ष 2003 से प्रारम्भ	श्री जे. पी. बाजपेयी 5/536 विकासनगर, लखनऊ
तृतीय शनिवार वर्ष 2004 से प्रारम्भ	श्री त्रिभुवन सिंह 5/536 विकासनगर, लखनऊ
माह का अन्तिम शनिवार वर्ष 1998 से प्रारम्भ	श्री के. डी. श्रीवास्तव, सी 7, सेक्टर एच अलीगंज, लखनऊ
5 शनिवार वाले माह में चतुर्थ शनिवार वर्ष 2013 से प्रारम्भ	श्री ईश्वर चन्द्र जी 535 यूनिटी सिटी कुर्सी रोड़, लखनऊ

अवकाश के दिनों में वर्ष में 6 बार—श्री राम मिलन यादव
1322/4 सेक्टर 16 इन्दिरानगर लखनऊ

प्रत्येक जन्माष्टमी को– श्री लालजी वमा,17 रविन्द्र गार्डन अलीगंज, लखनऊ
प्रत्येक मंगलवार को– श्री अनिल शुक्ला, गीतापुरी, गोमती नगर, लखनऊ
प्रत्येक माह की 11 तारीख को – श्री अजय कुमार जी, एफ1/बी रीवर बैंक कालोनी, लखनऊ
प्रत्येक माह की 3 तारीख को – श्री अनिल श्रीवास्तव, ऐशबाग इटकी मोहल्ला, लखनऊ

इसके अतिरिक्त हर बृहस्पतिवार को बी–1/26 सेक्टर–के, अलीगंज, लखनऊ। यह लखनऊ भण्डारा एवं सत्संग का छोटा परिचय मैंने यहाँ दिया है। संक्षेप में यहाँ का सत्संग वर्ष 1962 में परम् पूज्य ताऊ जी द्वारा स्थापित किया गया और इसकी पूर्णता परम् पूज्य बाबूजी द्वारा अपने प्रवास वर्ष 1981 में जो 15 दिनों का था, में कर दिया। मेरे न चाहते हुए भी मुझे मजबूर कर दिया कि मैं लखनऊ में सेटल रहूँ, जिससे पूरब के लोगों को आसानी होगी। सन्त त्रिकालदर्शी होते हैं, हमारी समझ वर्तमान देख पाती हैं और उन्हें भविष्य दिखाई पड़ता है।

वर्ष 2002–03 में भी भण्डारा उमराव सिंह धर्मशाला में ही हुआ था और बहुत अच्छा रहा। यद्यपि पूज्य सेठ भाई साहब की अनुपस्थिति का एहसास बराबर बना रहा।

वर्ष 2003–04 – यह भण्डारा देवस्थली का पहला भण्डारा था। गहन बीमारी के बावजूद भी पूज्या भाभी जी

(पत्नी परमपूज्य सेठ भाई साहब) कृपा करके यहाँ आईं और आश्रम को देखकर बहुत खुश हुईं और मुझे आशीर्वाद दिया। मैं बहुत आभारी हूँ उनका। इस भण्डारे में सभी लोग आये थे। भण्डारा बहुत अच्छा रहा था।

2005 से 2015 लखनऊ भण्डारा

बुजुर्गों के आशीर्वाद से यह परम् पूज्य बाबूजी के जन्मदिन का पावन भण्डारा तथा सभी भण्डारे देवस्थली आश्रम में ही बड़ी बरकत से सम्पन्न हो रहे हैं। सभी भाई बहनों में उत्साह रहता है और सब लोग इतनी ठंड में बिना कोई परवाह किए, इतनी दूर–दूर से आते हैं। ईश्वर उन सब लोगों को अपना सच्चा प्रेम दे। यह भण्डारा सतत् चलता रहे– चलता रहे, यही कामना है, यही प्रार्थना है, यही विनती है एवं यही आरजू है।

यहाँ आश्रम में परम् पूज्य लालाजी महाराज के जन्मदिवस बसंत पंचमी के अवसर पर, परम् पूज्य चच्चा जी महाराज के जन्म दिन पर, परम पूज्य ताऊ जी महाराज के जन्मदिन 15 अक्टूबर एवं निर्वाण दिवस 18 मई, को भण्डारा होता है।

परम् पूज्य बाबूजी महाराज के जन्मदिन एवं निर्वाण दिवस का भण्डारा चार दिन का प्रतिवर्ष उत्साह से मनाया जाता है। एक दिवस का गुरुपूर्णिमा के अवसर पर भण्डारा मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त इन चारों बुजुर्ग परमपूज्य

लालाजी महराज, परमपूज्य चच्चा जी महराज, परमपूज्य ताऊ जी महाराज एवं परमपूज्य बाबूजी महाराज के याद में उनकी पुण्यतिथियों पर भी सत्संग होता हैं। परमपूज्य ब्रजमोहन लालजी तथा परमपूज्य सेठ भाई साहब की पुण्य तिथि पर ॐ शान्ति का जाप होता है।

वर्ष 2015 में ऐसा ख्याल हुआ कि इसके अतिरिक्त हर सत्संगी भाई के यहाँ वर्ष में एक दिन सत्संग किया जाये जिससे सबके परिवार में और घनिष्ठता आये। ईश्वर की दया से सबने इस विचार को सहर्ष स्वीकार भी किया और स्वागत भी किया। इस दिशा में प्रथम सत्संग जानकीपुरम् में श्री अजय एवं शशि त्रिपाठी के यहाँ से आरम्भ हुआ। बुजुर्गों की बड़ी दया थी और अब इस दिशा में सत्संग अग्रसर हो गया है। सत्संग अमरता की कुन्जी है, वह एक श्रोत है। एक सतत् बहने वाला झरना है, जहाँ जब आओगे, जो आयेगा, शान्ति और कृपाधार की अनुभूति से अभिभूत होकर कृतार्थ हो जायेगा।

मेरा ईश्वर से अपने संतमत के अधिष्ठाता परम् पूज्य लालाजी महाराज से, परमदानी परम पूज्य परम् संत चच्चा जी महाराज, अपने परमदानी सद्गुरूदेव पूज्य ताऊ जी महाराज से एवं परम संत पूज्य बाबूजी महाराज जो परम् दयालु एवं राह प्रशस्त करने वाले पिता एवं सिलसिले के सभी बुजुर्गों से हृदय से प्रार्थना करता हूँ कि इस सत्संग पर अपनी कृपाधार सदा बनायें रखें और यह अमर गंगा सदा

बहती रहे। कालान्तर में सब प्रेमियों की प्यास बुझती रहे और वह परमार्थ पथ पर चलते रहें। मैं रहूँ या न रहूँ, इस क्षणभंगुर शरीर का क्या भरोसा, परन्तु भरोसा है उन महान हस्तियों का जो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से हमारी हिफाजत करेंगे। यह हो सकता है कि जिन हाथों में सत्संग के नेतृत्व की मशाल भविष्य में हो, वह मजबूत न हो परन्तु जिन शक्तियों ने अपना इशारा देकर मुझे यह दिशा दी है, उनको ही साक्षी मानकर उनसे ही इसकी हर तरह से हिफाजत की विनती करता हूँ। मैं तो एक अदना सा दास हूँ। विनती अर्जी लगा लगाकर अपना दायित्व पूरा कर दिया है। अब सब भार आपके हाथों में है, दुआ है कि उस झिलमिल झिलमिल करते चिराग को सतत् प्रकाश से प्रकाशवान रखें। सभी भाई, सभी बच्चें आपकी दया कृपा एवं फैज से कभी वंचित न हों।

दुआ है कि –

या इलाही ता अबद कायम रहे यह सिलसिला।

सन् 2001 परमपूज्य बाबूजी महाराज का जन्मशती भंडारा, लखनऊ

यह परमपूज्य बाबूजी महाराज साहब का जन्म शताब्दी का भंडारा अपने आप में एक ऐतिहासिक भंडारा रहा। उस भंडारे में परमपूज्य लालाजी एवं परमपूज्य चच्चाजी महाराज के परिवारजन के अतिरिक्त सभी बुजुर्ग जैसे बहराइच के नईमुल्लाह साहब, बुलहसन साहब, मुरादुल्लाह साहब से वास्ता रखने वाले लोग, परमपूज्य ताऊजी महाराज के लोग, परमपूज्य डा. चतुर्भुज सहाय जी के लोग बहुत भारी संख्या में आये। लगता था कि विशाल जनसमूह उमड़ आया है और सब बुजुर्गों के फैज से सराबोर थे।

यह भंडारा लखनऊ के डालीगंज स्थित उमरावसिंह धर्मशाला में आयोजित किया गया था।

इस भंडारे के बाद के भंडारों में बहुत लताफत, बहुत फैज और बहुत कृपाधार बरसने लगी। इस भंडारे के बाद जब गुरू पूर्णिमा का भण्डारा आया तो उसमें सत्संगी भाइयों की हालत बहुत ही अच्छी थी। एक अजीब सा नशा सब पर छाया था।

यद्यपि पूज्य भाई साहब बीमार थे, परन्तु एक महोत्सव की हालत थी जिसका वर्णन एक बहुत पुराने प्रेमी दरभंगा के वरिष्ठ सत्संगी भाई ने अपने पत्र में किया है।

लखनऊ भण्डारा 2012
(29, 30, 31 दिसम्बर, 2012 एवं 1 जनवरी 2013)

जन्मदिन उत्सव भण्डारे की श्रृंखला में 30 एवं 31 दिसम्बर दो दिन है तथा पहली जनवरी भण्डारे का मुख्य दिन है। भण्डारे का सच्चा लाभ तीन दिन के भण्डारे में ही हो पाता है। एक दिन जो पहला दिन होता है, उस दिन हम लोग जगह–जगह से आकर अपने दुनियांवी कार्यकलापों को एक तरह से भूल जाते हैं। उस सत्संग भण्डारे रूपी गंगा में नहाकर भाव विभोर हो जाते हैं।

हमारा ध्यान हर जगह से सिमट कर उसी वातावरण में लीन हो जाता है। सतगुरु की चर्चा, उनका ध्यान, उनके चरणों में प्रार्थना, वही छा जाते हैं। इसलिए इस भण्डारे के प्रथम दो दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। भण्डारे पर सिखाने वाले सतगुरु, बुजुर्गों का फैज खींच–खींच कर वातावरण में भर देते हैं जिससे भण्डारे में आये सबलोग प्रभावित होते हैं जिससे दीन बनता है। यह सब गुरुदेव की कृपा से होता है। हम लोग इन दिनों जिनका जिक्र करते हैं, उस जिक्र से आत्मा उनकी याद से ओत–प्रोत हो जाती है। इसीलिए कहा गया है किः–

जो जिक्रे सदगुरू से दिल को बहलाया नहीं करते।
हकीकत में वो लुत्फे जिन्दगी पाया नहीं करते।

भण्डारे के दिनों में आश्रम में दुनियांवी बातें न करें। हर समय गुरु की याद में बने रहें, तब ही पूरा व ज्यादा फायदा होगा।

दिनांक 29 दिसम्बर को परम् पूज्य बाबूजी का निर्वाण दिवस है। उसी दिन से भण्डारे का आरम्भ कर हम सब लोग उनके ध्यान में ॐ शान्ति का जाप करते हैं। अधिकतर प्रेमीजन दिनांक 28 की रात्रि और 29 की सुबह आ गये थे। बहुत अच्छा वातावरण था। सब उनके फैज में डूबे हुए थे।

दिनांक 30 व 31 को भी हालत अच्छी रही। परमपूज्य बाबूजी की उपस्थिति हर समय रही। पूज्य गुरुदेव भी बहुत खुश थे। बड़ी लताफत रही, ठंड के बावजूद लोग बड़ी संख्या में आये थे और मानूस भी थे।

दिनांक 01 जनवरी 2013

आज परम् पूज्य बाबूजी महाराज का जन्मदिवस है। आप एकम् जनवरी 1901 को इस धरती पर छोटे से गाँव कटिया, जिला बदायूँ में जन्मे थे। आज एक जनवरी 2013 है, आज भी हम सब उस पुण्य आत्मा का जन्म दिन मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। धन्य हैं यह दिन, वह स्थान, वह कौम,

वह माता–पिता, वह घर, सभी धन्य हैं जहाँ आपका जन्म हुआ। आज का दिन भण्डारे का विशेष दिन है। उनके प्रेम से ओत प्रोत वातावरण से विदाई का दिन आ जाता है। सबके नेत्र अश्रुपूर्ण हैं, कभी कभी लगता है कि न तो हम एक परिवार, न ही रिश्तेदार हैं, परन्तु कितना प्रेम है। दिल टूटने लगता है। सत्संग में मातायें और बच्चे कितना काम करते हैं, उनका उत्साह देखते ही बनता है। ईश्वर उनको दीन और दुनिया दोनों में मालामाल करे। पूज्य बाबूजी का जन्मदिन उत्सव भण्डारा ही हमारा पर्व है, त्योहार है, सब कुछ यही है। पूरे वर्ष इन दिन का इन्तजार रहता है।

गुरुदेव के जन्म का यह दिन विशाल है।
उनके ही जन्म दिन का यह उत्सव महान है।।

संस्मरण एवं अनुभव
(डायरी से)

(1) सन 1959

एक दिन सुबह के वक्त पूजा कर रहा था। बड़ी अच्छी हालत थी। थोड़ी देर में देखता हूँ कि कोई बुजुर्ग आ के सामने बैठ गये और उन्होने Pathology के परचे मेरे सामने खोल दिये। मैं मेडिकल कालेज के हास्टल में रहता था और दूसरे दिन मेरा Pathology का सालाना इम्तिहान था। उनको मैंने नहीं पहचाना, लेकिन Pathology के इम्तिहान में हूबहू वही परचा था, जो कि मैंने देखा था। परचा बहुत सख्त था और अगर न देखा होता तो उन सवालो को न तैयार करता। उन बुजुर्ग का आज तक एहसानमंद हूँ।

(2) सन् 1959

एक दिन सुबह के वक्त हापुड़ मुझे, जगदीश बाबू और एक और सतसंगी भाई को बाबूजी संध्या करा रहे थे। थोड़ी देर में क्या देखता हूँ कि पूज्य लालाजी महाराज संध्या में बैठ जाते हैं और एक सफेद चादर खड़े होकर बिछाते हैं। उसके बाद उस पर एक लाश रखते हैं और उसको दूसरी चादर में ढक कर कफन की तरह लपेट देते हैं और उस पर फूल छिड़क कर कहते हैं कि आज मैं लंगड़ा हो गया हूँ।

उसके बाद एक बहुत खूबसूरत सा ताज मेरे सिर पर रखते हैं और प्रेम से मुझको गले लगाकर दोनों बॉहों में

बैसाखी लगाये, लँगड़ाते हुए चले जाते हैं। इस हालत का अनुभव बाबूजी तथा सभी सतसंगी भाइयों ने किया और उसकी तसदीक भी की।

पूजा के बाद मेरा अपना ख्याल हुआ कि ताऊजी की तबियत बहुत खराब है और मेरी उनसे मिलने की बहुत इच्छा हुई। हम बाबूजी तथा भाभी को साथ लेकर गाजियाबाद उनसे मिलने गए वहॉ जाकर यह खुशी हुई कि वह ठीक हैं। हम बैठे ही थे और उनको यह हालत बता रहे थे कि तब तक डाक द्वारा तार आया, जिससे मालूम हुआ कि बाबू श्याम बिहारी लाल जी पोस्ट मास्टर साहब फतेहगढ़ का स्वर्गवास हो गया। पोस्ट मास्टर साहब लालाजी के खास प्रेमी थे। जब यह बात ताऊजी को बताई गई तो कुछ देर विचार करने के बाद उन्होने बताया कि यह बिल्कुल सही अनुभव है।

(3) दिनांक 04 अक्टूबर, 1969

करीब दिन के तीन बजे जबकि मैं सुरेन्द्र सक्सेना पुत्र स्व0 श्री डी0पी0 सक्सेना, एक्ज्यूक्यूटिव इन्जीनियर जिला गोण्डा की लाश (Dead body) के साथ ट्रक पर बैठा, जिसमें वह लाश दाह संस्कार के लिए अयोध्या ले जायी जा रही थी तो फौरन ही यह ख्याल मेरे दिमाग में बहुत जोरों से आने लगा कि इस ट्रक का जरूर एक्सीडेंट हो जायेगा और यह ख्याल बराबर बढ़ता ही जा रहा था और ये लगा जैसे कोई ट्रक को उलटने की कोशिश बहुत जोरों से कर रहा है। बहुत कोशिश करने पर भी और ओउ्म शान्ति का जाप करने

पर भी यह ख्याल दिमाग से दूर नहीं हुआ। थोड़ी देर बाद क्या देखता हूँ कि पूज्य लालाजी महाराज ट्रक के पहिये पर अपना कन्धा लगाकर ट्रक के साथ बराबर चल रहे हैं। (जिस साइड में मैं बैठा हुआ था, उसी साइड के पहिये की तरफ) यह हालत काफी देर तक बराबर बनी रही। मैं मन ही मन में बराबर जाप भी करता रहा फिर भी दिमाग से यह ख्याल नहीं हटा कि एक्सीडेंट होगा और ट्रक का वाकई में एक जगह एक्सीडेंट होते–होते बच गया। जब मैं घर वापस आया तो मेरी पत्नी ने बताया कि उनको भी यही ख्याल आ रहा था कि आज एक्सीडेंट जरूर होगा और सबको बहुत चोटें आ जायेंगी। वो बहुत परेशान रहीं और बराबर रोती रहीं थी।

उनको भी पहली बार परम पूज्य लालाजी महाराज का दर्शन हुआ और उसने प्रसाद माना और प्रार्थना की कि आज यह अगर ठीक से वापस आए तो प्रसाद चढ़ायेंगी। जब मैं दाह संस्कार के बाद रात के 12 बजे वापस आया तो वह बहुत परेशान घर के बाहर टहल रही थी और उन्होंने बताया कि आज जरूर एक्सीडेंट होने वाला था। यह सिर्फ परम् पूज्य लालाजी महाराज की मेहरबानी थी कि ट्रक का एक्सीडेंट बाल–बाल बच गया और सब लोग बच गये। उस रोज मैं रात भर रोता रहा कि परम् पूज्य लालाजी महाराज और सिलसिले के बुर्जुगान हमारा कितना ख्याल रखते हैं जबकि हम लोग इसके पात्र भी नहीं हैं।

(4) दिनांक 17.05.1970

मैं दिनांक 17.05.1970 को अपने छोटे चचेरे भाई नरेश पुत्र श्री स्व0 गंगादीन सक्सेना की शादी में आगरा गया था। सुबह के वक्त जब मैं ताजगंज आगरा में अपने जीजाजी के घर पूजा में बैठा तो मैंने देखा कि परमपूज्य ताऊ जी महाराज जी की मौजूदगी मेरे सामने है और दिल में बार–बार यही ख्याल आता था कि मुझे फौरन पूज्य ताऊ जी के दर्शन के लिए सिकन्द्राबाद जाना चाहिए। ये ख्याल बहुत तेजी से और दिल में बराबर आ रहा था। गो कि बहू की विदाई में सभी लोग व्यस्त थे, मैंने अपने छोटे भाई बसन्त से कहा चलो हम और तुम सिकन्द्राबाद चलकर पूज्य ताऊ जी के दर्शन कर आयें। मुझे ऐसा लगता है, उनका आखिरी वक्त है और वो मुझको याद कर रहे हैं। मगर उसने कहा कि दिनांक 22.05. 1970 को हम और आप चलेंगे। मैंने कहा कि मेरी तबियत बहुत घबड़ा रही है। चलो अभी चलते हैं और उनको देख कर आते हैं। बारात आगरे से चँदौसी वापस जा रही थी लेकिन मेरी तबियत बराबर उचाट हो रही थी और कहीं भी नहीं लग रही थी, इसी कारण मैं बारात के साथ न जाकर बदायूँ उतर गया। पूज्य बाबूजी भी मेरी परेशानी के कारण बदायूँ उतर गये। वहाँ भी तबियत बिल्कुल नहीं लगी और 18 मई की शाम को हम लोगों को तार मिला कि पूज्य ताऊ जी का इन्तकाल हो गया। ये तार मेरे छोटे भाई नन्नू ने गाजियाबाद

से भेजा था। मैं और परमपूज्य बाबूजी महाराज फौरन रात की गाड़ी से सिकन्द्राबाद रवाना हो गये। रास्ते में बहुत ही परेशानियाँ हुईं, हाथरस तक तो हमलोग आराम से पहुँच गये। हाथरस से खुर्जे तक काफी परेशानियॉ हुई, कई गाड़ियाँ छूटी। खुर्जा से बस में भी बड़ी दिक्कतें हुई। कुछ लोगों का बस के कन्डक्टर से झगड़ा हो जाने के कारण बड़ी दिक्कतें पड़ीं। बाद में आखिरी वक्त ज्यों ही हम लोग उनके घर पर पहुँचे, उसी वक्त उनका पार्थिव शरीर लोग घर से शमशान घाट ले जा रहे थे।

उस वक्त उनकी वो बात याद आयी, आप अक्सर कहा करते थे ''अगर नन्हे मेरी जिन्दगी में आ जाये तो मुझे बड़ी खुशी होगी, वरना वो मेरी मौत पर जरूर आयेगा।'' और वही हुआ। हाथरस में बराबर गाड़ी का छूटना और रास्ते में परेशानी होने के कारण मुझे ये उम्मीद नहीं रही थी कि मैं आखिरी वक्त उनके दर्शन कर पाऊँगा या नहीं, मगर सन 1962 की कही हुई बात बिल्कुल सही निकली। मेरे फूफा जी (जो उनके गुरुभाई थे) और मेरा भाई बसन्त आखिरी वक्त उनके दर्शन न कर पाया, जिसका उन्हें काफी अफसोस हुआ। बात ऐसी थी कि उनकी लखनऊ वाली लड़की की गाड़ी लेट होने के कारण डेड बाडी को रोक रखा था, इसी बीच हम लोग पहुँच गये। जब मैंने उनके पार्थिव शरीर को देखा तो करीब आधे घण्टे तक बहुत रोना आता रहा। घाट

पर पहुँचने के पहले मैंने देखा कि आप एक विमान पर बैठकर आसमान की तरफ चले जा रहे हैं और आप मुझे बहुत आशीर्वाद देकर कह रहे हैं कि तुमको तो बहुत खुश होना चाहिए। आपने मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा कि अब मैं आजाद हूँ और हर वक्त तुम्हारे साथ रहूँगा। इससे दिल को बहुत तसल्ली हुई और रोना बिल्कुल बन्द हो गया। मुझे अब इस बात की तसल्ली है कि मैं आपको हर जगह अपने साथ देखता हूँ, ये उन्हीं की कृपा की बदौलत है कि आप हर वक्त मेरे साथ हैं।

(5) दिनांक 12.07.1970

आज रह–रहकर परमपूज्य ताऊ जी की बहुत याद आ रही है। वो अक्सर अपने परिवार के लोगों से और बहुत से सतसंगी भाइयों से फर्माया करते थे कि मैंने इस फानी दुनिया में सिर्फ दो ही लोगों से मोहब्बत की है। इसके अलावा मुझे किसी से मोहब्बत नहीं है, सिर्फ व्यवहार है, एक अपनी बीबी से और दूसरे दिन्ना से। मैं बहुत ही बदकिस्मत हूँ, दोनों ही मुझे छोड़ गये। बीबी से मुझे ईश्वर ने छुड़ा दिया। मुझे ये ख्याल हुआ। जो कुछ भी मैं करूँगा, सिर्फ दिन्ना के लिए ही करूँगा और उसी की मोहब्बत में फँसने जा रहा था वो भी मुझे छोड़ गया लेकिन ये तो इस दुनिया का हाल है, मेरा उसका जन्मों से आत्मा का ताल्लुक है जो कभी भी खत्म नहीं हो सकता। चाहे वो आये या न आये। मैं चाहे उसको छोड़ दूँ,

या वो मुझको छोड़ दे, मैं उससे बराबर प्यार करता रहूँगा। वो मेरे मरने के बाद मुझे बहुत याद करेगा और कोई आये या न आये, मेरी वापसी पर वो जरूर आएगा। और वो बात उनकी बिल्कुल सही भी निकली और मैं उनके आखिरी वक्त तक पहुँच गया। जब मैं कर्नलगंज में पोस्टेड था और गोरखपुर की गाड़ी कर्नलगंज से पास होती थी तो सबसे कहते थे कि मेरा दिल बैठा जा रहा है कि मैं दिन्नू से बिना मिले यहाँ से जा रहा हूँ। मैं अपनी जिन्दगी में उसकी पैदाइश से लकर आज तक न भुला सका। मेरा उसका जन्मों का साथ है। ईश्वर ने हमारी जिन्दगी में ही इस लगाव को भी खत्म कर दिया इसीलिए वो मुझसे दूर हो गये।

(6) दिसम्बर 1970

इधर इस महीने के आखिरी दिनों में रोज सुबह पूजा में ये देखता था कि कोई बुजुर्ग हैं जो कि मेरी चचिया ससुर यानी बाबू सदानंद जी की बीबी की लाश को मेरे सामने एक कफन में लपेट कर सामने रख देते हैं और ये ख्याल कई दिनों तक पूजा में बराबर आता रहा, कहते हैं मुझसे कि ये भी अपनी बेटी है इसके लिए भी दुआ कर दिया करो। दिसम्बर के आखिरी दिनों में पूजा के समय यही ख्याल आता रहा। बाद में ये सब ठीक निकला क्योंकि उनकी मौत जनवरी 1971 को हो गयी। इस वक्त मुझे ये ख्याल आया कि वह बुजुर्ग मेरे ही गुरुदेव थे।

(7) दिसम्बर 1970

सुबह के वक्त इधर पूजा में बराबर ये देखता रहा और ये ख्याल भी आता रहा कि कोई बुजुर्ग हैं जो अनमोल की लाश को कफन में लपेट कर मेरे सामने रख देते हैं और कहते हैं कि बेटे, मैं सोच रहा हूँ कि क्या तुम दुखी हो, मैंने जो चीज तुमको दी थी, उसी को अब वापस ले रहा हूँ। मैं उन बुजुर्ग से काफी देर तक बात करता रहा, मुझे ये याद नहीं कि क्या बातें हुईं, बस केवल इतना याद है कि इसमें दुख की क्या बात है, आपकी ही चीज थी, आप वापस ले रहे हैं। उन बुजुर्ग ने बहुत खुश होकर अनमोल के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए हमको वापस कर दिया और कहा कि बेटे मैं तुमको कभी दुखी नहीं देख सकता । वापसी के वक्त मैंने देखा कि पूज्य चाचा जी मौजूद हैं और मुझे और अनमोल को बहुत आशीर्वाद दिया।

(8) 17 जनवरी 1971

शर्मा बहन जी लखनऊ आयी थीं, और उन्होंने मेरी पत्नी को बतलाया कि इधर पूज्य ताऊ जी महाराज की मौजूदगी हर वक्त देखती रहती हैं और ये भी देखा कि वो मुझे (दिन्नू भइया) एक बहुत ही अच्छी फूलों की माला पहना रहे हैं और एक बहुत ही खुबसूरत गुलाब का छोटा सा पौधा देते हैं और कह रहे हैं कि बेटे इसे किसी जगह अच्छी तरह छुपाके रख दो, कोई देखे ना। यह सपना या ख्याल कई

दिनों तक शर्मा बहन देखती रहीं, शर्मा बहन जी को पूज्य ताऊ जी से बेइन्तहा मोहब्बत थी, उसका असर यह है कि उनकी मेहरबानी उन पर बराबर बनी हुई है।

(9) 05 फरवरी, 1971

कल रात को यानी 04.02.1971 को बराबर ऐसा लगता रहा कि कोई बुजुर्ग मेरे पास बैठें हैं और मेरे सिर पर हाथ फेर कर कह रहे हैं कि अब सिगरेट पीना छोड़ दो, उन बुजुर्ग को मैं नहीं पहचानता हूं। ये हालत रात भर रही और 05.02.1971 को पूज्य ताऊ जी की कृपा से मैंने सिगरेट पीना हमेशा–हमेशा के लिए छोड़ दिया। ये उन्हीं की मेहरबानी थी, अब मुझे सिगरेट का कभी ख्याल भी नहीं आता है।

(10) दिनांक 07.03.1973

मैं होली की छुट्टी पर लखनऊ गया था, वहाँ पर मेरी ससुराल के सभी लोग आये हुए थे और हम लोग बड़ी हँसी खुशी से रह रहे थे। दिनांक 08.03.1973 को मेरे बड़े साले की पत्नी की एक सहेली ने हम लोगों को अपने काफी हाउस जो कि हजरतगंज में था, काफी की दावत दी। हम सभी लोग मेरी कार द्वारा हजरतगंज जा रहे थे। रास्ते में मैंने खुली आँख देखा कि परम् पूज्य ताऊ जी महाराज मेरे पास आकर कार में बैठ गये और कहने लगे कि बेटे तुम फौरन कासगंज चले जाओ और बहन शर्मा को अपने साथ ले आओ वो बहुत परेशान हैं।

जब मैं काफी हाउस पहुँचा तो हर जगह पूज्य ताऊ जी की मौजूदगी पायी और उनकी वही आवाज ''शर्मा बहन को ले आओ, वो बहुत परेशान हैं'' हर जगह सुनाई दे रही थी। आखिर में मैंने अपने ससुर साहब से कहा कि मैं 10 मिनट में सतीश बाबू से मिलकर आता हूँ, उनका घर गर्वन्मेंट सेक्रेटियट कालोनी महानगर में था। वहाँ जाकर मैंने शर्मा बहन का कासगंज का पता पूछा और वहाँ से लौटने पर उसी रात को ही मै गाड़ी से कासगंज के लिए रवाना हो गया। गाड़ी कासगंज पहुँची और अपने छोटे साले अजय से मैंने कहा कि कल मैं वापस आऊँगा तुम मेरी गाड़ी लेकर स्टेशन पर आ जाना। मेरा काफी न पीना व वहाँ से चला जाना मेरी ससुराल वालों को अच्छा नहीं लगा। वहाँ पहुँचने पर मैंने कई सतसंगी भाइयों से उनका पता पूछा, मगर किसी ने कोई खास सहयोग नहीं दिया। पूछते–पाछते मैं उनके घर पहुँचा, वहाँ पहुँचने पर शर्मा बहन की हालत देखने पर मेरे मुँह से निकल गया कि अब आप मेरे साथ चलें। मैं अकेले ही गया था और इस ख्याल से भी नहीं गया था कि उन्हें फौरन लाना होगा। मुझे दुःख से लिखना पड़ रहा है कि किसी सतसंगी भाई ने वहाँ पर मेरी कोई भी मदद नहीं की। उनकी मकान मालकिन भी एक विधवा और बूढ़ी औरत थीं, केवल दो ही लोग उस मकान में रहते थे। उन्होंने मुझसे कहा कि बेटा बहुत अच्छा हुआ कि तुम आ गये। मैं 6–7 दिन से बराबर

इनकी देखभाल और सेवा कर रही हूँ। परेशान होकर आज मैंने इनसे कह दिया कि अगर कल तक तुम यहाँ से ना गयी तो तुम्हारी चारपाई बाहर रख दूँगी।

मेरी कुछ भी समझ में नहीं आया एक तो अकेला और दूसरे वहाँ के रास्ते से खास वाकिफ नहीं था और मन ही मन ये सोच रहा था कि इनको कैसे मैं अकेले ले जा सकता हूँ। सामने ही एक पान की दुकान पर एक साहब पान खा रहे थे और बार–बार मेरी तरफ मुड़–मुड़ कर देख रहे थे। वो साहब मेरे पास आये और कहने लगे भाई क्या तुम राजेन्द्र–बीरेन्द्र हो? मैंने उनसे कहा हाँ। उन्होंने कहा कि हम तुम लोग क्लास फैलो थे, सभी लोग मेरा और भाई साहब का नाम साथ–साथ लेते थे। मेरे दिमाग में तो सिर्फ उन्हें ले जाने की ही धुन लगी हुई थी और उसी के बारे में सोच रहा था। परम पूज्य ताऊ जी महाराज हर जगह दिखाई दे रहे थे। मैंने टालने के ख्याल से उनसे पूछा कि तुम क्या करते हो तो उन्होंने बताया कि मैं यहाँ पर हेड टी.टी.आई. हूँ। ये सुनकर तसल्ली भी हुई और खुशी भी हुई। मैंने उनसे कहा कि मेरी बहन है जिनको पैरालिसिस हो गया है और पूरी कांसिन्यस भी नहीं है, मैं उनको रात की गाड़ी से ले जाना चाहता हूँ क्या आप मेरी कुछ मदद कर देंगे। उन्होंने फौरन स्टेशन जाकर चार कुली, स्ट्रेचर और लालटेन का बन्दोबस्त करके उनको स्टेशन पहुँचाया और ट्रेन में एक पूरी बर्थ पर आराम से

लिटवा दिया और जो टी0टी0 गाड़ी में चल रहे थे उनको बुलाकर हिदायत भी दी कि ये मेरे साथी हैं उनकी बहन को लखनऊ पहुँचाना है और गाड़ी से उतार कर आप मुझे सूचित करियेगा और ये भी हिदायत दी कि इन दोनों सीटों पर किसी और को बैठने मत दीजिएगा और इस तरह मैं शर्मा बहन को कासगंज से लखनऊ ले आया। यहाँ पर मेरे छोटे साले अजय मेरी गाड़ी लेकर आये थे और उसी में उनको लिटा दिया। ये सब परमपूज्य ताऊ जी की दया व कृपा का नतीजा था। वर्ना वो मेरा साथी 31 साल बाद मिला और पहचान लिया जिसका मैं हमेशा शुक्रगुजार हूँ। किसी ने कोई मदद इस डर से नहीं की कि वहाँ के लोगों को बुरा न लगे।

(11) दिनांक 27.09.1974

आज मैं नवाबगंज से गोण्डा अदालत में इवीडेंस देने जा रहा था और टैक्सी से सफर कर रहा था। गोण्डा से करीब तीन मील पहले मेरी टैक्सी की राड टूट गयी और ड्राइवर को बिल्कुल उसका पता नहीं चला। ड्राइवर टैक्सी को सड़क के दाहिने ओर उतार रहा था, उसी वक्त न जाने कैसे मेरा हाथ स्टेयरिंग पर पड़ा, आगे काफी बड़ा गड्ढा था। मैंने पूछा टैक्सी को नीचे क्यों ले जा रहे हो, मेरे हाथ रखते ही वो टैक्सी बन्द हो गयी, अगर ऐसा न होता तो बहुत बड़ा एक्सीडेंट हो जाता। इस तरह गुरुदेव ने और सिलसिले के बुजुर्गों ने मेरी रक्षा की। साथ में और लोग भी बैठे थे। यही

हमारे सिलसिले के बुजुर्गों की शान है। बाद में ड्राइवर ने बताया कि गाड़ी डिसबैलेंस हो रही थी, अगर टैक्सी बन्द न होती तो अवश्य एक्सीडेंट हो जाता।

(12) अक्टूबर 1974

शर्मा बहन ने मुझसे यह ख्वाहिश जाहिर की कि वो सिकन्द्राबाद भण्डारे में जाना चाहती हैं। मेरे यहाँ इन्सपेक्शन था, इसलिए मैं उनके साथ फैजाबाद नहीं जा सकता था। इसी उधेड़बुन में मैं परेशान था कि इनको कैसे फैजाबाद भिजवाया जाय, कोई भी जरिया समझ में नहीं आ रहा था। मन में कुछ झुँझलाहट भी थी। मेरी दो लोहे की अलमारियाँ जो कि मैंने इलाहाबाद से खरीदी थी, फैजाबाद में आ के बहुत दिनों से पड़ी हुई थी। फैजाबाद से नवाबगंज लाने के लिए मेरे एक मरीज सरदारजी जिनकी ट्रकें चलती थीं, और काफी बड़े आदमी थे, उन्होनें वादा किया था, अलमारियॉ नवाबगंज पहुँचाने के लिए। अचानक ख्याल आया और मैंने अपने नौकर से कहा जाओ सरदार जी के यहाँ कहना कि मेरा अलमारी का आर0आर0 वापस कर दें ताकि मैं अलमारियाँ किसी और से मँगवा लूँ। सरदार जी ने उस नौकर से कहा कि तुम वापस जाओ मैं खुद डा0 साहब से आकर बातचीत कर लूँगा। सरदार जी मेरे पास आये और कहने लगे कि डाक्टर साहब मेरे ट्रक का एक्सेल टूट गया था इसी कारण आपकी अलमारी फैजाबाद से यहाँ तक न ला

सका। अब मेरा ट्रक ठीक हो गया है और ड्राइवर ट्रक यहाँ ला रहा है। मैंने उनसे कहा फिर इतना काम और कर दें कि इसी ट्रक से मय चारपाई के शर्मा बहन को आप फैजाबाद पहुँचा दें। उन्होंने कहा कि आप निश्चिंत रहें, मैं फैजाबाद पहुँचाकर उनको गाड़ी पर भी बैठवा दूँगा। और बहुत आराम से वो मेरे वार्ड ब्वाय के साथ फैजाबाद चली गयीं और सिकन्द्राबाद भण्डारे में पहुंच गई। ये परम् पूज्य ताऊ जी महाराज की दया और कृपा ही थी कि सब आसानी से हो गया। सरदार जी बड़े अहसान के साथ उनको ले गये और बड़े आराम से ट्रेन पर भी बिठवा दिया।

(13) दिनांक 04.11.1974

इधर मैं बराबर 15 दिनों से पूजा में डा0 चतुर्भुज सहाय जी को अपने सामने बैठा हुआ देखता हूँ और वह मुझे बहुत आशीर्वाद दे रहे हैं और हर वक्त मेरे साथ साये की तरह चल रहे हैं। मैंने परमपूज्य बाबूजी महाराज को खत लिखा कि ना जाने क्यों इन्हीं को हर वक्त देखता हूँ। मैंने बाबूजी महाराज को पत्र में लिखा कि जबसे मैंने चरित्र पराग किताब लिखना शुरू किया, तभी से मैं उनको हर वक्त अपने पास पाता हूँ। वो हमेशा आशीर्वाद देते हैं और कहते हैं कि इस किताब में हमारा भी फोटो लगा देना। बाबूजी का पत्र आया कि ''मैं भी तीन चार महीनों से उनकी मौजूदगी का अहसास कर रहा हूँ, बेटा उनकी फोटो जरूर लगा देना।''

(14) दिनांक 13.11.1974

इधर रोज पूजा में हर वक्त सुबह को पूज्य डा0 चतुर्भुज सहाय जी को देखता हूँ। वो बहुत ही मोहब्बत से मुझे बहुत आशीर्वाद देते हैं । वो पूजा में आकर मेरे सामने बैठ जाते हैं और जब तक मैं पूजा करता हूँ, बराबर बैठे रहते हैं। बाद में पूज्य बाबूजी महाराज के खत से मालूम हुआ कि पिछले दो महीनों से उनकी मौजूदगी वह भी देख रहे हैं और पूज्य बाबूजी ने लिखा कि ये हालत कस्फी है। बाबूजी महाराज ने भी उनकी मौजूदगी को हमेशा महसूस किया और मेरी भी ये हालत बराबर एक महीने तक बनी रही। बाबूजी महाराज ने बताया, उनके लिए एक माला ॐ शान्ति का जाप जरूर कर लिया करो।

(15) दिनांक 08.12.1974

आज सुबह करीब 10 बजे बाबू बृजमोहन लाल जी की समाधि पर गया था, बड़ी अच्छी हालत रही। मैंने देखा कि आप (बृजमोहन लाल जी) और पूज्य चाचाजी महाराज साहब की समाधि पर बैठे हुए हैं और मुझे बहुत आशीर्वाद दे रहे हैं, वहाँ से आने के बाद पूजा में बहुत से बुजुर्गों के दर्शन प्राप्त हुए और आशीर्वाद मिला।

(16) दिनांक 16, 21 व 23.02.1975

पूजा में बहुत अच्छी हालत रही और हर जगह परम् पूज्य ताऊ जी महाराज और बाबूजी महाराज की कृपा का

अहसास होता रहा। दिनांक 16.02.1975 को सूरज कुमार लाल जी जो कि पूज्य बाबूजी महाराज के शिष्य थे, मेरे यहाँ नवाबगंज आये थे। दिनांक 21.02.1975 को मेरे फूफाजी पुज्य सेवती प्रसाद मुख्तार साहब, गोपाल जी बक्सर और चार–पाँच लोग और सतसंगी नवाबगंज आ गये और बराबर सतसंग होता रहा। दिनांक 24.04.1975 जब मैं सुबह के वक्त पूजा में बैठा था तो बहुत अच्छी हालत रही। बालकृष्ण मिस्त्री और दो लोग बाहर के आये हुए थे और उन सबके साथ बराबर सतसंग हुआ और बुजुर्गों की मौजूदगी का बराबर अहसास रहा। हर वक्त Thoughtlessness निर्विचार की हालत रही और हर तरफ प्रकाश ही प्रकाश दिखलाई पड़ा।

(17) दिनांक 29–10–1991

आज शाम को 6pm पर लखीमपुर खीरी के एक Private Doctor Dr. Ramesh Mehrotra मेरे घर पर आये और कहा कि मुझे पूज्य लालाजी महाराज का फोटो दे दीजिए और यह भी बताया कि वे कल भी आये थे और फोटो के लिये बहुत परेशान हैं। मैं ने पूछा कि यह प्रेरणा आपको कहॉ से उठी, तो आपने बताया कि मैंने 27–10–1991 की रात को सपना देखा कि पूज्य लालाजी महाराज आए हैं और मेरे कमरे में बैठ गये। पूज्य बाबूजी भी उनके साथ हैं और उनके माथे पर बहुत तेज है और प्रकाश ही प्रकाश है। मैंने पूज्य लालाजी से उनकी एक फोटो मॉगी। पूज्य लालाजी

महाराज ने कहा कि इनसे (Dr, V.K. Saxena) ले लूँ और वहॉ पर उनको मेरा शक्ल (चेहरा) जो कि प्रकाश से भरपूर था, दिखाई दिया। डा0 मेहरोत्रा ने लालाजी महाराज से कहा कि यह तो Dr, V.K. Saxena, C.M.S. हैं तो उन्होंने सिर हिला दिया। आप ने कहा कि बेटे इनको एक फोटो दे दो। मैं जाता हूँ और स्टील अलमारी की चाभी निकालकर स्टील अलमारी खोलता हूँ और एक–एक किताब निकालता हूँ, मगर उनको देता नहीं। उन्होंने बताया कि यह सपना मैंने दो दिन तक बराबर देखा और इसीलिये मैं 28/10 और 29/10 को आपके पास आया हूँ। मैंने उनसे कहा कि मैं अपनी लिखी हुई किताब चरित्र पराग स्टील की अलमारी से निकाल लूँगा। उन्होने बताया कि जो अलमारी मैंने सपने में देखी वह बिल्कुल इसी प्रकार की थी, जैसी यह आपके कमरे की अलमारी है और इसी तरह आपको दूसरी अलमारी से चाभी निकालते देखा। मेरे पास केवल चरित्र पराग की एक ही पुस्तक थी पर वह उस समय न मिली।

आज सुबह 8 A.M. Dr. S.P. Srivastava और मेरे गुरू भाई Shri Basuji मेरे निवास पर आये थे कि वंशावली किताब के लिए मैं अपना और सेठ भाई साहब का नाम और फोटो दे दूँ। मैंने साफ मना कर दिया। जाते समय उन्होंने मेरी लिखी हुई सब किताबें मॉगी। मैंने उनको एक–एक कापी संतमत साधना भाग–I और भाग– II, अनमोल संत

वचन भाग–I और भाग– II, और पूजा की विधि दे दी। उस समय इसी अलमारी में चरित्र पराग की किताब वहीं मिली। मैंने उनसे कहा कि इस किताब को मैं बाद में लखनऊ से लाकर दे दूँगा और शाम को जब Dr. Ramesh Mehrotra आये और मांगा तो केवल एक ही किताब मिल गई जो कि मैंने उनको दे दी। कहने का मतलब यह है कि बुजुर्गों की दया उन पर थी तब ही ऐसा हुआ।

(18) दिनांक 14–04–1992

इस बार यह ख्याल आया कि हम सब लोग यानी लखनऊ के सतसंगी भाई भी एक बस करें और सबसे पहले पूज्य चाचाजी महाराज की समाधि (कानपुर) पर सलाम पेश कर, रायपुर, कुबेरपुर तथा फतेहगढ़ पूज्य लालाजी की समाधि पर पहुँचे। इसी ख्याल से एक बस की जिसका किराया रू0 5000/– तय हुआ। हम सब जाने वाले 20 लोग थे। मैंने बस का एडवांस रू0 1000/– दे दिया और श्री जे0एस0 यादव से कहा कि जाने वालों की सूची बना लें और सबसे रू0 125/– प्रति व्यक्ति के हिसाब से जमा कर लें। मगर 20 भाइयों से गाड़ी आगे नहीं बढ़ी। मुझे ख्याल हुआ कि मुझे करीब रू0 3000/– अकेले ही देना पड़ेगा। उसी ख्याल में मैं सो गया। 14–04–1992 को सुबह यह ख्वाब देखा कि मैं अपने मकान पर गया हूँ और पूजा वाले कमरे में जाता हूँ, वहाँ देखा कि पूज्य बाबूजी महाराज

चारपाई पर बहुत खुश बैठे हैं। मैं पूज्य बाबूजी से कहता हूॅ कि बहुत अच्छा हुआ कि आप आ गये मैं तो कई दिनों से आपको याद कर रहा था। मैने पूज्य बाबूजी को अपनी सब परेशानी बतायी। पूज्य बाबूजी मुस्कराये और कहा कि जाकर उनको (परमपूज्य चच्चा जी महाराज को) सलाम पेश कर आओ। मैं नीचे वाले Guest Room में जाता हूॅ तो देखा कि पूज्य चाचाजी महाराज बैठे हैं। मैंने उनके पैर छुये। आपने आशीर्वाद दिया और फरमाया कि मैं तुम लोगों को लेने आया हूॅ। मैं बहुत खुश हुआ और प्रेम से रोने लगा कि हमारे बुजुर्ग कितना ख्याल हम लोगों का रखते हैं कि ख्याल आते ही हाजिर हो गये। मैं काफी देर तक उनके पास रहा। मेरी एक अजब हालत थी। सारे जिस्म में एक Current सी बह रही थी। इतने में शोरगुल सुनाई पड़ा। मैंने बाहर जाकर देखा कि बस पूरी तरह भाइयों से भर गई है और बस का ड्राइवर कह रहा था कि डा0 साहब को बुलाओ वह तो कह रहे थे कि ज्यादा से ज्यादा 40–45 लोग जायेंगे। कुल लोग 68 हो गये हैं, कैसे बैठेंगे। मैं ऊपर पूज्य बाबूजी के पास जाता हूॅ तो आप अपने से कहने लगे कि मैं ही सबसे कह आया था कि सब लोग लखनऊ होकर बस से जाये, परेशान ना हो, सब लोग आराम से चले जायेंगे और वापस भी आ जायेंगे और ऐसा ही हुआ। इधर से हम लोग 68 लोग और वापसी में कुल 80 लोग थे। कई ऐसे भाई बहन जिनकी माली हालत ठीक नहीं थी,

वह भी फ्री में adjust हो गये। मैं ने सब भाइयों को जिन पर रेलवे पास था, लिखा था कि वह लोग कमालगंज रेलवे स्टेशन दोपहर की गाड़ी से चलकर मिलें परन्तु 10 भाइयों, जिन पर रेलवे पास था वह भी लखनऊ आये और हम लोगों के साथ बस से ही गये। यह सब पूज्य चाचाजी महाराज की दया और कृपा थी, जो कानपुर पहुँचकर उनसे फैजयाब हुए। मुझे मन में बहुत ग्लानि हुई कि जब हम लोगों पर बुजुर्गो की इतनी कृपा है कि ख्याल आते ही हाजिर हैं तो बस के Payment का विचार क्यों आया। केवल इरादा और हिम्मत करने से ही उन बुजुर्गो की दया व कृपा बरसने लगती है। ज्यादातर भाई कानपुर समाधि पर पूज्य चाचाजी महाराज से खूब फैजयाब हुये।

(19) दिनांक 16.04.1992

इस वर्ष ईस्टर की छुट्टी में 16—04—1992 को जब फतेहगढ़ भण्डारे जा रहे थे तब परमपूज्य अहमद अली खॉ साहब की समाधि पर जब पूजा करने बैठे तो थोड़ी ही देर बाद समाधि के आगे वाले हिस्से पर परमपूज्य मौलवी साहब बैठ गये। उनसे थोड़ा पीछे हटकर परमपूज्य लालाजी महाराज, ताऊजी एवं बाबूजी बैठे थे। समाधि के दाहिने कोने पर बहुत बड़ा काले रंग का शिवलिंग देखा और बायें कोने पर बाल रूप हनुमान जी की बड़ी सुन्दर सफेद संगमरमर की मूर्ति देखी। मूर्ति बड़ी ही आकर्षक थी। मैंने इसके पूर्व न

इतना बड़ा शिवलिंग देखा था, न ऐसी सुन्दर हनुमान जी की मूर्ति। मैं अपने मन में सोच रहा था कि इधर मैंने क्योंकि बराबर मंदिरों में दर्शन किये, उसी का असर है। इस ख्याल को आते ही क्या देखता हूँ कि वह मूर्ति मुस्कराने लगी और मुझसे कोई कहता है कि यह हनुमान जी का बाल रूप है फिर भी मेरे दिमाग में यही ख्याल रहा कि यह उसी का असर है। फिर देखा कि हनुमान जी की गदायें हिलने लगी। मैंने जब शिवलिंग की तरफ देखा कि शिवजी उस शिवलिंग के पीछे आकर विराजमान हो गये हैं। पूजा खत्म करने के पश्चात भी वह शिवलिंग और वह सुन्दर मूर्ति मेरे दिमाग में रही, मैं कुछ समझ न सका।

(20) दिनांक 11—05—1992

समय करीब दोपहर एक बजे का था। मैं बलरामपुर अस्पताल के I.C.C.U. room No.3 में अपने श्वसुर श्री दयानन्द श्रीवास्तव जी के साथ था। जो हृदय रोग के उपचार के लिए 09—05—1992 की रात को भर्ती हुये थे। मैंने खुली ऑखों से देखा कि एक बुजुर्ग जिनकी दाढ़ी है, आये हैं और कह रहे हैं कि यहॉ कौन आयेगा, इतना गंदा है कमरा। मैंने तुरन्त पिताजी के कपड़े, बिस्तर, चादर आदि बदले और अच्छी तरह से सफाई करवाई और 2.30 pm वह एकटक करीब मुझे 2 मिनट तक देखते रहे। उस समय मेरी शक्ल पूज्य ताऊजी महाराज जैसी हो गयी थी और वह बुजुर्ग मेरे साथ थे। उसी समय उनका आखिरी वक्त था। मगर बुजुर्गो

की मौजूदगी इस बात का सबूत हैं कि उन लोगों को कितना ध्यान है हम सबका।

(21) दिनांक 18—09—1994

18 तारीख दिन इतवार को जब सतसंग हो रहा था तो देखा कि राजेन्द्र मणि त्रिपाठी जी फरदनी वाले बहुत साफ कपड़े पहन कर मेरे सामने बैठ गये हैं। सतसंग समाप्त होने पर पूज्य बाबूजी उनको अपने साथ लिए जा रहे हैं। बाद में उनके पुत्र कृष्ण बिहारी जी के पत्र आने पर पता चला कि उसी दिन सुबह उनका स्वर्गवास हो गया था तथा वह अपने अन्त समय में हम सबको बहुत याद कर रहे थे।

(22) दिनांक 30—03—2004

आज दिनांक 04—03—2004 दिन सोमवार की रात को लखनऊ मेल से मैं, मेरी पत्नी, अजय, बीना, डा0 एस0एन0 राय, उनकी पत्नी, यादव जी, श्री शिव प्रसाद शुक्ला, अनिल शुक्ला, राम मिलन यादव जी दिल्ली गए और सुबह 8—8:30 बजे अनमोल के यहॉ पहुॅचे और हम लोग नहा धो कर तैयार हुए ताकि हजरत नूर मोहम्मद साहब तथा ख्वाजा बाकी विल्लाह साहब की मजार पर जाकर अपना सलाम पेश करें। दिल्ली में श्री त्रिभुवन सिंह जी, उनकी पत्नी, गुड़गांव के ब्रजेश जी, डा0 आर0एन0 दास एवं उनकी पत्नी, श्री एम0एल0 दास तथा उनकी पत्नी मीना दास यह सब लोग भी अनमोल के घर पहुॅच गये। अनमोंल ने दोनों मजारों की जगह पहले से पता कर लिया था, परन्तु क्यों कि मौहर्रम का

दिन था, जगह जगह दिल्ली में रास्ता बंद था। कुछ पल के लिए ऐसा लगा कि दर्शन शायद सम्भव न हो, लिहाजा यह तय किया गया कि पहले हजरत नूर मोहम्मद साहब के मजार पर सलाम पेश किया जाये। यह मजार अनमोल के घर के पास थी और हम सभी लोग दो गाड़ियों में बैठकर हजरत नूर मोहम्मद साहब के मजार पर गये। वहॉ पर शहादरा के सतसंगी भाई अनिल बाजपेयी, उनके भाई व्यास, तथा उनके छोटे भाई भी सीधे मजार पर पहुॅच गये । हम सभी लोगों ने उनकी मजार पर फूल चढ़ाये, सलाम पेश किया और करीब एक घंटा रूके। एक अजीब अनुभव किया। एक ऐसी सुकून की हालत थी जो बयान के बाहर है। वहॉ से करीब 12 बजे ख्वाजा बाकी बिल्लाह साहब की मजार पर सलाम पेश करने हम सभी लोग गये । वहॉ मजार के अन्दर Ladies के जाने की मनाही थी, लिहाजा वह लोग बाहर बैठ गयीं और हम सब मजार के अन्दर चले गये। आपकी मजार पर बहुत फैज था। परम पूज्य ताऊजी एवं पूज्यपूज्य बाबूजी की मौजूदगी बराबर रही। कई बार ऐसा लगा कि ख्वाजा बाकी बिल्लाह साहब तथा पूज्य ताऊजी तथा पूज्य बाबूजी बैठे हुए हैं। बीच–बीच में एक और बुजुर्ग दिखाई दिये, जिन्हें मैं पहचानता नहीं था। बहरहाल आपकी इनायत सभी पर रही और जिसको लोगों ने महसूस किया। बाद में मस्जिद के कोई साहब आकर कुछ पढ़ने लगे, जिसकी वजह से ध्यान में

खलल पड़ गया। हम सब लोग अनमोल के घर वापस आ गये। अनिल बाजपेयी व उनके दोनों भाई अपने घर चले गये। डा0 दास, उनकी पत्नी, श्री महेन्द्र लाल दास, तथा मीना वहॉ से स्टेशन पर चले गये और हम लोग भोजन के उपरान्त दोनो गाड़ियों से जयपुर के लिए रवाना हो गये और करीब रात के 9 बजे जयपुर पहुॅचे। रास्ते भर आप दोनों बुजुर्गो के फैज का असर बराबर कायम रहा। जयपुर में हम लोगों के रूकने का इन्तजाम श्री ओ0पी0 कौशिक जी ने एक गेस्ट हाउस में किया था। जहॉ हर प्रकार की सुविधा थी और इन्तजाम बहुत सुंदर था। 3 मार्च की सुबह हम सभी लोग तथा गाजियाबाद, पटना, बम्बई, गोरखपुर के सभी सतसंगी प्रेमी भाई बहन एक चार्टर्ड बस तथा दो गाड़ियों से पहले श्री ठाकुर राम सिंह जी की समाधि पर गये और एक घंटा रूके। सभी को वहॉ पर बड़ी शान्ति का अनुभव हुआ और बहुत अच्छा लगा। उसके पश्चात हम लोग अजमेर शरीफ की दरगाह दोपहर के करीब 01 बजे पहुॅचे। मोहर्रम का असर था, बहुत भीड़ थी। जगह–जगह लोग सचेत कर रहे थे कि जेबकतरों से सावधान रहे। उसी हालत में हम सब लोगों ने ख्वाजा साहब की दरगाह में सलाम पेश किया। गो कि खड़ा होना भी मुश्किल था।

वहॉ से पुष्कर तीर्थ में गये और वहॉ ब्रह्मा जी के मंदिर में दर्शन किया तथा कौशिक जी द्वारा पूड़ी सब्जी का

इन्तजाम था। खाना खाकर करीब 8—8:30 बजे रात को कौशिक जी के घर पहुँचे। सभी लोग काफी थके हुए थे। परन्तु कौशिक जी के घर की छत पर पूजा हुई। बुजुर्गों की बड़ी दया थी। तबियत बहुत खुश हुई। जिसका सबने अनुभव किया। आगरे के निर्मल जी ने फोन पर बताया कि कौशिक जी के घर की छत पर पूजा में उनको विशेष अनुभव रहा। जिसका सबने अनुभव किया। तारीख 04—03—2004 को पंडाल लगाकर घर के सामने कम्यूनिटी सेन्टर में भण्डारे का कार्यक्रम रहा, जिसमें परमपूज्य डा0 चतुर्भुज सहाय जी के लोग भी आये और प्रेम से शिरकत की। उन्हीं के एक प्रेमी भाई तथा अलवर के यादव जी गेस्ट हाउस में चार किलोमीटर दूर से सुबह—सुबह चाय लाकर बड़ी सेवा और प्रेम का नमूना पेश किया। 04—03—2004 तथा 05—03—2004 दोनों ही दिन गो कि सतसंग पहली बार था, परन्तु परमपूज्य चच्चाजी महाराज, परमपूज्य ताऊजी एवं परमपूज्य बाबूजी तथा समय—समय पर परम संत लालाजी की मौजूदगी का भी अनुभव रहा। मेरे पुत्र अनमोल ने भी उसका बखूबी अनुभव किया। गेस्ट हाउस में 03—03—2004 की रात को ख्वाब देखा कि हजरत ख्वाजा मौइनउद्दीन चिश्ती तशरीफ लाए हैं। आपने मुझे उठाया और फरमाया कि तुम लोगों को भीड़—भाड़ की वजह से अच्छी तरह से दर्शन नहीं हो पाये हैं। इसीलिए मैं पूरी दरगाह के साथ आया हूँ,

जिससे तुम लोग अच्छी तरह दर्शन कर लो। मैं देखता हूँ कि पूरी दरगाह गेस्ट हाउस में रखी है और सभी लोग उसके दर्शन कर रहे हैं। श्री जे0पी0 बाजपेयी जो कि जयपुर नहीं पहुँचे थे, उनको भी देखा कि वो मजार के दर्शन कर रहे हैं। उनकी मौजूदगी एक बार सतसंग में भी महसूस हुई। यह भी देखा कि अजमेर शरीफ में जहॉ मजार था, वहॉ 15–20 फीट नीचे गड्ढा था और मजार नहीं थी। यह हालत रात भर देखते रहे। सुबह देखा कि वही मजार गेस्ट हाउस से उठकर फिर वहीं चली गयी। रात भर ऐसा सुहावना मंजर था, जिसको लिखना और बयान करना नामुमकिन सा है।

दिनांक 05–03–2004 को जयपुर सतसंग का कार्यक्रम खत्म हुआ। सभी लोग अपने–अपने घर चले गये। हम लोग भी दिल्ली वापस अनमोल के घर आ गये।

दिनांक 06–03–2004 की दोपहर को करीब 3 बजे दिल्ली से गाजियाबाद आये और रात में मैं और मेरी पत्नी तथा छोटा भाई बब्बू, नन्हू के घर गये तथा पुरानी चीजों को भूलकर सब पुरानी कड़वाहट छोड़कर नये प्रेम के वातावरण के लिए बातचीत की। उनका भी Response ईश्वर की दया से बहुत अच्छा रहा।

07–03–2004 को होली थी। सबसे मिलकर होली खेली। तबियत काफी शान्त थी। उसी दिन समाधि पर पूजा थी। काफी भाई आये थे। वहॉ पर भी बहुत अच्छा रहा। पूज्य

बाबूजी की बड़ी दया रही और फिर उसी प्रेम और सौहार्द के वातावरण में हम लोग रात को अनमोल के घर वापस आ गये और दूसरे दिन लखनऊ मेल से चलकर वापस लखनऊ आ गये।

पूरा हफ्ता बुजुर्गों की दया और फैज से मालामाल रहा। यह बड़े ही बरकत का समय था।

(23) दिनांक 24–04–2005

हम लोग 24–04–2005 को सुबह (दिन रविवार) 6:30 बजे बस से नसीराबाद के लिए रवाना हुए, जिसमें कुल मिलाकर 50 लोग, लखनऊ–बाराबंकी के थे। इससे पहले इतवार को सबको बता दिया गया था कि हजरत ख्वाजा बुल हसन साहब के लिए 11 बार ओम शान्ति का जाप सब लोग कर लें। हम लोग करीब 9:30 बजे नसीराबाद थाने के पास मजार पर पहुॅचे, जो कि थाने के पीछे बाग में स्थित है। देव शरण तथा जयप्रकाश ने पहले पहुॅच कर मजार के पास सफाई–पुताई करा दी थी तथा टैन्ट व गद्दे का अच्छा इन्तजाम कर दिया था। सभी भाइयों ने श्रद्धा से फूल चढ़ाये थे और Ladies ने बाहर से फूल चढ़ाये। वहॉ पर गॉव के मास्टर अब्दुल शकुर तथा एक स्त्री जो इस गॉव की थी, जो नौबस्ता कानपुर में ब्याही गयी थी, वह भी वहॉ थी। मौसम ने भी साथ दिया था, ज्यादा गर्मी नहीं थी। हम लोग मजार पर करीब दो घन्टे रहे। आपकी रहमत तथा फैज का सभी

भाइयों ने अनुभव किया। परमपूज्य चाचाजी महाराज की दया बाग के अन्दर घुसते ही महसूस हुई। मजार पर परमपूज्य चाचाजी महाराज, पूज्य ताऊजी एवं पूज्य बाबूजी की मौजूदगी उन बुजुर्ग के साथ स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी। मेरा अपना ख्याल है कि वहॉ आपके साथ आपके बेटे नुरूलहसन साहब की भी मजार होगी, क्योंकि बार–बार एक सूरत अलग दिखाई पड़ रही थी। सभी भाइयों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि उनके फैज का असर सभी ने महसूस किया। यहॉ तक कि श्री नागेन्द्र जी, जो कि स्पेन में थे, उन्होंने उनके फैज को हूबहू महसूस किया। उनकी पत्नी रमा हम लागों के साथ गई थी।

वहॉ से चाय नाश्ता करने के बाद हम लोग राई के पुरवा गांव में शुक्ला जी के घर पहॅुचें। वहॉ पर सतसंग हुआ और परमपूज्य बाबूजी की असीम दया थी। गॉव के भी बहुत लोग थे। खाना खाने के बाद थोड़ी देर के लिए जय प्रकाश के घर गये और वहॉ से रात को 9 बजे वापस आ गये। उनके फैज का असर तीन दिन तक बना रहा। यह उनकी दया है।

(24) “Sunday”दिनांक 21–08–2005

हर इतवार की तरह 21–08–2005 को भी आश्रम में सतसंग हुआ और बुजुर्गो की बड़ी दया बरस रही थी। शाम को अनिल शुक्ला ने फोन करके बताया कि “आज साहब सतसंग के वक्त मैंने यह देखा कि आपके सामने सफेद

कपड़े में लपेट कर एक Dead Body रख दी गयी है। मैंने घबराकर ऑख खोल ली और हाल से बाहर जाकर घूमने लगा।" लखीमपुर खीरी में 27, 28 अगस्त का सतसंग fix हुआ था, जिसकी सूचना सभी भाइयों को दे दी गई थी और सबसे कह दिया गया था कि जिसको चलना हो वह अपने–अपने नाम लिखा दे या बता दे। सिद्धनाथ गुप्ता जी ने मुझसे कहा कि वह भी चलेंगे, उन्हें भूल न जाया जाए। 10 तारीख की शाम को श्री गुप्ता जी की तबियत खराब हुई और वह नीरा नर्सिंग होम में भर्ती हो गये। बुद्ध की सुबह उनका स्वर्गवास हो गया। मैं उन्हें तीन दिन देखने गया वह बराबर होश में थे।

उनकी पत्नी ने बताया कि वह ऑखें बंद करके प्रार्थना कर रही थी तो दो बार उन्होंने स्पष्ट देखा कि परमपूज्य ताऊजी एवं परमपूज्य बाबूजी गुप्ता जी के पास जाकर खड़े हो जाते हैं।

बुजुर्गो की कितनी दया रहती है और वे कितना ध्यान रखते हैं अपने भक्तों का कि वक्त आखिर पहुॅच ही जाते हैं। जब कि गुप्ता जी दीक्षित भी नहीं थे और मूर्ति पूजा पर ज्यादा विश्वास रखते थे। परन्तु सतसंग में बहुत आते रहते थे। उसके बाद उनकी पत्नी ने देखा कि किसी ने आकर उन्हें सोने के कड़े दिये पर उनको वह पहचानती नहीं और गुप्ता जी की Death हो गयी।

(25) दिनांक 27 / 28–08–2005

लखीमपुर खीरी का सतसंग 27, 28 अगस्त को हुआ। हम लोग यहॉ से 18 लोग गये थे। वहॉ के Local लोग भी थे और कुछ नए लोग भी थे, कुछ और Sect के भी। बुजुर्गो की बड़ी दया रही। विशेषकर परमपूज्य ताऊजी एव पूज्यपूज्य बाबूजी की बड़ी दया रही।

(26) दिनांक 08–09–2005

आज शाम को घर पर सतसंग था। उसमें बाजपेयी जी, बाबूलाल, सेंगर साहब, शुक्ला जी, यादव जी, अमीनाबाद वाले शुक्ला जी, दीपू, तिवारी जी, कमलेश, उनका पुत्र गौरव, मेरी पत्नी थे। पूजा करने के कुछ ही देर बाद अचानक फतेहगढ़ वाले Dr. Sahab और उनकी Wife की तरफ बड़ी तीव्रता से तवज्जोह की धार जा रही थी। जबकि जब पूजा शुरू हुई तब वह नहीं थे और बराबर तवज्जोह की धार उनकी तरफ जा रही थी। दो बार ऐसा महसूस हुआ कि श्री त्रिभुवन सिंह जी आकर बैठ गये। वह भी उस दिन नहीं आ पाये थे। जिधर दीपू बैठे थे, उधर ही मैंने देखा कि अतुल आ कर बैठ गये हैं और परमपूज्य बाबूजी अतुल की तरफ बहुत मुखातिब हैं और वह तवज्जोह दे रहे हैं। गोकि वह भी वहॉ मौजूद नहीं थे। सतसंग समाप्त होने पर ऑख खुली तो देखा वाकई फतेहगढ़ वाले डा0 साहब उनकी Wife बैठी थी, खुशी हुई। बुजुर्गो की दया किस पर और कब हो जाए, वही जानते

है। डा0 श्रीवास्तव ने बताया कि पिछले भण्डारे के बाद से मुझे परमपूज्य बाबूजी की मौजूदगी का अहसास हर वक्त होता रहता है। गरूदेव सबका भला करे।

(27) सोमवार, दिनांक 28–11–2005

आज दिनांक 28 नवम्बर, 2005 को हजरत जान जाना साहब की मजार पर जो कि तुर्कमान गेट पुरानी दिल्ली के पास है। मैं, मेरी पत्नी, अनमोल, उनकी पत्नी एवं शिव प्रसाद शुक्ला जी सुबह गये। वहॉ पर बहुत शान्ति थी और आपकी बड़ी दया रही। जिस वक्त हम वहॉ पहुॅचे, वहॉ पर चार मजार हैं, यह नहीं मालूम था कि वहॉ पर उनकी कौन सी मजार है। परन्तु जैसे ही दुआ के लिए हाथ उठाए आपने दया करके अपनी मजार पर दर्शन दिए। बाद में वहॉ मौजूदा गद्दी नशीन फारूकी साहब से पूछने पर वह बिल्कुल ठीक निकला। मैं उनकी रहमत का शुक्रगुजार हूॅ। दो किताबें उन्होने बतौर नजराना दी और एक किताब जिसकी कीमत रू0 180–थी, खरीदी। प्रसाद चढ़ाया और डेढ़ दो घंटे रूके।

(28) मंगलवार, दिनांक 03–01–2006

आज दिनांक 03–01–2006 दिन मंगलवार हम लोग बस द्वारा सुबह 8:30 बजे बहराईच को हजरत नईमुल्ला साहब की मजार के दर्शन के लिए रवाना हुए। खानदान नक्शबंदिया के उत्तर प्रदेश में यह सबसे पहले बुजुर्ग हुए हैं। हम लोग करीब 40 लोग थे, जिसमें ज्यादातर लखनऊ और

बाराबंकी के सतसंगी भाई थे। गुड़गांव के ब्रजेश जी अपने परिवार के साथ थे। मेरा छोटा बेटा अनमोल, उसकी बहू आशु, अजय के दोनो बच्चे, अंकुर, अंकित भी हम लोगों के साथ थे, बहराईच हम लोग 12 बजे पहुॅचे। वहॉ पर कृष्ण बिहारी मणि त्रिपाठी के दामाद–बेटी के यहॉ चाय नाश्ता लेकर कुछ गोरखपुर के सतसंगी भाइयों के साथ उनकी मजार पर गये और करीब एक घन्टा बड़ी शान्ति का वातावरण था और उनकी दया का अनुभव सबने किया। वहॉ से खाना खाकर वापस आये। इस प्रकार मैंने लखनऊ और बाराबंकी के समस्त भाइयों को अपने सिलसिले के उत्तर प्रदेश के समस्त बुजुर्गो के जिनके नाम शजरे में है, सबके दर्शन करा दिए।

(29) बुद्धवार, दिनांक 04–01–2006

आज हम लोग करीब 1 बजे परमपूज्य बाबू बृजमोहन लालजी की समाधि पर मैं और मेरी पत्नी, अजय, बीना (अजय की पत्नी), अंकुर, अंकित (अजय के बेटे), अनमोल मेरा बेटा, अतुल (मेरा बड़ा बेटा), उसकी पत्नी ज्योति सब समाधि को गये। वहॉ उनकी काफी दया रही। परन्तु शोरगुल की वजह से हम लोग ज्यादा देर तक वहॉ नहीं रूके या तो बहराइच की समाधि का यह असर हुआ कि 5 तारीख की रात से यह ख्याल बराबर बना रहा कि इनके दोनों बच्चों अंकुर, अंकित को दीक्षा दे दी जाये और 7 जनवरी की सुबह उन दोनों को दीक्षा दे दी। ईश्वर एवं बुजुर्ग दया करें।

(30) दिनांक 01—02—2006

इस वर्ष दिलदार नगर का भण्डारा 1, 2, 3 फरवरी को था। तीनों ही दिन बुजुर्गों की दया रही। हर सिटिंग काफी अच्छी रही। यही वजह थी कि वहाँ कुछ लोगों को दीक्षा दी। 4, 5, 6—2006 पटना में हर सिटिंग में बुजुर्गों की बड़ी कृपा रही। खासकर पूज्य ताऊजी महाराज और परमपूज्य लालाजी महाराज की। परमपूज्य बाबूजी को बहुत खुश देखा। नए हाल में Pillar के पास कभी परमपूज्य लालाजी महाराज जी के साथ पूज्य बाबूजी को देखा, कभी परमपूज्य चाचाजी महाराज के साथ। यहाँ पर भी कुछ लोगों को दीक्षा दी। 6, 7, 8—2006 बनारस में हर सिटिंग बहुत अच्छी रही। यहाँ पर परमपूज्य लालाजी महाराज एवं पूज्य ताऊ जी महाराज की बड़ी Dominence थी।

पूरे आठ दिन के ट्रिप में इतने सालों में बुजुर्गों की इतनी दया और कृपा कभी नहीं रहीं। उनकी दया से रास्ते का सफर भी बड़ा सुखमय रहा और हर जगह सभी लोग प्रेम से भरे थे। सबसे पूछने पर Confirmation भी हुआ। सभी जगह पूज्य भाई साहब के लिए 09—02—2006 को जो उनका निर्वाण दिवस था। शान्ति का जाप हुआ। सब जगह सामूहिक भी हुआ और लोगों ने व्यक्तिगत भी किया।

(31) "Ghaziabad" गाजियाबाद,
दिनांक 04—07—2006

लखनऊ के सतीश बाबू (Shri K.B. Saxena) से

पूज्य सरदार जी भाई साहब ने कई मर्तबा कहा कि दिन्ना बाबू से कह देना मुझसे अकेले में मिल लें। जब सतीश बाबू उनके जन्म दिन पर गये थे तब उन्होने कहा कि दिन्ना बाबू से कह देना जल्दी मिल लें, ऐसा न हो समय निकल जाये। जब इस बार उनके जन्मदिन पर टेलीफोन से बधाई दी तब भी उन्होंने बड़े प्रेम से कहा कि मैं तो आपको ही याद कर रहा था। समय निकाल कर जल्दी से जल्दी अकेले मिलो। मैंने उत्तर दिया कि दशहरे के भण्डारे पर अवश्य मिलूँगा। आपने कहा बड़ी देर हो जायेगी। मैंने कहा कि 1 तारीख को आपसे मिलूँगा। 1 जुलाई, दिन शनिवार को शाम पांच बजे मैं, मेरी पत्नी, बब्बू, पंकज एवं बेबी आपसे मिलने के लिये आपके निवास स्थान पर गये। मैं और मेरी पत्नी ऊपर चले गये आप बहुत खुश हुए और आपने यह चार बातें मुझसे कहीं –

(1) आपसे मिलने पर जीवन के बीते हुए अच्छे एवं सुनहरे दिन याद आ जाते हैं और मन को बहुत प्रसन्नता होती है।

(2) मेरी आखिरत के लिए हमेशा दुआ करते रहिए इसका मैं बहुत आभारी रहूँगा।

(3) आप बड़े भाग्यशाली हैं। आपने अपने जीवन में अपने सब कार्य पूरे कर लिए। गुरूदेव की बड़ी कृपा है।

(4) आपमें बहुत कम उम्र में बुजुर्गी आ गयी।

मेरा हाथ पकड़कर बहुत देर तक मेरी तरफ टक टक देखते रहे। उसी समय श्री शक्ति जी आ गये और वह अपने

साथ बब्बू, पंकज, बेबी को ऊपर ले आये । आपने चाय पिलाई और हम लोग उनका आशीर्वाद लेकर घर वापस आ गये। इस बार भी सतीश बाबू से मैंने गुरू पूर्णिमा के अवसर पर प्रणाम कहलाया तो सतीश बाबू ने बताया कि वह काफी देर तक उनका हाथ पकड़े रहे और फिर मिलने के लिए कहने लगे।

(32) दिनांक 18—06—2010

"बलिया, बक्सर तथा दिलदार नगर भण्डारे" के बाद सब जिस्म टूट गया था और काफी कमजोरी लग रही थी। किसी काम में हिम्मत नहीं हो रही थी। इस वर्ष दिलदार नगर में काफी परेशानी रही। मगर आज सुबह 7 AM से 10 Am पर पूजा में बहुत तबियत लगी और बड़ी कृपा रही। बाद में शैलेश बाबू के फोन से मालूम हुआ कि आज ही सुबह गोपाल भैया की डेथ हो गयी है। यह सब परमपूज्य ताऊजी महाराज की दया व कृपा का असर था, जिसे मैंने भी महसूस किया। इससे पता चलता है कि उन्हें परमपूज्य ताऊजी की कृपा व आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

(33) दिनांक 23—11—2012

अरविन्द और रेनू के गृह प्रवेश में पहले सतसंग हुआ। सतसंग पहली बार हुआ था। नई जगह पर बहुत अच्छी हालत रही। सभी बुजुर्गो की दया व कृपा रही। सभी का मन

पूजा में लगा। चारो तरफ एक शान्ति का वातावरण था और चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश था। इसके पहले भूमि पूजन में थोड़ी देर के लिए मैं गया था और प्रार्थना की थी कि यह घर सकुशल पूरा हो जाए और दया और कृपा का पात्र बने। परन्तु इतना अच्छा सतसंग रहेगा। इसकी भी आशा नहीं की थी।

(34) दिनांक 28.03.2013

परमपूज्य मौलवी अहमद अली साहब की समाधि

परम पूज्य मौ0 अहमद अली साहब की समाधि पर जगह कम होने के कारण हम सब लोग एक–एक करके प्रणाम करके करीब आधे घन्टे खड़े रहे। इसी बीच शजरा और दरूद शरीफ का जाप करते रहे। बीच–बीच में वहॉ के देख–रेख करने वालों का Disturbance भी था। उसके बाद बैठकर पूजा की। मेरे एक तरफ अंकुर और एक तरफ बब्बू (ज्ञानेन्द्र) थे। मेरे बड़े पुत्र अतुल कुमार जो पहले मेरे बगल में खड़े थे। मैं चाहता था कि मेरे बगल में बैठे। परन्तु वो उसी तरफ आगे चले गये। Fraction of Second के लिए उन पर झुंझलाहट आयी। ध्यान में काफी अच्छा लगा, बड़ी शान्ति का अनुभव हुआ। अनमोल की मौजूदगी का अहसास यहॉ भी बराबर बना रहा। मजार के सिरहाने तरफ किसी के बैठने का अहसास हुआ, परन्तु शक्ल नहीं दिखाई पड़ी। वहॉ से नूर रोशनी सी चली जो आगे चलकर दो भागों में बंट गयी, जिसका Major

Portion मेरे हृदय में चला गया। वही नूर की किरण के अनमोल और अंकुर के हृदय में चला गया। पूज्य चाचाजी महाराज की तरह यहॉ भी अजय, बीना के लिए प्रार्थना की। परमपूज्य ताऊ जी महाराज एवं बाबूजी महाराज की Presence बराबर बनी रही। वहॉ से चलने तक मन खुशी और दया से भरा था।

(35) परमपूज्य मौलवी फजल अहमद साहब की समाधि

परमपूज्य मौलवी फजल अहमद साहब की समाधि पर सायं 7 बजे हम लोग सबके साथ आपकी समाधि पर पहुॅचे। समाधि में घुसते ही एक अजब किस्म की feeling हुई और समाधि वाला हिस्सा प्रकाश से भरा हुआ था। इसके पहले इतना प्रकाश नूर कभी नहीं हुआ था। मैंने आपकी मजार पर परमपूज्य ताऊजी एवं परमपूज्य बाबूजी का वास्ता देकर प्रणाम किया। एक अजीब सा समा बंध गया। एक अजीब खिंचाव महसूस किया। समाधि से सर उठाने की इच्छा नहीं हो रही थी। बड़ा गहरा ध्यान लगा और हर जगह परमपूज्य ताऊजी महाराज की Presence दिखाई दी। वहॉ का प्रकाश सभी मौजूद लोगों पर पड़ रहा था। अनमोल की मौजूदगी का यहॉ भी अहसास बराबर बना रहा और उनकी तंदुरस्ती के लिए प्रार्थना भी की। एक बार चलते समय जब प्रणाम किया

तो ऐसा लगा कि जैसे आप स्वयं मजार पर बैठे हुए हैं और बड़े खुश होकर सबको आशीर्वाद दे रहे हैं।

(36) 28 मार्च 2013 रात्रि

वहॉ से चलकर हम लोग करीब पौने दस बजे समाधि फतेहगढ़ पहॅुचे। वहॉ प्रिय विनय हम लोगों का इन्तजार कर रहे थे। समाधि पर पहॅुचते ही ऐसा लगा कि परम पूज्य लालाजी महाराज साहब और परमपूज्य बाबूजी साहब हम लोगों का इन्तजार कर रहे थे। पूजा में बहुत तबियत लगी। चारो तरफ प्रकाश ही प्रकाश था। केवल दो बार यह ख्याल आया कि प्रिय विनय को हम लोगों की वजह से काफी खाने का इंतजार करना पड़ेगा। इस ख्याल से पूजा बंद की । बिल्कुल थकावट का नाम निशान नहीं था।

(37) 29—मार्च 2013 रात्रि

दोनो वक्त पूजा बहुत अच्छी हुई। हर वक्त पंडाल प्रकाश से भरा हुआ था। परमपूज्य ताऊजी महाराज की बड़ी Dominance थी। शाम की पूजा में सामने बीच की तरफ से एक ऐसी खुशबू जिसे हम बुजुर्गो का फैज कहते हैं पूरे पंडाल में छा गई। इससे पहले इसी तरह की खुशबू का एहसास मैंने केवल 8—10 बार ही किया है। कुछ मर्तबे गाजियाबाद के भण्डारे में, कुछ बार अपने घर में, अकस्मात से हुई थी। यह खुशबू पूरे समय रही। समाधि पर मैंने अजय, बीना और अंकित के लिए प्रार्थना की थी।

(38) 30–03–2013 शनिवार

सुबह पहले परमपूज्य लालाजी महाराज की समाधि पर बैठे। मन बड़ा शान्त था। तभी विनय ने पंडाल में आने का Announcement किया, फिर पंडाल में चले गये। पूजा में बैठते ही बड़ी अच्छी तबियत लगी और ध्यान बहुत गहरा लगा। मन बहुत शान्त रहा।

पीछे की तरफ ऐसा लग रहा था कि बहुत से बुजुर्ग लाईन में बैठे हैं। बीच–बीच में ऐसा लगा कि पूरा पंडाल खाली हो गया और प्रकाश से भर गया। परमपूज्य बाबूजी महाराज की Presence Dominance थी। वैसे ही जैसे 29 तारीख को परमपूज्य ताऊजी महाराज की थी। 30 तारीख को मेरे बॉये ओर से वही खुशबू उसी तरह की आकर सारे पंडाल में फैल गई और पूजा समाप्ति तक बहुत Dominance में बनी रही। पंडाल में ही नहीं समाधि और बाहर वह खुशबू Prevail कर रही थी। कई बार ऐसा लगा कि पंडाल और समाधि खाली है, प्रकाश से भरा हुआ है और लोग बाहर सड़क के टीले तक बैठे हुये हैं। बहुत सारे लोग हैं और प्रकाश टीले की तरफ चला गया। जैसे टीले का प्रकाश मार्ग बन गया हो। 30 की शाम को भी बराबर वैसे ही बना रहा। मन बिल्कुल शान्त और पूजा में बहुत मन लगा। 30 तारीख को दोपहर को करीब–करीब 2 बजे प्रिय दिनेश जी के घर उनसे मिलने गये। उन दोनों को मय बेटे के साथ खुश

देख कर बड़ी खुशी हुई। वातावरण खुशगवार था। बराबर बुजुर्गों की चर्चा होती रही। सभी लोग उनसे एक–एक करके मिलने गये और उन्होने भी सबका खूब Welcome किया। जब लालाजी महाराज के घर पर हाथ जोड़ने गये तो बड़ी शान्ति और आशीर्वाद का अनुभव किया।

30 तारीख की शाम को 4:30 बजे के करीब परमपूज्य पोस्ट मास्टर साहब की समाधि पर गये। वहॉ कुछ लोग पहले से बैठे थे। पूजा में तबियत खूब लगी। उसके बाद पंडाल में आ गये।

(39) 31 मार्च, 2013

31 तारीख को पूजा में बहुत तबियत लगी। मन बहुत शान्त रहा। भीतर से बहुत खुशी थी। आशीर्वाद का अनुभव वहॉ रहा। विशेषकर ओम शान्ति के जाप में। उस खुशबू का अहसास फिर हुआ, परन्तु ठहराव कम था। बिदाई समारोह में पूजा की ऊॅची स्थिति थी, मन बहुत शान्त था। परमपूज्य लालाजी महाराज एवं पूज्य बाबूजी महाराज भी बहुत खुश थे। जब मैं बोल रहा था तो परमपूज्य लालाजी महाराज के हृदय से एक बहुत तेज रोशनी निकली, वो दो हिस्सों में बंटकर एक मेरे हृदय में और एक प्रिय विनय के हृदय में चली गई।

मेरे जीवन काल में यह फतेहगढ़ का भण्डारा हर दृष्टिकोण से मेरे लिए बहुत अच्छा था, जिसमें पूजा की अच्छी

हालत, मन की परम शान्ति के अतिरिक्त चार चीजों की पुष्टि हुई, जो बहुत आनन्ददायक थी।

परमपूज्य बाबूजी ने अपने पत्र में फतेहगढ़ के भण्डारों की हालत में स्वयं अपने अनुभव में लिखा है कि "परमपूज्य लालाजी महाराज साहब ने बड़े खुश होकर सेठ के गले में फूल की माला डाल दी। मगर दिन्नू से बहुत खुश थे और सभी लोगों के साथ दिन्नू पर फूल फेंकते हुए Gate तक गये। 30–03–2013 को भी यही स्थिति थी। Gate से बराबर समाधि तक मेरे सर परलोग फूल फेकते चले गये। उसमें परमपूज्य लालजी, पूज्य पूज्य ताऊजी, परमपूज्य बाबूजी की उपस्थिति थी।" यह चिट्ठी फतेहगढ़ भण्डारे के अनुभव अनमोल रत्न नाम पुस्तक में छपी है।

परमपूज्य बाबूजी ने बताया कि मेरे सभी लोगों को परमपूज्य लालाजी महाराज ने कुबूल कर लिया। मुझे ऐसा लगा कि मेरी जिन्दगी का लक्ष्य पूरा हो गया और वायेस खुशी था, जिसमें उन्होंने अपने सब घर के लोगों, सतसंगी भाइयों को, रिश्तेदारों को और जो लोग उनके साथ Service में रहे और जिनका ख्याल आया और उन्होने कुबूल भी कर लिया। यह भी अनमोल रत्न में छपा है। भण्डारा समाप्त हुआ और मैं बाहर कुर्सी पर बैठा ही था कि एक शख्स जिनकी उम्र 28–30 वर्ष की थी, ने आकर मेरे पैर छुए। पूँछने पर पता चला कि वो नबीगंज के रहने वाले हैं, जहाॅ पूज्य

बाबूजी की ससुराल थी। उन्होने जब अपना परिचय दिया तो मामा के पोते थे तब ख्याल आया कि पूज्य बाबूजी ने कहा था कि सब रिश्तेदार को भी सौंप दिया और उन्होने कबूल भी कर लिया, की पुष्टि हुई।

31st को जो प्रकाश समाधि में बैठने पर मेरे और प्रिय विनय के हृदय में गया, उससे वर्षो पहले पूज्य बाबूजी की भविष्यवाणी सच हुई। उन्होने कहा था कि बेटे विनय का बहुत ख्याल रखना व आगे चलकर परमपूज्य लालाजी महाराज के काम में सबके बहुत सहायक होंगे, शत प्रतिशत सत्य हो रही है। मेरे पूज्य गुरूदेव ने जब प्रिय अखिलेश को दीक्षा दी थी, तब कहा था कि "मैंने और श्याम लाल ने जिस घर से यह दौलत प्राप्त की है, उसी घर को वापस कर दिया। यह काम हम तीनों के द्वारा हो सकेगा मेरे, श्याम लाल और तुम्हारे।" जब पूज्य ताऊजी ने अखिलेश को दीक्षा दी तो मैंने कहा था कि ये तो शरीर से हर तरह से लाचार हैं। ये क्या काम करेंगे, उन्होंने कहा काम तो परमपूज्य लालाजी की हस्ती करेगी और उनसे कहा कि श्याम लाल चाचाजी से आशीर्वाद लेकर जाना। वह मिलते हुए गये। 1973 में जब अखिलेश जी ने जन्म शताब्दी के सारे निमंत्रण परमपूज्य बाबूजी के उत्साहित करने पर उनकी ही राय से सब पुराने सतसंगी भाइयों को केवल दस्तखत करके भेजा था और एक क्रान्ति सी आ गई और गुरूदेव के वचनों का ज्वलंत दृश्य

ऑखो देखा कि वो तो चारपाई पर पड़े थे, हिलडुल नही सकते थे, परन्तु परमपूज्य लालाजी महाराज की हस्ती काम कर रही थी। समय के अन्तराल में सतसंग बढ़ता गया और सुसज्जित होता गया। परमपूज्य लालाजी महाराज के पोते प्रिय अखिलेश जी की दीक्षा पूज्य ताऊजी डा0 श्री कृष्ण लाल तथा पूज्य बाबूजी द्वारा प्रिय दिनेश जी एवं प्रिय विनय की दीक्षा शत प्रतिशत चरितार्थ करती है। जिस घर से यह विद्या प्राप्त की थी, उसी घर को वापस की। अब उनका धर्म है कि उन्नति करके उसे मेन्टेन करें। इस बार चि0 विनय के हृदय में उस नूरी प्रकाश का जाना बड़ी बरकत वाला है और ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करें और बुजुर्गो से फैजयाब हो। इस तरह मेरे गुरूदेव की बात कि यह कार्य मेरे, तुम्हारे और श्याम लाल द्वारा ही होगा, इस भण्डारे में सत्य हो गयी। मैं पूरी कोशिश करूँगा कि उनकी बात जो सत्य रही है, उस दिशा में प्रिय विनय इस मिशन में पूरे कामयाब हो। ईश्वर हिम्मत दे और उनकी मदद करें। ईश्वर तेरी मर्जी पूरी हो।

मेरे पुत्र अनमोल कुमार का प्रोग्राम की व्यस्तता के कारण भण्डारे में न आने से मन थोड़ा सा खिन्न था। मैंने उनके लिये हर जगह प्रार्थना की थी और बुजुर्गो ने कुबूल भी की। वह नौकरी से Resign करके वहॉ पहुॅच गये, बड़ी खुशी हुई कि उन्होने दीन को वरीयता दी और भण्डारे में शामिल हो

गये। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि उनको दीन और दुनिया दोनों में मालामाल करे। मेरा आशीर्वाद उनके साथ है।

इस बार लोगों ने मेरी Request को पूरी तरह कुबूल किया और दुनिया की कोई बात नहीं की, जिसकी मुझे बड़ी खुशी है और बुजुर्गों से यही प्रार्थना है कि आगे आने वाले भण्डारे में ऐसा ही बना रहे।

जैसा कि परमपूज्य बाबूजी ने अपने भण्डारे 1984 में कहा था कि संतमत साधना भाग–1 व भाग–2

और परमपूज्य ताऊजी की किताब घटमार्ग अगर जोड़ दी जाये तो बहुत सुंदर पुस्तक के रूप में तैयार हो जायेगी, जिसे भाइयों को उपलब्ध करा दी गयी। 1984 में उनकी कही हुई बात भी पूरी हुई। इसका मुझें बहुत संतोष है।

(40) दिनांक 11–02–2013

इस वर्ष यह तय किया गया कि साल में जिन महीनों में 5 शनिवार होंगे, उस माह में चौथे शनिवार को ईश्वर चन्द्र श्रीवास्तव के यहॉ सतसंग होगा, जिसको उन्होने सहर्ष स्वीकार किया। 2013 में 5 शनिवार 5 बार हैं। मेरे साले अजय कुमार जो रिवर बैंक कालोनी में रहते हैं और 11 तारीख को उनके यहॉ सतसंग होता है। परन्तु उनके बेंगलौर जाने के कारण उनकी अनुपस्थिति के बावजूद 11–02–2013 को उन्हीं के घर में सतसंग हुआ। सतसंग बहुत अच्छा हुआ, जिसकी उम्मीद नहीं थी। परमपूज्य बाबूजी

का बहुत जबरदस्त फैज था और बहुत से बुजुर्गो की Presence थी। उनके समधी जो कि सतसंगी भी नहीं है, बहुत प्रभावित थे। उनके जीवन में यह पहला सतसंग था। सभी सतसंगी भाइयों ने इसे महसूस किया।

(41) दिनांक 19—05—2013

आज सुबह देवस्थली आश्रम में रविवार को सतसंग करते समय करीब 9:30 बजे सुबह बिल्कुल साफ खुली ऑखों से मैंने देखा, मेरे शरीर के बाहर मेरे सामने मेरी ऑखों के करीब 6 इंच की दूरी पर बिल्कुल सफेद सितारे की तरह चमक वाली मेरी आत्मा थी। मुझे स्वयं यह लगा कि मेरी Death हो गयी है, पर यह लगा कि मेरी Body गिर क्यों नहीं रही है। एक बार fraction of second को यह ख्याल आया कि अनमोल और आशा न तो पकड़ रहे हैं न लिटा रहे हैं। इसमें भी पहला ख्याल अनमोल का आया। सभी सतसंगियों के बीच से एक मीटर चौड़ी लाल रंग की कारपेट मेरे पास सामने दरवाजे तक बिछी है और एक लाईन से बहुत से लोग आ रहे हैं, जिसमें सबसे आगे परमपूज्य बाबूजी महाराज साहब, फिर पूज्य ताऊजी महाराज साहब, फिर पूज्य लालाजी महाराज, फिर पूज्य चच्चाजी महाराज साहब अन्य दो लोग जिसमें एक मुझे स्वामी राम कृष्ण परमहंस जी तथा दूसरे गुरू नानक देव जी जैसे लगे। हर व्यक्ति बिल्कुल मेरे सामने ही क्रमशः अपनी आत्मा को बाहर निकालता है और मेरी आत्मा को छुला कर

वापस अपनी आत्मा को रख कर उसी रास्ते चला जाता है।

यह दृश्य इतना सुहावना था कि जिसका बयान करना बहुत मुश्किल है। बस यह लग रहा था कि यह देखते ही रहें। एक मरतबा यह ख्याल आया कि मेरी आत्मा शरीर से बाहर निकल चुकी है और मैं मर चुका हूॅ। कहीं गिर न जॉऊ। मेरी गिनती के हिसाब से ये महा पुरूष 42 थे, लेकिन जब समाप्त हुए तो मैंने 42 कहा तो आखिर वालों ने कहा नहीं हम 48 लोग हैं। उसके बाद शरीर में एक हरकत सी हुई, मेरी आत्मा शरीर में घुस गई और मुझे होश भी आ गया और प्रार्थना शुरू कर दिया। तबियत एकान्त चाह रही थी। शरीर में बड़ी स्फूर्ति और Energy लग रही थी। मन बहुत प्रसन्न था। मेरी समझ में जो आया कि यह आत्मा की आत्मा से निस्बत से पूर्णता है। लेकिन कह नहीं सकता कि क्या चीज थी। शायद इसी अवस्था को बुजुर्गो ने आत्मा का आत्मा से मिलन बताया और यही अवस्था है कि जिसे सूफियों में **"फनाफिल शेख, फनाफिल रसूल और फनाफिल अल्लाह"** कहा गया है।

"फना खुद मुझमें हो रहबर,
पलट दे जिन्दगी मेरी।
तेरे ही पैगाम से जाहिर हो,
शाने बंदगी मेरी।।"
यही है जुस्तजू मेरी।

यही है आरजू मेरी।।

(42) 11—04—2013

आज बृहस्पतिवार को घर पर साप्ताहिक सतसंग था। सतसंग में जाकर बैठते ही ऐसा लगा कि मेरी जगह परमपूज्य ताऊजी महाराज ने ले रखी है, शक्ल सूरत सब। मेरे पीछे सेट्टी पर परमपूज्य लालाजी महाराज, परमपूज्य चच्चाजी महाराज और पूज्य बाबूजी महाराज जब तक सतसंग चला, बैठे रहे। पूज्य बाबूजी की Photo की तरफ परमपूज्य लालाजी साहब बीच में, पूज्य चच्चाजी महाराज, पूज्य बाबूजी महाराज साहब, पूज्य ताऊजी की Photo की तरफ बैठे थे। बीच में कई बार ऐसा लगा कि मेरे हृदय से जबरदस्त प्रकाश निकल कर सबके हृदय में Enter हो रहा है। विशेष बात है कि सेंगर साहब एवं उनकी पत्नी नहीं थी, परन्तु उनकी Presence दिखाई पड़ रही थी और वो प्रकाश उनके हृदय में भी गया। यह हालत जब तक सतसंग रहा तब तक चलती रही और बड़ा आनन्द और शान्ति मन की रही। तबियत इस अवस्था को छोड़ने की नहीं हो रही थी। गो कि बुधवार को तबियत उचाट थी, न जाने क्यों जबकि बुधवार को पूजा खाली नियम के लिए की गयी थी।

(43) Saturday दिनांक 13—04—2013

यह ईश्वर चन्द्र जी के यहॉ दूसरा सतसंग था। आज भी पूजा में बहुत तबियत लगी। कोई विचार नहीं था, मन विल्कुल शान्त था। बहुत आनन्द का अनुभव हो रहा था, जबकि दो तीन नये लोग भी थे। परमपूज्य लालाजी, परमपूज्य ताऊजी, परमपूज्य बाबूजी की बराबर Presence थी और सब बड़े खुश नजर आ रहे थे।

कौन आया, कौन गया, मुझे कुछ भी पता नही लगा। ऐसा लगता है कि इस जमीन में किसी न किसी वक्त ईश्वर का नाम जरूर चलेगा।

(44) बाराबंकी 20–04–2013

दिनांक 20–04–2013 दिन शनिवार को सालाना वार्षिक भण्डारा बाराबंकी में था, जिसमें यहॉ के सतसंगी भाई तथा बाराबंकी के कुल 40–50 लोग हो गये थे। पूजा में हालत काफी अच्छी रही। तबियत भी खूब लगी। परमपूज्य बाबूजी की उपस्थिति Dominatnt थी। गो कि अब उस मकान में सतसंग नहीं होता है।

इस फतेहगढ़ भण्डारा के बाद कृपा यह है कि अभी तक वह शरूर कायम है। ध्यान बहुत गहरा लग रहा है जैसा कि और लोग भी बता रहे हैं।

(45) शुक्रवार 24–05–2013

आज सुबह पूजा करते समय, प्रार्थना तथा शजरा पढ़ने के बाद जब मैं ध्यान को बैठा तब मैंने देखा एक गाड़ी जिसे एक Driver चला रहा है, बीच में मैं बैठा हुआ हूँ, पीछे सेठ भाई साहब बैठे हुए हैं। वह गाड़ी सीधे गढ़मुक्तेश्वर के पुल पर जाती है। मुझे बिल्कुल साफ गंगा का पानी दिखाई पड़ता है। गाड़ी रूकती नहीं है। पुल क्रास कर आगे चली जाती है। यह सब अवस्था एक घन्टे रही। उसके बाद ॐ शान्ति, दरूद शरीफ, और गायत्री मंत्र का जाप किया और करीब–करीब चार घन्टे (7 बजे से 11 बज) तक पूजा करता रहा। इससे ठीक 15 दिन पहले बिल्कुल यही सपने में देखा था। रास्ते भर मुझसे और सेठ भाई साहब से कोई भी बात नहीं हुई।

जब डा0 कर्ण साहब की Wife की Death हुई थी। उससे कुछ दिन पहले देखा कि इसी तरह की गाड़ी इसी पुल पर जाती है। उस गाड़ी में अरविन्द बैठे हैं और उसी पुल से उतर कर जहॉ पूज्य बाबूजी का दाह संस्कार हुआ वहीं उनकी Wife की Dead Body वहीं विलीन हो गई। उसके कुछ दिन बाद उनकी Death हो गयी।

4 फरवरी, 2013 में मैंने देखा कि मैं एक जगह जहॉ जाता हूँ, जहॉ सेठ भाई साहब एक छोटे से कमरे में बैठे हैं और चौंक कर पूछते हैं कि तुम कैसे यहॉ आ गये। उस कमरे के आगे एक खुशनुमा गार्डेन है और जगह खुशगवार है। इस बीच कई बार सेठ भाई साहब को देखा। गो कि पहले

कभी–कभी भण्डारे के अवसर पर देखता था। इधर सेठ भाई साहब को बराबर frequently देखना और 19 मई को बुजुर्गो का इस तरह देखना उनकी आत्माओं के दर्शन होना परमपूज्य लालाजी महाराज का यह कथन कि इस वक्त बुजुर्गों की पवित्र आत्मायें मेरे पास रहती हैं और पूज्य पूज्य गुरूदेव की उस कथन की याद दिलाता है कि बुजुर्गो का हर वक्त साथ रहना कहीं कोई इशारा तो नहीं है।

(46) दिनांक 11–11–2013

आज रीवर बैंक कालोनी में सतसंग हुआ। सतसंग के दौरान सैंगर साहब और उनकी पत्नी जो कि आये नहीं थे, उनकी जबर्दस्त Presence मालूम हुई। एक बार सैंगर साहब के खॉसने तक की आवाज सुनाई पड़ी। ईश्वर दया करें। ऐसा कई बार होता है कि जो लोग मौजूद नहीं होते हैं, उनका एहसास बराबर होता है।

(47) शनिवार 16–11–2013

आज त्रिभुवन सिंह जी के यहॉ सतसंग था। गो कि वो दोनों लोग नहीं थे। भण्डारे में फरदहनी गये थे और केवल उनका बेटा आशु था। पूजा में बहुत अच्छी हालत रही। बुजुर्गों का फैज बरस रहा था। हो सकता है फरदहनी भण्डारे का ख्याल रहा हो।

(48) दिनांक 06.06.2015

इधर 2015 के शुरू से ही बराबर यह ख्याल रोज आता रहता था कि लखनऊ के हर सत्संगी के यहाँ साल में एक बार जरूर सत्संग हो और इसी ख्याल के तहत सबसे पहले अजय और शशिबाला (जो कि तिवारी जी के दामाद व लड़की हैं) उनके यहाँ जानकीपुरम् के घर में शनिवार दिनांक 06.06.2015 को सत्संग रखा गया। बुजुर्गों की बहुत दया थी। किसी की आँख नहीं खुल रही थी। इसका जिक्र कई भाइयों ने मुझसे किया। कहने का मतलब यह है कि बुजुर्गों की व ईश्वर की दया कब और किस पर हो जाये, कोई नहीं जानता। हमें और आपको उनके कार्य को बड़ी रुचि व लगन के साथ करना चाहिए।

(49) दिनांक 07.06.2015

आज परम् पूज्य चाचा जी महराज का निर्वाण दिवस था और उसी के उपलक्ष्य में देवस्थली आश्रम में सत्संग रखा गया था। आज आपकी दया और कृपा का बहुत से भाइयों ने अनुभव भी किया। सत्संग समाप्त होने पर जब प्रसाद बँट रहा था, तो मेरे पोते अर्थ, जिसकी उम्र आठ साल की है, ने बताया कि बाबा रात में मैने सुबह के वक्त साढ़े चार बजे यह सपना देखा कि हम लोग परमपूज्य चाचा जी महाराज की समाधि पर गये तो मैं ने देखा कि वह एक काली गाय का दूध दुह रहे हैं और दूध दुहने के पश्चात उसी में से एक गिलास

दूध स्वयं पिया और एक गिलास आपको, एक गिलास मेरे पापा को और एक गिलास मुझे दिया और दो बाल्टी दूध आपको दिया कि इसको सब सत्संगी भाइयों (जो कि आये हुए हैं) को पिला देना जिससे कि सबमें ताकत आ जायेगी। सोचने कि बात है कि हमारे बुजुर्ग हमारा कितना ख्याल करते हैं कि याद करने पर उनकी दया हो ही जाती है। इस छोटे बच्चे को इतना याद रहना ही उनकी दया और कृपा का असर है।

यदि हम उनको, उनके जन्म दिवस व निर्वाण दिवस पर भी न याद करें तो यह हमारी ही बदकिस्मती है। यही एक कारण है कि मैंने देवस्थली आश्रम में इन पॉचों बुजुर्गों के जन्म दिवस व निर्वाण दिवस पर भण्डारा रखा है।

(50) लखीमपुर भण्डारा दिनांक 23 अगस्त 2015

इस वर्ष लखीमपुर भण्डारा दिनांक 23.08.2015 दिन रविवार को उसी स्कूल में हर वर्ष की भाँति मनाया गया। इस वर्ष लखनऊ से 50 लोग गये थे और वहाँ की संख्या–100 से अधिक थी। इस वर्ष भण्डारे में हरवर्ष के मुकाबले में काफी लताफत थी, जिसका यहाँ तथा वहाँ के सभी लोगों ने महसूस किया। प्रसाद के वख्त परमपूज्य लालाजी महाराज , परमपूज्य चाचा जी महाराज के दया के साथ–साथ परम् पूज्य ताऊ जी महाराज एवं परमपूज्य बाबूजी की मौजूदगी

एवं दया का एहसास बहुत से लोगों को हुआ। विशेषकर उस समय जब तीन भजन गाये गये थे। बहरहाल इस वर्ष का भण्डारा काबिले तारीफ रहा।

(51) दिनांक 25.09.2015

श्री राम मिलन यादव का घर, लखनऊ

आज दिनांक 25.09.2015 दिन शुक्रवार को श्री राम मिलन यादव जी के यहाँ सत्संग था। रामायण पढ़ने के बाद थोड़ी ही देर में ऐसा लगा कि मेरी जगह परम पूज्य बाबूजी महाराज बैठे हैं, वही सबको पूजा करा रहे हैं। समस्त कमरे में प्रकाश ही प्रकाश था। यह हालत तब तक रही जब तक प्रार्थना शुरू की।

(52) दिनांक 25.10.2015 रविवार

(अनमोल कुमार का घर)

दिनांक 25.10.2015 रविवार को अनमोल के घर पूजा में बहुत अच्छी हालत रही, कई बुजुर्गों की मौजूदगी विशेषकर परमपूज्य लालाजी महाराज, पूज्य चच्चा जी महाराज, पूज्य ताऊ जी महाराज एवं पूज्य बाबूजी की मौजूदगी साफ थी। बहुत आनन्द का अनुभव हो रहा था जिसका वर्णन सम्भव नहीं है।

आध्यात्मिक स्वप्न

(1) जून, 1954

एक रात को ख्वाब देखा कि सिकन्द्राबाद में सतसंग हो रहा है और सभी सतसंगी भाई मौजूद हैं। दो डेरे अलग–अलग पड़े हुए हैं। उसी दौरान में बड़े जोरों से आग लगती है और सतसंगी भाई परेशान होकर भागते हैं। खूब शोरगुल मच रहा है। कुछ लोग ताऊजी वाले खेमे में चले जाते हैं और कुछ लोग बाबूजी वाले खेमें में चले जाते हैं। इस तरह सतसंग दो हिस्से में बँट जाता है और सब भाई बड़े परेशान नजर आते हैं। इतने में ऑख खुल जाती है। यह ख्वाब बाद में वर्ष 1962 में सही निकला।

(2) जून, 1964

जून 1964 में मैं कर्नलगंज जिला गोण्डा में था। उस साल गाजियाबाद के सालाना भण्डारे पर मैं न जा सका। दौराने भण्डारे में मैं एक दिन रात को क्या देखता हूॅ कि मेरे ऑगन, छत, पेड़ों पर आदमियों का एक हुजूम सा बैठा है और बड़ी जोर से शजरा पढ़ा जा रहा है। तमाम रात यही हालत रही।

(3) कर्नेलगंज, 1965

कर्नेलगंज में एक रात अनमोल मेरे साथ सोया हुआ था। रात में मैंने ख्वाब देखा कि मैं और अनमोल खेतों की

पगडंडी होते हुए एक शहर में पहुॅचे। वहॉ अनमोल ने मुझको बताया कि यह कैसरगंज है। वहॉ अस्पताल और कई जगह दिखाने के बाद एक तालाब के बगल में एक कब्र पर जाकर खड़ा हो गया और मुझसे कहा कि यहॉ एक बहुत अच्छे फकीर रहते थे और यह उन्ही की कब्र है और कहा कि लोग समझते हैं कि यह मर गये, पर यह जिन्दा है। कब्र पर कुछ उसने पढ़ा और मैंने देखा कि बुजुर्ग कब्र पर आकर बैठ गये। बाद में मैं जब कैसरगंज जिला बहराइच परिवार नियोजन कैम्प में गया तब श्री बुद्धिलाल जी डिप्टी कलक्टर द्वारा मालूम हुआ कि वहॉ एक अच्छे बुजुर्ग थे। वही उनका मकबरा है और जैसा मैंने ख्वाब में देखा था, ठीक वैसा ही कैसरगंज था।

(4) कर्नेलगंज 1965

एक रात को देखा कि अनमोल हम सबको लेकर एक जगह गया, जहॉ बहुत ऊॅचाई पर एक किला था, जिसमें बड़े–बड़े फाटक तथा मीनार थी। उसके ऊपर दो आदमी पहरा दे रहे थे। उनके कपड़े लाल थे। हम लोगों को देखते ही बड़े जोरों से चिल्लाये कि ठहरो। सारी आवाज किले में गूॅज गई। आवाज बहुत तेज थी। हम सब नीचे खड़े थे। वे काफी ऊॅची जगह थे। अनमोल ने एक छोटा सा कागज जेब से निकाला, एक पुड़िया बनाकर ऊपर फेंक दिया। पुड़िया उड़कर किले पर गई और वे बैठ गये और किले का फाटक खुल गया और जब अंदर गये तो सफेद बिल्कुल चमकता

हुआ संगमरमर का मकबरा था। गालिबन मेरा ख्याल है कि हुजूर सलीम चिश्ती साहब का मकबरा था, कह नहीं सकता।

(5) कर्नेलगंज, 1966

सन1966 के दशहरे के दरम्यान मैं जबकि सिकन्द्राबाद भण्डारा हो रहा था। एक रात को ख्वाब देखा कि सिकन्द्राबाद में सतसंग हो रहा है। सभी सतसंगी भाई वहॉ जमा हैं। उसी दौरान में कुछ बात हो जाती है और ताऊजी, एक भाई से बहुत नाराज होते हैं और उनको सतसंग से निकाल देते हैं। ज्यादातर सतसंगी भाई इनको निकाले जाने से बहुत खुश होते हैं और आपस में एक दूसरे से कह रहे हैं कि इन्होंने हमेशा ताऊजी से लोगों की शिकायत की, बुराई की, अच्छा हुआ, सतसंग से निकाल दिए गये। बाद में यह ख्वाब बिल्कुल सच हुआ।

(6) दिनांक 05—11—1968

मैं डिस्ट्रिक्ट जेल गोण्डा के घर में ड्राइंग रूम के कमरे में सुबह के वख्त पूजा कर रहा था, क्या देखता हूॅ कि पूज्य बाबूजी, पूज्य ताऊजी और कई बुजुर्ग वहॉ आकर बैठ गये और प्रसाद लाकर रख दिया गया। काफी अरसे तक पूजा होती रही और पूजा के बाद मैं अस्पताल जाने के लिए कपड़े पहन कर पूज्ण ताऊजी के पास प्रसाद लेने हाजिर हुआ। आपने प्रसाद देने से पहले मेरे सब कपड़े फाड़कर मुझे पीले कपड़े पहना दिये और घड़ी खोलकर हाथ में एक पीला

धागा बॉध दिया और सर पर एक मुकुट रख कर एक मुड़ा हुआ डिग्री का कागज हाथ में दिया और अपने हाथ से प्रसाद खिलाया और सब बुजुर्ग खुशी–खुशी वापस जाने लगे। वहॉ पर सेठ भाई साहब की भी मौजूदगी देखी। प्रसाद हम सबने लिया। दौरान पूजा में तबियत हल्की और शान्त रही। यह सपना सच हुआ। इसी वख्त परम पूज्य बाबूजी ने हम दोनों भाइयों का सिलसिले की इजाजत लिख कर डायरी में रख दी थी।

(7) दिनांक 07–11–1968

आज रात को ख्वाब देखा कि हमारे यहॉ सतसंग हो रहा है और पूज्य बाबूजी बहुत सारे सतसंगी भाइयों को पूजा करा रहे हैं। पूजा के दौरान दरवाजे पर किसी ने खटखटाया। मैंने उठ कर दरवाजा खोला। क्या देखता हूॅ कि पूज्य ताऊजी, हरी भाई साहब, बसंत और एक कोई और सतसंगी भाई खड़े हैं। मैंने एक दम पूज्य ताऊजी के पैर छुए। उन्होंने बहुत प्रेम से गले लगाया और पूजा के कमरे में दाखिल हुए। सब लोग उनको देखकर बहुत खुश हुए और खासकर पूज्य बाबूजी, जिनकी खुशी की कोई इन्तहा न थी। फिर दोनों जनों ने साथ–साथ पूजा कराई और सबने खूब खाना खाया। मैंने देखा कि पूज्य ताऊजी सतसंगी भाइयों की जूठी प्लेटें साफ कर रहे हैं। मैंने उनको उस काम से रोक दिया और खुद प्लेटें साफ करने लगा उसी दौरान बातचीत

में उन्होंने कहा कि आखिर तुम कब तक और कितनी दूर मुझसे भागते रहोगे और इस ख्याल से मैं आज यहॉ आया हूॅ। उन्होने मुझे बताया कि कुछ लोग जो मुझे इतना बेवकूफ समझते हैं और ख्याल करते हैं कि मैं अब कभी तुम लोगों के पास न आऊॅगा, लेकिन फिर भी मैं आ गया। वो, बाबूजी तथा सभी अन्य लोग बड़े खुश मालूम होते थे। मुझे अपने मन में बड़ी ग्लानि और शर्म आयी। इसके बाद आँख खुल गयी। मैंने उनको 05—11—1968 तारीख का ख्वाब बताया तो उन्होंने कहा वह सही था और तुम अपने ताऊजी को भी नहीं पहचान पाये।

(8) दिनांक 01—12—1968

रात को यह ख्वाब देखा कि सिकन्द्राबाद में सतसंग हो रहा है और बहुत से सतसंगी भाई लोग पूजा कर रहे हैं। पूज्य बाबूजी एवं पूज्य ताऊजी दोनों जने मौजूद हैं और बहुत अच्छा सतसंग हो रहा है। मैं भी वहॉ जाता हूॅ और पूज्य ताऊजी के पैर छूता हूॅ। पूज्य ताऊजी मुझे गले लगा कर जोर—जोर से खूब रोते हैं और बराबर कई घंटो तक मुझे अपने गले से लगाये रखते हैं। जब उन्होंने छोड़ा तब मैं दूसरे कमरे में गया तो वहॉ कुछ औरतें कह रही थी कि किसी आदमी को जिसको मैं भूल गया, उसकी बड़ी अच्छी हालत रही। थोड़ी देर बाद वहॉ बनारस के बाबू पारसनाथ और एक और सतसंगी भाई आए हैं। जिनका नाम मैं भूल गया, शक्ल

से वाकिफ हूँ। उनसे मैं कह रहा हूँ कि आपके आने में देर हो गयी, वरना सतसंग में हालत बड़ी अच्छी थी। फिर हम लोग एक दूसरे से गले मिल कर खूब रो रहे हैं। इतने में ऑख खुल गई। तबियत बड़ी हल्की और खुश थी।

(9) दिनांक 12—12—1968

12 दिसम्बर की रात को यह ख्वाब देखा कि सिकन्द्राबाद के उस कमरे में जिसमें कि पूज्य ताऊजी रहते हैं। वहीं पूज्य ताऊजी व पूज्य बाबूजी दोनों जने बैठें हैं और सतसंग हो रहा है। बाद में सब सतसंगी चले जाते हैं और ताऊजी मुझसे उनके खाने के इन्तजाम के लिए कहते हैं। मैं सब सतसंगियों को खाना खिलवाने के लिये चला जाता हूँ। उस कमरे में सिर्फ सेठ भाई साहब, पूज्य बाबूजी और पूज्य ताऊजी रह जाते हैं। पूज्य ताऊजी सेठ भाई साहब को संध्या कराने लगते हैं। जब मैं कमरे में वापस आता हूँ तो देखता हूँ कि पूज्य ताऊजी सेठ भाई साहब को प्रसाद खिला रहे हैं। मेरे आने पर आप हॅसने लगते हैं और मुझे भी प्रसाद देते हैं। उसके बाद ऑख खुल जाती है।

(10) दिनांक 02—01—1969

आज रात लखनऊ में ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊजी गोण्डा आते हैं और उनके साथ अंसारी साहब, रामदास जी, सूरज कुमार और अन्य दो—तीन लोग हैं। सब लोग ड्राइंग रूम में फर्श पर बैठ कर पूजा कर रहे हैं। पूजा के बाद नाश्ते

में मठरी और चाय आती है। हम सभी लोग चाय पी रहे हैं। पूज्य ताऊजी कह रहे हैं कि यहॉ पर यह सब लोग मेरे Selected आदमी हैं। इतने में मुन्सिफ उतरौला Mr. Ram वहॉ आते हैं। तभी ऑख खुल जाती है।

(11) दिनांक 08—07—1969

आज रात में यह ख्वाब देखा कि मैं और सेठ भाई साहब मय बच्चों के साथ बड़ा लम्बा सफर कर रहे हैं। रास्ते में जगह—जगह बहुत से सतसंगी भाइयों से मुलाकात हुई। जिनमें बाबू रामदास जी का ध्यान है बाद बाकी याद नहीं। काफी लम्बा सफर करने के बाद हम लोग एक महल में पहॅुचे जो कि बहुत सुन्दर था और वहॉ का वातावरण बड़ा शान्त था। वहॉ पर ऊपर जाने पर हमने देखा कि एक आदमी ढोलक पर बड़ी मस्ती से कव्वाली गा रहा था और एक लड़का सा ढोलक ठीक कर रहा था। उसका गाना सुनने के बाद एक बुजुर्ग हम लोगों को दो कमरों में ले गये। दोनों कमरों में एक—एक कब्र थी और सफेद संगमरमर की ऊॅची—ऊॅची दीवारें थी। उन्होंने बताया कि यही मक्का और मदीना है। रास्ते में या वहॉ पर अम्माजी (मेरी पत्नी की मॉ) को भी बैठे देखा। यह याद नहीं किस जगह।

(12) दिनांक 24—07—1969

आज सुबह करीब चार बजे यह ख्वाब देखा कि गाजियाबाद में भण्डारा हो रहा है, जिसमें बहुत से लोग

शामिल है। जहॉ तक मुझे याद है महीना नवम्बर का है, भण्डारे का आखिरी दिन है और पूज्य लालाजी महाराज के लिए सतसंग होकर प्रसाद बंट रहा था और सब लोग आपस में बैठ कर बातचीत कर रहे थे। उसी वक्त हरी भाई साहब का तार आया कि पूज्य ताऊजी की Death हो गयी और हम सब लोग जल्दी–जल्दी सिकन्दराबाद जाने की तैयारी करने लगे। उसी समय ऑख खुल गयी।

(13) गुरूपूर्णिमा, दिनांक 28, 29–07–1969

आज रात यह ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊजी की हालत बहुत खराब है और वो सिकन्द्राबाद वाले कमरे में बेहोश से चारपाई पर पड़े हैं और मैं, हरी भाई साहब, सरदार जी और अन्य बहुत से सतसंगी भाई उनके चारों तरफ बहुत गमगीन खड़े हैं। उसी वक्त आखिरी दरवाजे से पूज्य लालाजी महाराज व पूज्य बाबूजी महाराज दाखिल हुए हैं। पूज्य लालाजी महाराज आगे और पूज्य बाबूजी महाराज पीछे–पीछे हैं। पूज्य लालाजी महाराज आकर हरी भाई साहब व सरदार जी को खूब डांटते हैं और कहते हैं कि तुम लोगों ने इनको जबरदस्ती बीमार बना रखा है और पूज्य ताऊजी को गरदन का सहारा देकर उठा कर बैठा देते हैं और कहते हैं कि यह देखो ठीक हो गये और पूज्य ताऊजी की तबियत ठीक होने लगी और ऑख खुल गई। यह ख्वाब भी बिल्कुल सच हुआ।

(14) 06 नवम्बर, 1969

आज रात को मैंने ख्याब देखा कि परम् पूज्य ताऊ जी महाराज मेरे बड़े कमरे में लेटे हुए हैं और ऐसा जान पड़ता है कि वो बीमार हैं और उनकी तबियत काफी खराब है। मैं, बसंत और त्रिपाठी साहब और कुछ लोग चारों तरफ बैठे हुए हैं। वहाँ पर त्रिपाठी साहब सत्संग का इन्तजाम कर रहे हैं। परम पूज्य ताऊ जी महाराज साहब ने त्रिपाठी जी को बुलाया और कहा कि दिन्नू को वहाँ सत्संग कराने के लिए ले जाओ। मैंने जवाब दिया कि वैसे आपका हुकुम है तो चला जाता हूँ मगर बहुत से लोग इसको समझते नहीं और मेरा समय खराब करेंगे और कुछ नहीं है। आपने कहा है इसीलिए मैं चला जाता हूँ। मैं त्रिपाठी जी के साथ जाता हूँ और वहाँ सत्संग कराता हूँ। उसके बाद मेरी आँख खुल गयी।

(15) दिनांक 26.11.1969

आज रात को ख्याब देखा कि बहुत बड़ा भण्डारा हो रहा है और बहुत से सत्संगी भाई आये हुए हैं और इस भण्डारे में पूज्य ताऊ जी महाराज एवं परम् पूज्य बाबूजी महाराज के सत्संगी शामिल हैं। मैंने देखा बहुत ऊँचे एक चबूतरे पर परम् पूज्य ताऊ जी महाराज, पूज्य बाबूजी महाराज और सरदार जी भाई साहब और एक और बुजुर्ग जिनकी दाढ़ी काली और छोटी है, लेटे हुए हैं और इन बुजुर्गों के पैरों पर फूल ही फूल पड़े हुए हैं। उन हल्की काली दाढ़ी वाले बुजुर्ग को मैं नहीं

पहचानता परन्तु सभी लोग बहुत खुश हैं। परम् पूज्य ताऊ जी महाराज साहब ने मुझे बुलवाया और अपने पैरों से उठाकर फूलों की माला मेरे गले में डाल दी उसके बाद मेरी आँख खुल गयी।

(16) दिनांक 28.11.1969

आज सुबह करीब 6 बजे यह ख्वाब देखा कि मैं, परम् पूज्य बाबूजी महाराज और मेरे चचेरे भाई नरेश चन्द्र सक्सेना (पुत्र स्व0 गंगादीन सक्सेना) और बंगाली (पुत्र स्व0 बाबूराम सक्सेना) चारों लोग मुन्नी (हमारी छोटी बहन) की शादी तय करने के लिए किसी जगह जा रहे हैं। एक जगह पहुँचने पर परम् पूज्य बाबूजी महाराज ने फर्माया कि यहाँ पर एक बहुत बड़े बुजुर्ग रहते हैं, यहाँ आए हैं तो उनसे मिल लिया जाये। मैं और परम् पूज्य बाबूजी महाराज साहब उनके घर पर गये परन्तु बंगाली और नरेश बाहर ही रह गये। वह मकान बिल्कुल महल की तरह बहुत बड़ा है और उस मकान की बनावट स्कूल की तरह है। वहाँ बाहर लान बहुत खूबसूरत है और चारों तरफ स्कूल की तरह बरामदा है। हम लोग एक कमरे में गये, वहां पर थोड़ी देर में एक और बुजुर्ग तशरीफ लाये, मैं उनको न तो जानता हूँ और न पहचानता हूँ। हम लोग उनसे मिलकर बहुत खुश हुए, उन्होंने परम् पूज्य बाबूजी महाराज साहब को बड़ा अच्छा खाना खिलाया, उसके बाद वो बुजुर्ग शाम के वक्त हम लोगों को बाहर छोड़ने आये, उन्होंने बाबूजी महाराज साहब को बहुत

आशीर्वाद दिया। बाबूजी महाराज साहब ने फर्माया कि अब आपकी नमाज का वक्त हो गया है, उन्होंने जवाब दिया हाँ और वो जल्दी से अन्दर चले गये। मैंने देखा कि जब वो नमाज के लिए गये तो अन्दर के बरामदे में नमाज के लिए बहुत से लोग आ गये और सभी लोग सफेद कपड़े पहने हुए हैं। मैंने देखा सभी लोग बरामदे में पहले से नमाज पढ़ रहे हैं और उसके बाद सत्संग हो रहा है। बुजुर्गों ने हम लोगों को बहुत आशीर्वाद दिया। उसके बाद आँख खुल गयी। तबियत बहुत प्रसन्न रही और पूरा दिन बड़ा अच्छा महसूस होता रहा।

(17) दिनांक 19/20.12.1969

आज करीब सुबह चार बजे या पॉच बजे के बीच मैंने एक ख्वाब देखा कि कोई साहब किसी मास्टर साहब के साथ मेरे पास आये हैं और मुझसे कह रहे हैं कि मुझे किसी साहब ने आपके पास भेजा है और कहा है कि आप डाक्टर साहब के पास जाइये और उनसे परमात्मा एवं परमार्थ के बारे में पूछिये, इसलिए मैं आपके पास आया हूँ। मैं उन दोनों में से किसी को नहीं जानता पहचानता था। मैं घर उन्हीं के साथ जाता हूँ और उनको रास्ते भर परमात्मा के बारे में काफी देर तक बातचीत होती रही, वो मुझसे काफी मुतासिर हुए, मैंने वहाँ परम्पूज्य ताऊजी महाराज की मौजूदगी का अहसास किया, उनको देखने के बाद मेरी आँख खुल गयी।

(18) दिनांक 20.03.1970

आज सुबह के वक्त करीब चार बजे एक ख्वाब देखा कि हजारों लोग एक जगह पर बैठकर पूजा कर रहे हैं, जिसमें से कुछ लोगों को मैं जानता हूँ, कुछ को नहीं। पूज्य ताऊ जी महाराज और पूज्य बाबूजी महाराज के वहाँ दर्शन हुए, आँख खुलने पर तबियत बहुत हल्की थी तथा दिल को बहुत सुकून मिला।

(19) दिनांक 24.03.1970

आज दोपहर के वक्त जबकि मैं खाना खाने के बाद सो रहा था,देखता हूँ कि परम् पूज्य ताऊ जी महाराज साहब मेरे कमरे में आये हैं और मुझसे बहुत देर तक बातचीत कर रहे हैं। उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम्हारी किताब अब बराबर आ रही है कि नहीं। मैंने उन्हें बताया वो तो आज करीब दस साल से बन्द हो गयी है और न मेरे पास आती है क्योंकि सुना है कि आपने मेरी किताब बन्द करने का हुक्म दे रखा है। उन्होंने फर्माया कि मैंने कोई ऐसा हुक्म नहीं दिया और न ऐसा हुक्म दे सकता हूँ। इतने में अजय आ जाते हैं और उनसे भी पूज्य ताऊ जी महाराज यही सवाल करते हैं। अजय ने भी पूज्य ताऊ जी महाराज को बताया कि हमारी किताब भी बराबर नहीं आती है। इस पर पूज्य ताऊ जी महाराज साहब एक व्यक्ति....... को बुलवाकर बहुत डाँट रहे हैं, इतने में मेरी आँख खुल गयी। यह ख्वाब लखनऊ के घर रिवर बैंक कालोनी का है।

(20) दिनांक 28.03.1970 (गोण्डा)

आज करीब सुबह चार बजे एक ख्वाब देखा कि एक बहुत बड़ी सी जगह है और पूज्य बाबूजी महाराज साहब एक चारपाई पर बैठे हुए हैं और बहुत से सत्संगी भाई हजारों की तादाद में मेरे यहाँ बैठे खाना खा रहे हैं। उनमें से बहुत से लोगों को मैं बिल्कुल नहीं जानता। इनमें से बनारस के काफी लोग हैं जिनको मैं जानता हूँ। इतने में मेरे सिविल सर्जन साहब आते हैं और पूज्य बाबूजी महाराज से धर्म की बातें करने लगते हैं। मैं उनसे कह रहा हूँ कि हम लोगों के मजहब में मुसलमान फकीर ज्यादा हुए थे। दो तीन लोग मुझे जानते भी हैं। मैं उन सब लोगों को बुलाकर वहीं खाना खिला रहा हूँ। ज्यादातर सभी लोग खाना खा चुके हैं। खाने का बचा हुआ सामान हटाकर जमा कर रहा हूँ और मैंने सभी सत्संगी भाइयों को दूध पिलाया। इतने में आँख खुल गयी। तबियत बहुत हल्की रही और दिमाग को बहुत सुकून मिला।

(21) दिनांक 04.04.1970 (गोण्डा)

आज रात को ख्वाब देखा कि सिकन्द्राबाद में बहुत बड़ा सत्संग हो रहा है और लोग बहुत बड़ी तादाद में बैठे पूजा कर रहे हैं। पूज्य ताऊ जी, पूज्य बाबूजी महाराज और पूज्य ब्रजमोहन लाल जी भी वहाँ मौजूद हैं। मैं बहुत से लोगों को उनमें से जानता हूँ। सेठ भाई साहब की भी वहाँ मौजूदगी थी। सुबह व शाम दोनों वक्त पूजा हो रही है। पूज्य ताऊ जी

महाराज ने मुझसे कहा कि तुम्हारे जो दो नये सत्संगी आये हुए हैं उनको तुम्हीं पूजा शुरू कराओ और मैं बाद में आ जाऊँगा और तब बैठा रहूँगा। मैंने जवाब दिया कि और लोग भी बैठे हुए हैं और सब लोगों को सतसंग कराना आपको ही मुनासिब है। मैंने हरी भाई साहब और सरदार जी भाई साहब को पीछे बैठे देखा। इतने में आँख खुल गयी।

(22) दिनांक 01.05.1970

आज रात के वक्त एक ख्वाब देखा कि हम लोग (मैं और मेरी पत्नी) सिकन्द्राबाद गये हुए हैं, वहाँ पर पूज्य ताऊ जी महाराज के घर पर पहुँचे और देखा वहाँ पर बहुत से लोग जमा हैं और सब लोग बहुत परेशान और बदहवास हैं। खासकर पूज्य बाबूजी महाराज, शर्मा बहन और नन्नो बहन। मैं हर जगह घर में तलाश कर रहा हूँ परन्तु पूज्य ताऊ जी महाराज कहीं दिखाई नहीं देते हैं। मैं हरएक से पूछता हूँ परन्तु कोई ठीक से जवाब नहीं देता है। मैंने पूज्य ताईजी को भी उस वक्त उसी घर में देखा, जबकि उनकी मृत्यु हो चुकी थी। सब लोग यही कह रहे थे कि कोई पूज्य ताऊ जी को कहीं ले गये हैं। आखिर में मैंने शर्मा बहन से पूछा तो उन्होंने बताया पूज्य ताऊ जी महाराज की तबियत बहुत खराब हो गयी थी, उठ भी नहीं सकते थे और आखिरी साँसे चल रही थी। उन्होंने बताया कि पूज्य ताऊ जी महाराज साहब ने कहा कि अगर मैं ठीक हो गया तो एक बार नन्हे (मेरे घर) के घर

जरूर जाऊँगा। इसके बाद वो फिर चुप हो गये उन्होंनें बताया शायद उनको कहीं ले गये हैं। इसके बाद आँख खुल गयी।

(23) 25.05.1970

आज दोपहर में खाना खाने के बाद मेरी आँख लग गयी और नींद आ गयी। मैंने देखा कि मैं लखनऊ में हूँ और वहाँ बहुत बड़ा सत्संग हो रहा है और पूज्य बाबूजी महाराज साहब वह सतसंग करा रहे हैं। पूज्य ताऊ जी महाराज एक चारपायी पर बहुत साफ कपड़े पहने हुए बहुत खामोशी से लेटे हुए हैं। उनके कपड़े बहुत साफ हैं, सब लोगों को प्रसाद बाँटा जा रहा है और सभी सत्संगी भाई जो वहाँ मौजूद हैं, प्रसाद ले रहे हैं। बाद को मुझे ध्यान आया कि आज आपके विशाल का सातवाँ दिन था, मैंने इन्जीनियर साहब (डी0पी0 सक्सेना) और उनकी पत्नी को देखा कि वो लोग भी प्रसाद ले रहे हैं।

(24) दिनांक 02.08.1970

आज सुबह के वक्त करीब चार बजे यह ख्वाब देखा कि पूज्य बाबूजी महाराज सिकन्द्राबाद वाले मकान के बाहर के आँगन में जहाँ पहले सत्संग होता था, वहाँ बैठे हुए सतसंग करा रहे हैं। खूब साफ–साफ सफेद चादरें बिछी हुई है। सब लोग बैठकर पूजा कर रहे हैं बहुत से सतसंगी लोग हैं इतने में क्या देखता हूँ कि पूज्य ताऊ जी महाराज आते हैं,

बहुत खुश हैं और कह रहे हैं कि जो मैं चाहता था वो मेरे सामने न हो सका लेकिन मेरे मौत के बाद हुआ, उसके बाद वो पूज्य बाबूजी महाराज से बातचीत कर रहे हैं, काफी देर तक बात करने के बाद ताऊ जी महाराज वहाँ से चले जाते हैं, इतने में मेरी आँख खुल जाती है।

(25) दिनांक 08.09.1970

आज रात को ख्याब देखा कि हम लोग लखनऊ जा रहे हैं। जब हम लोग फैजाबाद बस स्टेशन पर पहुँचे जो कि सड़क पर था तो देखा कि पूज्य ताऊजी महाराज, शर्मा बहन वहाँ बस स्टेशन पर मौजूद हैं। पूज्य ताऊ जी महाराज एक कुर्सी पर तशरीफ रखे हुए हैं, मैं ने आपके पैर छुए और पूछा कि आप यहाँ पर कैसे आये हुए हैं। आपने फरमाया कि मैं शर्मा बहन को तुम्हारे पास पहुँचाने आया हूं। मैं और वो काफी देर तक बातचीत करते रहे फिर सब लोग नवाबगंज कार से वापस आ गये। मेरी आँख खुल गयी, तबियत बहुत ही हल्की और ताजी महसूस हो रही थी।

(26) दिनांक 18.10.1970

आज रात को ख्वाब देखा कि किसी जगह बहुत बड़ा सत्संग हो रहा है और बहुत से पुराने व नये सतसंगी भाई जमा हुए हैं, उनमें से बहुत से लोगों को खूब अच्छी तरह जानता हूँ और बहुत से लोग ऐसे भी हैं जिनके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। जिनका मुझे अब भी ध्यान है, वो ये लोग हैं, सेठ भाई साहब, मदन भाई साहब, बाबू सत्यप्रकाश

वकील (इलाहाबाद), पूज्य ताऊ जी महाराज के तीनों लड़के और दोनों लड़कियाँ। सब लोग अलग–अलग रुके हुए हैं। पूजा की तैयारी हो रही है। इतने में सेठ भाई साहब और मैं जहाँ पूजा होने वाली है, पहुँचता हूँ। सब लोग बहुत खुश होते हैं। खासकर हरी भाई साहब, हम दोनों भाइयों को देखकर बहुत खुश होते हैं। हरी भाई साहब हम लोगों को उस कमरे में ले जाते हैं जहाँ पूज्य ताऊ जी अकेले बैठे हुए हैं। हम लोग उनके पैर छूते हैं और वो बहुत खुश होकर आशीर्वाद देते हैं। मैं उन्हीं के पास बैठ जाता हूँ और उनसे बहुत देर तक बातें होती हैं। मुझे बस अब इतना ही याद है कि उन्होंने पूछा कि तुम्हारी माँ का सलूक तुम दोनों की तरफ कैसा है। मैं उनसे कहता हूँ कि अब वह बहुत बदल गयी हैं और उनका सलूक हम लोगों की तरफ से बहुत अच्छा है। आपने फर्माया कुछ साल बाद और भी अच्छा हो जायेगा। पूजा और सत्संग में तीनों दिन गुजर जाते हैं और हम लोग ज्यादातर पूज्य ताऊ जी महाराज के पास ही रहते हैं। इतने में हरी भाई साहब आते हैं और कहते हैं कि आज सेठ और दिन्ना जाने को कह रहे हैं।

मैंने पूज्य ताऊ जी महाराज साहब से कहा कि मैं सिर्फ तीन दिन की छुट्टी लेकर आया था, अगर आप कहें तो एक–दो दिन और रुक जाऊँ। आपने फर्माया कि एक दिन तो मैं बीमार ही हो गया। इस पर बाबू सत्यप्रकाश जी ने कहा जब रोजी देने वाला ही कह रहा है तो जरूर रुक जाओ

और रुकने में कोई हर्ज नहीं है। इतने में पूज्य ताऊ जी की तबियत खराब हो जाती है, मुझे सिर्फ इतना याद है कि कही बिजली का तार जल्दी–जल्दी लगाया जा रहा है कि बिजली का पंखा चलने लगे और पंखा चलते ही पूज्य ताऊ जी की तबियत ठीक हो गयी और उठकर बहुत देर तक बातें कर रहे हैं। ताऊ जी सबसे कह रहे हैं कि इस बार मैं बहुत खुश हूँ कि इस बार लगभग सभी लोग भण्डारे पर आये हैं। वो कह रहे हैं कि धीरे–धीरे सब पुराने लोग इकट्ठे हो जायेंगे और ये भण्डारा और सत्संग बहुत अच्छा चलेगा। ये सब बातें हो रही हैं तभी देखता हूँ कि पूज्य ताई जी भी आयी हैं और पूज्य ताऊ जी के साथ बैठकर बहुत खुश हैं। दोनों ही लोग बहुत खुश हैं। इतने में आँख खुल गयी।

(27) दिनांक 24.11.1970

आज तीन दिन से बराबर पूज्य ताऊ जी के दर्शन खुली आँखों हो रहे हैं और ता0 24.11.1970 की रात में ख्वाब में उनसे बातचीत करता रहा, आँख खुलने पर तबियत बहुत हल्की और खुश थी। मगर यह कुछ याद नहीं है कि उनसे क्या बातचीत हो रही है। दिनांक 25.11.1970 की रात में फिर आपके दर्शन हुए और काफी अर्से तक फिर उनसे बात होती रही। सिर्फ इतना याद है कि जब मैं और पूज्य ताऊ जी घर वापस आये तो देखा कोई दो आदमी सो रहे हैं, मैंने अपनी पत्नी से पूछा कि ये लोग कौन हैं, मेरी पत्नी ने बताया कि ये महेश भाई साहब और उनकी बीबी हैं। मैं ने उनको उठाकर

पूछा कि आप लोग कब और कैसे आये हैं और किसलिए। महेश भाईसाहब ने बताया कि हमलोग गुरुदेव के दर्शन करने आये हैं। हमको मालूम हुआ कि अब वो यहीं पर रह रहे हैं। इतने में आँख खुल गयी, तबियत बहुत हल्की और खुश थी।

(28) दिनांक 26.11.1970

रात को ये ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊ जी आये हैं और मेरे बरामदे में लेटे हुए हैं। उसके बाद वो उठकर मेरे ड्राइंगरूम में सोफे पर लेट गये। हम और पूज्य ताऊ जी महाराज बराबर बात कर रहे हैं, उनके पास उनके मँझले लड़के राधे भाई साहब और छोटे लड़के गोपाल भाई साहब भी बैठे हैं। आप कह रहे हैं कि बेटे, मुझको कुछ लोगों ने बहुत परेशान किया। वो लोग समझते थे कि मैं मर गया हूँ या जरूर मर जाऊँगा। लेकिन उनको ये मालूम नहीं था कि मैं कभी नहीं मर सकता हूँ, फर्क सिर्फ इतना है कि पहले मैं उनके यहाँ रहता था और अब मैं हर वक्त तुम्हारे यहाँ रहूँगा। राधे भाई साहब उनकी बातें बहुत गौर से सुन रहे हैं और बहुत दुखी हो रहे हैं।

(29) दिनांक 31.05.1971

आज सुबह चार बजे ख्याब देखा कि कोई औरत जिसको न तो मैं जानता हूँ और न पहचानता हूँ , एक कमरे में पूजा के लिए चादर बिछा रही है और सामान इकट्ठा कर रही है और उन्होंने प्रसाद लाकर भी रखा और उन्होंने उस

कमरे को पूजा के लिए बिल्कुल ठीक कर दिया। होली का दिन है मैं किसी से होली मिलने के लिए गया हूँ, जब मैं अपने घर वापस आया तो देखा कि उस कमरे में वहाँ पूजा का सामान इकट्ठा हुआ है। इतने में क्या देखता हूँ कि पूज्य ताऊ जी उस कमरे में कालीन पर बैठे हैं और मैं उनके पैर छूता हूँ वो बहुत खुश होते हैं और बड़े ही प्रेम से गले लगा लेते हैं और वहाँ बहुत से लोग बैठ कर पूजा करने लगते हैं। मैंने देखा वहाँ पर हरी भाई साहब और राधे भाई साहब उनके सामने बैठे हैं जहाँ तक मेरा ख्याल है पूज्य ताऊ जी के सभी बच्चे वहाँ पर मौजूद हैं।

मैं सबसे पूछता हूँ कि आप लोग कब से यहाँ आये हैं? पूज्य ताऊ जी महाराज साहब ने कहा कि मेरी मोक्ष हो चुकी है और जहाँ भी मेरा नाम लिया जायेगा, और जो मुझे याद करेगा वहीं मैं पहुँच जाता हूँ। दिन्नू तुम मुझको बराबर याद करते हो इसलिए मैं यहाँ अकेले आया हूँ, मुझे खुशी है अच्छा हुआ कि मेरे बच्चे भी हम लोगों की जिन्दगी के बाद इसी तरह मिलते रहें।

मैं हर वक्त तुम्ही लोगों के बारे में सोचता रहता हूँ और काफी देर तक उनसे बातें होती रहीं जो मुझे याद नहीं। हाँ इतना याद है , हरी भाई साहब से उन्होंने कहा कि मैं दिन्नू से बहुत खुश हूँ। मैंने तुम्हारे (दिन्नू) ने खत का जवाब नहीं दिया। तुमने मुझे एक डाइबिटीज की दवा बताई थी

मगर लिख न सका, उसके बाद आँख खुल गयी, तबियत बड़ी हल्की और खुश रही।

(30) दिनांक 04.12.1971

आज सुबह चार बजे ये ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊ जी महाराज साहब बहुत से लोगों को लेकर मेरे यहाँ आये हैं, करीब–करीब सभी लोगों को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। सूरज कुमार लाल, राम नारायन, उनका मुझे खूब अच्छी तरह याद है, और लोगों का ध्यान नहीं। पूज्यपूज्य ताऊ जी महाराज साहब मेरे सोफे पर आराम से बैठ गये और सभी लोग नीचे बिछी चादर पर बैठ गये।

इतने में पूज्य बाबूजी महाराज साहब की मौजूदगी भी दिखाई पड़ी और ताऊजी ने उन्हें अपने पास सोफे पर बैठा लिया। पूज्य ताऊ जी ने कहा बेटे नन्हें! मेरे पैर में बहुत दर्द है और कहीं से अगर हो सके तो मछली के तेल का इन्तजाम करो जिससे मेरे पैर की मालिश करायी जाये। मैं आपसे पूछता हूँ कि और किसी चीज की जरूरत हो तो बतायें तो उसका भी इन्तजाम कर देंगे। मैंने पूछा कि दाँत का मंजन है कि नहीं, आपने फर्माया कि बेटे तुम्हीं देख लो। सब सतसंगी भाई आपस में बैठकर उनके सामने बात कर रहे हैं।

पूज्य बाबूजी और पूज्य ताऊ जी सोफे पर बैठकर कुछ बातें कर रहे हैं जो मुझे याद नहीं। बीच–बीच में कुछ सतसंगी भाई पूज्य ताऊ जी और पूज्य बाबूजी से भी बात कर

रहे हैं। ताऊ जी महाराज साहब ने कहा तन्दुरुस्ती के लिए दूध बहुत अच्छा होता है। इतने में मेरी आँख खुल गयी, तबियत बड़ी हल्की रही।

(31) दिनांक 07.02.1972

आज सुबह के वक्त रात भर तमाम रात पूज्य ताऊ जी महाराज की मौजूदगी रही और सतसंग होता रहा। बहुत से लोग दिखाई पड़े।

ठाकुर शिवनरेश सिंह एक बहुत अच्छी प्रार्थना पूज्य ताऊ जी की तारीफ में सुना रहे थे। अन्सारी साहब ने भी बहुत अच्छी गजल पढ़ी। सब लोग रात भर पूजा करते रहे। मैं पूज्य ताऊ जी से रात भर बात करता रहा और मैंने उनसे कहा कि आप चाहते थे कि सब सतसंग एक हो जाए, वैसा ही हुआ। दुःख इस बात का है कि आपके सामने नहीं हुआ। खूब सतसंग हुआ और रात भर पूजा चलती रही। आँख खुलने पर तबियत हल्की थी और मन में अजब खुशी थी।

(32) दिनांक –24.03.1988

आज सुबह चार बजे एक ख्वाब देखा कि पूज्य बाबू जी महाराज ने अतुल के माथे पर टीका लगाया और कहा कि जाकर अपने पापा के पैर छुओ, तुम्हारा सलेक्शन हो गया। दूसरे दिन अतुल का सी डी आर आई में रीसर्च एसोसिएट के पद पर इन्टरव्यू था जिसमें सलेक्सन की कम उम्मीद थी क्योंकि सी डी आर आई के बाहर के केन्डीडेट भी थे। जब

रिजल्ट आया तो अतुल का सलेक्सन हो गया और आज दि0 10.03.1988 के उसने ज्वाइन कर लिया और यह स्वप्न सच निकला।

(33) दिनांक 17.04.1988

आज सुबह चार बजे एक ख्वाब देखा कि किसी L-shaped कमरे में सतसंग हो रहा है। वहॉ पर बहुत से सतसंगी भाई–बहन सतसंग कर रहे हैं और पूज्य बाबूजी सतसंग करा रहे हैं। L-shaped कमरे के दूसरी तरफ पूज्य फूफाजी (श्री सेवती प्रसाद जी) भी बैठे हैं, उनके पास पूज्य ताऊजी आकर बैठ जाते हैं और उनसे पूछते हैं कि दिन्ना कहॉ है।

पूज्य फूफाजी मेरी तरफ ऊँगली उठाते हैं। मैं पूज्य ताऊजी की आवाज और अपना घर का नाम सुनकर एक दम से उधर देखता हूॅ।

इतने में पूज्य ताऊजी बहुत तेजी से उठ कर मुझे गले लगाकर बहुत प्यार करते हैं और बहुत आशीर्वाद देते हैं। मन में अभी तक बहुत खुशी हो रही है और शरीर बहुत हल्का है। बत्ता जिज्जी ने भी उसी समय इसी तरह का ख्वाब देखा।

(34) दिनांक 27.07.1989

आज सुबह–सुबह यह ख्वाब देखा कि मेरे अलीगंज वाले मकान में जो लॉज है, वहॉ पर बहुत से बुजुर्ग इकट्ठा है, जिसमें से मैं पूज्य पाद लालाजी महाराज, पूज्य चच्चाजी

महाराज, पूज्य ताऊजी महाराज और शायद बाबू ब्रजमोहन लाल जी को मैं पहचानता हूॅ। मैं, पूज्य सेठ भाई साहब और बब्बू भैया भी वहॉ मौजूद हैं, पूज्य ताऊजी पूज्य बाबूजी के पास बैठे हैं। खलीलाबाद वाले राय साहब श्री जमुना प्रसाद राय आकर बिल्कुल पूज्य ताऊजी के सामने बैठ गये हैं। पूज्य ताऊजी ने उनको आशीर्वाद दिया और कहा कि बहुत सस्ते में यह चीज आपने ली, बस दिन्ना के पास आप आते–जाते रहें। इसके बाद सब लोग उठने लगे। मैं ने पूज्य ताऊजी को हाथ पकड़ कर सहारा दिया, आपने फरमाया कि अब हमको जवॉ मर्दो के सहारे की जरूरत पड़ेगी। मैंने आपसे कहा कि अभी तो कोई ऐसा दिखाई नहीं पड़ता। आप लॉज से चलकर बगल वाले बेडरूम में गये, जहॉ अनमोल बैठा हुआ था। आप सीधे जाकर उसके पास खड़े हुए और कंधे पर हाथ रख कर कहने लगे कि मेरा यह पोता बहुत जवॉ मर्द निकलेगा और मेरा नाम रोशन करेगा। अनमोल ने पूज्य ताऊजी के पैर छुए और उन्होंने एक तरफ मुझे और एक तरफ उसको गले से लगा लिया। इतने में ऑख खुल गयी। जहॉ तक मुझे याद है कि खलीलाबाद के मिश्रा जी भी जमुना प्रसाद राय साहब के पीछे खड़े थे।

(35) दिनांक 05.01.1990

आज सुबह तीन–चार बजे के बीच यह ख्वाब देखा कि परम पूज्य बाबूजी मेरे पास यहॉ आये हैं और मुझे एक टोपी

देते हैं। मैंने मन ही मन में यह सोचा कि पूज्य बाबूजी इतनी मॅहगी टोपी ले आये हैं। मैंने उनसे कहा कि मेरे पास तो टोपी है, आप नाहक इतनी कीमती टोपी ले आये। आपने फरमाया कि यह मेरी अपनी टोपी है, जो कि आज मैं तुमको दे रहा हूॅ और वह टोपी मेरे सिर पर पहना दी और कहा कि खुश रहो। इसके बाद ऑख खुल गई।

(36) दिनांक 15.02.1990

आज सुबह चार बजे के करीब ये ख्याब देखा कि मैं, मेरी पत्नी और 22 सत्संगी भाई जीप से फरदहनी गये हैं। वहाँ पर सतसंग हो रहा है और वहाँ पर एक तरफ बहुत से लोग खाना खा रहे हैं। वहाँ पर हम लोगों के जाने से वहाँ के लोग बहुत खुश हुए। वहाँ पर मैंने पुराने लोगों में नंद जी, रामनारायन जी, बाबू रामदास जी तथा और भी बहुत सारे लोगों को देखा। एक कमरे में पूज्य ताऊ जी व पूज्य बाबूजी को देखा। मैं पूज्य ताऊ जी के पास जाता हूँ, उनके और पूज्य बाबूजी के पैर छूता हूँ, आप दोनों लोग बहुत आशीर्वाद देते हैं। परम् पूज्य ताऊ जी महाराज के पैर अपने पैरों से दाबने लगता हूँ। थोड़ी देर में पूज्य ताऊ जी और पूज्य बाबूजी कहीं चले जाते हैं। वो लोग आपस में खूब देर तक बात करते हैं। सभी लोग बहुत खुश हैं, काफी देर तक सतसंग हुआ, बड़ी अच्छी हालत रही, इतने में आँख खुल गयी।

(38) दिनांक 26.06.1990

आज सुबह करीब पाँच बजे ये ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊ जी और पूज्य बाबूजी के साथ मैं और सेठ भाई साहब कहीं जा रहे हैं, जगह के बारे में मालूम नहीं। हम चारों लोग एक जगह आये हैं, वहाँ पर एक बहुत बड़े तख्त पर बहुत बड़े बुजुर्ग बैठे हैं। वहाँ पर उन बुजुर्ग के सामने पूज्य बाबूजी और पूज्य ताऊ जी हम दोनों को पेश करते हैं और बुजुर्ग हम लोगों को बहुत आशीर्वाद दे रहे हैं और कह रहे हैं कि शिजरे शरीफ में इन दोनों का नाम लिखो।

वहाँ पर मैंने और भी सतसंगी भाइयों को देखा, उनमें से ठाकुर शिवनरेश सिंह, अन्सारी साहब की मुझे याद है। इतने में आँख खुल गयी, उस जगह सिर्फ नूर ही नूर था और कुछ नहीं था।

(38) दिनांक 26.09.1990

1990 का भण्डारा गाजियाबाद में था। 26 तारीख से शुरू हुआ था। भण्डारे का पहला दिन परम् पूज्य बाबूजी महाराज के लिए था। रात को मैंने ख्वाब देखा , मैं और भाई साहब मोटर खाने वाले वाले कमरे में सो रहे हैं जो कि गाजियाबाद में है। रात को ख्वाब में देखा कि मौलवी अहमद अली साहब और मौलवी फजल अहमद साहब नक्शबन्दी दोनों की समाधि उसी कमरे में उठकर आ गयी । उन दोनों समाधियों पर उन लोगों के नाम लिखे हुए थे। नाम बड़े साफ, काले रंग से लिखे हुए थे।

दिनांक 27.09.1990 को सिलसिले के सब बुजुर्गों के लिए ओमशान्ति का दिन था। परम् पूज्य ताऊ जी महाराज, पूज्य बाबूजी महाराज ने फर्माया कि बुजुर्गों का जरा ख्याल करो कि वो हाजिर हैं। ये सब मंजर इतना साफ देखा कि बयान के बाहर है।

(39) दिनांक 28–07–1991

गुरू पूर्णिमा पर हम लोग 25–07–1991 को गाजियाबाद गये थे। एक दिन (27–07–1991) का सतसंग भण्डारा था। मेरा पुत्र Atul Kumar नहीं गया था, क्योंकि 28–07–1991 को उसका Scientist-B का Interview CDRI में था। मैंने 28–07–1991 की रात को सपना देखा कि पूज्य बाबूजी और पूज्य ताऊजी ने हॉल के कमरे में आकर अतुल के माथे पर टीका लगाया और बहुत खुश होकर आशीर्वाद दिया कि जा तेरा सेलेक्शन हो गया है। पूज्य ताऊजी खूब हॅस रहे हैं। बाद में जब Selection का Result आया तो Atul को ही Select किया गया, जबकि इससे अच्छे लड़के थे और उसका Interview भी खराब हो गया था। यह है हमारे सिलसिले के बुजुर्गों की शान।

(40) दिनांक 26–10–1991

सुबह चार बजे यह सपना देखा कि मैं सिकन्द्राबाद गया हूॅ और पूज्य ताऊजी की समाधि पर सलाम पेश किया। देखा कि समाधि हटाई जा रही है, मैने पूज्य हरी भाई साहब

की पत्नी से पूछा तो उन्होंने बताया कि समाधि का विस्तार हो रहा है और बढ़ाई जा रही है। उसके बाद ऑख खुल गई।

नोट:— करीब 20—21 वर्ष बाद यह सपना सत्य हुआ है।

(41) दिनांक 28.10.1991

आज सुबह चार बजे यह ख्वाब देखा कि पूज्य बाबूजी महाराज आये हैं और मुझे सेठ भाई साहब तथा पटना वाले Dr. Karan को लेकर पूज्य लालजी महाराज की समाधि पर फतेहगढ़ जाते हैं। हम चारों लोग पूज्य लाला जी महाराज की समाधि पर पैरों की तरफ खड़े होकर पूजा करते है और परम् पूज्य लालाजी महाराज साहब मुझे तथा सेठ भाई साहब को बहुत आशीर्वाद देते हैं Dr. Karan के गले में गेंदे के फूलों की माला डाल देते हैं और पूज्य बाबूजी को गले लगा लेते हैं। पूज्य बाबूजी खूब रो रहे हैं और प्रेम मगन है, उसी समय ऑख खुल गई।

(42) दिनांक 01.08.1992

आज दिनांक 01—08—1992 को करीब 2 बजे रात एक ख्वाब देखा कि किसी जगह सतसंग हो रहा है। जहॉ सतसंग हो रहा है, वह जगह ऐसी है, जहॉ मकान भी बने हैं, टेन्ट भी लगे हैं और बाग—बगीचा भी है। सतसंगी भाई टोली में अलग—अलग रूके हैं। बुजुर्गो में वहॉ पर मैंने पूज्यपाद लालाजी महाराज, पूज्य चच्चाजी महाराज, पंडित मिही लाल जी, श्री कृष्ण स्वरूप जयपुर वाले तथा एक—दो लोग जिनका

ध्यान नहीं है,देखा। सभी बुजुर्ग सब भाइयों से मिल रहे हैं और बड़े प्रसन्न दिखाई दिये। पूज्य डा0 चतुर्भुज सहाय जी मुझसे बातचीत किये और काफी प्रसन्न थे। पंडित मिही लाल जी ने अपने दोनो लड़कों से परिचय कराया। मैंने उनको बताया कि मैं आपके दोनों लड़कों से लखीमपुर खीरी में मिल चुका हूँ।

उसके बाद मैं एक मकान में जाता हूॅ, जहॉ पर एक कमरे में चारपाई पर सरदार जी भाई साहब तथा 3–4 और लोग भी बैठे थे, जिनके बारे में मुझे याद नहीं है। सरदार जी भाई साहब कुर्ता–पायजामा तथा पगड़ी बाँधे हैं। उसी तरफ एक कमरे में किशनू मामा तथा पूज्य बाबूजी का फोटो एक चौकी पर रखकर फूल चढ़ा रहे हैं। उनकी पीठ सरदारजी भाई साहब की तरफ है। वह मुझसे कहते हैं कि थोड़ी देर ध्यान लगा लें। मैं उनसे कहता हूॅ कि फोटो के साथ ध्यान लग जाता है। फोटो हटाकर ध्यान लगाना अच्छा होता है। उसके बाद मैं कमरे से बाहर जाता हूॅ। सतसंगी भाइयों की एक टोली बिल्कुल पीले कपड़े पहने है और सिर पर पीली ही टोपी लगाये हुए हैं। उन लोगों से पूछने पर कि पीले कपड़े क्यों पहने हैं तो जवाब देते हैं कि आज हम लोग पूज्य पाद लालाजी महाराज साहब का जन्म दिन मना रहे हैं। मैं उन लोगों से कहता हूॅ कि न आज बसंत हैं और न ही पूज्य पाद लालाजी महाराज का जन्म दिन ही। वो कहते हैं कि हम रोज ही ऐसे मनाते हैं। जब मैं उनसे बात करके आ रहा हूॅ तो

पूज्य ताऊजी से फिर भेंट होती है, वह बहुत ही खुश है और बहुत आशीर्वाद दे रहे हैं और कहते हैं कि सब जगह घूम–घूम कर देख लो। जहॉ खाने की व्यवस्था है, वहॉ हापुड़ वाले राम अवतार जी को देखा कि वह व्यवस्था कर रहे हैं। जहॉ खाना खिलाया जा रहा है, वहॉ गोरखपुर के पाल को देखा। वहॉ से जब पुनः उस मकान की ओर जा रहा हूॅ तो देखा पूज्य सरदार जी भाई साहब दरवाजे से बाहर आ रहे हैं। कपड़ों में कुर्ता तहमत था और सिर पर पगड़ी बंधी थी और कुछ सुस्त दिखाई पड़े। सभी बुंजुर्ग भी टोलियों में इधर–उधर मिल रहे हैं और भी सतसंगी भाई मौजूद थे जिनका ख्याल नहीं। उसके बाद नींद खुल गई, तबियत काफी हल्की रहीं। स्वप्न का आशय समझ न सका।

(43) दिनांक 03—07—1992 को भी रात में इसी प्रकार का सपना देखा कि वही सतसंग हो रहा है और याद नहीं।

(44) दिनांक 11.08.1992 की सुबह 3–4 बजे यह ख्वाब देखा कि परम पूज्य बाबूजी मैं और मेरी पत्नी और मेरा पुत्र अतुल कहीं सतसंग में जाने के लिए रेलवे स्टेशन पर आते हैं। किस रेलवे स्टेशन पर आते हैं, यह याद नहीं, परन्तु यह याद है कि हम लोगों को काशी विश्वनाथ से जाना है। स्टेशन पर पता चलता है कि गाड़ी कई घन्टे संजम है। कुली ने बताया कि एक और गाड़ी आ रही है, आप लोग उसी पर चले जाइये। जब वह गाड़ी आयी तो इंजन के पीछे एक बोगी

में किसी की लाश रखी हुई थी। बोगी खुली हुई थी और लाश चारो ओर से गेंदा, गुलाब और बेला से ढ़की हुई थी। यह नहीं मालूम कि वह किसकी लाश है परन्तु फूलों की खुशबू से तमाम प्लेटफार्म भरा हुआ था। गाड़ी के डिब्बों में जगह–जगह कुछ सतसंगी भाई थे, जिनसे परिचित था पर याद नहीं कौन–कौन। इसके अतिरिक्त और लोग भी थे, जिनको मैं नहीं जानता। पूज्य बाबूजी के आदेशानुसार हम लोग भी एक डिब्बे में बैठ गये। हम लोगों के पास तीन सामान था। एक काला बक्सा, एक बैग और एक कंडी थी। मैं अतुल से कह रहा था कि बैमबा कर लो कि हम लोगों का पूरा सामान चढ़ा है कि नहीं। तभी ऑख खुल गई।

(45) दिनांक 17–03–1993

आज सुबह 4:30 बजे ऑख खुली। उठने के पश्चात नहाने के लिए पानी गरम करने का Switch on किया और फिर आकर बिस्तर पर लेट गया। ख्वाब देखा कि भाई नवल सिंह जी व कंवल सिंह जी देहली वाले मेरी चारपाई के पास पड़ी कुर्सियों पर बैठ गये। मैं उनसे कहता हूॅ कि आप लोगों की तो Death हो गयी, आप कैसे आये हैं। वो लोग कहते हैं कि कुछ दिन पहले शर्मा बहन जी से भेंट हुई थी और उन्होने ने हमको बताया कि पूज्य गुरूदेव सबसे ज्यादा आपको प्यार करते थे, इसलिए हम लोग मिलने आये हैं। मैं उनसे कहता हूॅ कि आप लोगों के आने से बड़ी खुशी हुई। वह आपको कहॉ

मिली थी, क्या वह नहीं आयी है। यह कह ही रहा था कि लाज का दरवाजा खोल कर शर्मा बहन जी सफेद साड़ी व जूता पहने हाथ में किताब लिये आती हैं। मैं उनसे कह रहा हूँ कि आपने इन लोगों से क्या कह दिया, तब वह कहती हैं कि मैं पूज्य गुरूदेव से लिखा लायी हूँ और चरित्र पराग के पीछे लिखा हुआ मुझे कुछ दिखाती हैं। उनके हाथ का लिखा हुआ व उनके दस्तखत देख कर मैं बहुत खुश होता हूँ और अभी तक उनका दस्तखत तथा उनके हाथ का लिखा हुआ बराबर मेरे दिमाग में घूम रहा है। उसके बाद खटपट होने के कारण मेरी नींद खुल गई। दिन भर पूज्य ताऊजी की बड़ी याद आती रहीं।

(46) दिनांक 24—04—1993

आज सुबह 3 व 4 बजे के बीच एक ख्वाब देखा कि मैं और अजय रिवर बैंक कालोनी के मकान के सम्बन्ध में किसी से मिलने जा रहे हैं। रास्ते में बहुत भूख लगी। मैंने खरबूजा खरीदा और हाथ से तोड़कर आधा मैंने और अजय ने आधा खाया और हम लोग एक मकान में पहुॅचे, वहॉ हम लोगों को एक कमरे में बैठा दिया गया। थोड़ी देर बाद एक Lady ने आकर कहा कि आइये राय साहब सालिग राम साहब से मिलिये। मैंने अचम्भे से पूछा, वह कहॉ हैं, उन्होने बताया कि वो पूजा कर रहे हैं। पहले आप लोग इस मंदिर के दर्शन कर लीजिये। यह राय साहब का असली मंदिर है। वहॉ बीच में

एक बहुत बड़ी श्री राधा–कृष्ण की फोटो थी और एक तरफ पूज्य लालाजी के सर के पीछे प्रकाश वाली फोटो, एक तरफ पूज्य चाचाजी महाराज की फोटो थी और एक और फोटो थी, जिसमें लालाजी महाराज खड़े थे। उनके एक तरफ पूज्य ताऊजी तथा एक तरफ पूज्य बाबूजी बैठे थे। इसके अलावा एक और फोटो थी, जिसमें पूज्य लालाजी महाराज एक साहब से बात कर रहे हैं। मैं उन स्त्री से पूछता हूॅ कि मैं तो और सब को पहचानता हूॅ, बस इनको नहीं पहचानता, जिनसे पूज्य लालाजी महाराज बात कर रहे हैं। वह Lady बताती है कि यह पूज्य बाबू बृजमोहन लालजी हैं और कहती है कि ये सब उस मालिके कुल की एक ही हस्ती के विभिन्न रूप हैं। मैं उनसे पूछता हूॅ कि राय साहब सालिग राम जी कहॉ है। वह हम लोगों को एक दूसरे कमरे में ले जाती हैं, जहॉ पूज्य राय साहब सालिग राम जी ऑखें बन्द किये पदमासन पर बैठे हुए हैं। हम दोनों जनों ने उनके पैर छुए, वह मुस्कराये और बहुत आशीर्वाद दिया। ऑख खुल गयी।

(47) दिनांक 01–05–1993

आज सुबह 5 बजे के करीब सपना देखा कि मैं पूज्य ताऊजी को कटिया लेकर गया हूॅ, वहॉ पर कोठे की वह सब जगह दिखा रहा हूॅ, जहॉ हमारे बाबा रहते थे। उनसे उस गुलिया आम के बारे में तथा स्कूल के बारे में बता रहा हूॅ और वे बहुत खुशी–खुशी सब सुन रहे हैं। मैं उनसे कहता हूॅ कि बस थोड़ी देर और रूके, बस बाबाजी आ ही रहे होंगे। वहॉ

पर थोड़ी देर में बाबू चाचा, गंगादीन चाचा, ...भाई साहब तथा आशा तथा उनकी अम्मा जी भी आती हैं। ये सब लोग ताऊजी को प्रणाम करते हैं। पूज्य ताऊजी अम्माजी से कहते हैं देखा दिन्ना हमको कहॉ–कहॉ घुमाता है। मैंने अम्माजी से पूछा आप पिताजी को नहीं लायी तो वह मना कर देती हैं। वहॉ पर मैंने अन्सारी साहब, ठाकुर साहब शिव नरेश सिंह, सरदार जी और मिस्त्री जी को देखा। मैं ताऊजी से कह रहा हूॅ कि हमारे बाबा को कैंसर का रोग था, वह बहुत कमजोर हो गये हैं। क्या उन्हें आप पहचान लेंगे। वह कहते हैं कि एक मर्तबा हम तुम्हारे बाबूजी के साथ उनसे मिले हैं। मैं पूज्य ताऊजी से कह रहा हूॅ कि देखिये वे नहीं आये। वह बहुत दुखी होते हैं और कहते हैं कि वह बहुत हल्का आदमी निकला, तब तक मुझे ख्याल आता है कि पूज्य सेठ भाई साहब भी तो नहीं आये हैं। मैं चारों तरफ उनको देखता हूॅ। परन्तु इतने में बाबा आ जाते हैं। पूज्य ताऊजी बड़े प्रेम से उनसे मिलते हैं। बाबाजी उनसे किसी नये स्कूल खोलने की बात कर रहे हैं। इसलिए हम यहॉ आये हैं। इस स्कूल का नाम श्याम लाल या तुम्हारे नाम पर ही रक्खेंगे। मैं देख रहा हूॅ कि कोठे के एक तरफ ईटो की एक बिल्डिंग सी बन रही है। पूज्य ताऊजी कहते हैं चलो बेटे नन्हें बड़ी देर हो गयी और हम दोनो वहॉ से चल दिये। उसी समय ऑख खुल गयी।

(48) दिनांक 22–05–1993

आज दिनांक 22–05–1993 को सुबह चार बजे यह ख्वाब देखा कि मेरे यहॉ कोई बहुत बड़ा उत्सव हो रहा है, जिसमें बहुत से सतसंगी भाई एवं मेरे अपने रिश्तेदार आये हैं। पूज्य ताऊजी भी उस उत्सव में शामिल होने आये हैं। उनके साथ कई बुजुर्ग ऐसे हैं, जिनको मैं नहीं जानता। मैंने उन सबको किसी और जगह रूकवाया ताकि उनको भीड़–भाड़ में तकलीफ न हो। पूज्य बाबूजी, बाबू चाचा एवं गंगादीन चाचा बाहर वाले Guest Room में रूके हुए हैं। जब उत्सव खत्म हो जाता है तो मेरे अपने रिश्तेदार जाने लगते हैं। तब परम पूज्य ताऊजी को अपने घर लाता हूॅ और वे मेरे ही कमरे में मेरी मशहरी पर आकर लेट जाते हैं और मैं जल्दी–जल्दी कमरे में बिखरे हुए सामान को ठीक करने लगता हूॅ। उसी समय पूज्य ताऊजी की बेटी शकुन्तला बोबो, उनके पति उनके दो बच्चे उसमें से एक छोटा भैय्या, दूसरे का ध्यान नहीं। शकुन्तला बोबो मशहरी पर पायताने बैठ जाती हैं और पूज्य ताऊजी से खूब लड़ती है और कहती हैं कि मैंने इतनी बार कहा आप कभी नहीं आये। पूज्य ताऊजी खूब हॅस रहे हैं और उनसे कह रहे हैं कि बेटी आने को तो मैं अब भी नहीं था परन्तु दिन्ना की वजह से सब बुजुर्गों के साथ आना पड़ा। अब सब चले गये हैं दिन्ना ने कहा कि कुछ दिन मेरे घर पर रह लीजिए, इसलिये रूक गये हैं। पूज्य ताऊजी बहुत खुश हैं

और हॅस—हॅस के बातें कर रहे हैं। मुझे सब वही पुराना वातावरण जबकि हम लोग पूज्य ताऊजी के पास बैठकर सिकन्दराबाद में हॅसी करते थे, बातें करते थे, याद आने लगे। शकुन्तला बोबो ताऊजी से पूछ रही हैं कि अब आपका क्या प्रोग्राम है। पूज्य ताऊजी उनसे हॅस कर कह रहे हैं कि देखो बेटी दिन्ना मुझे कहॉ—कहॉ ले जाता है। उसी समय कमरे में पूज्य बाबूजी, बाबू चाचा गंगादीन चाचा आते हैं। पूज्य ताऊजी उन लोगों को बैठने को कहते हैं और मेरी ऑखें खुल जाती है।

(49) दिनांक 29.07.1993

आज दिनांक 29—07—1993 को सुबह चार बजे यह ख्वाब देखा कि अमीनाबाद वाले श्री कृष्ण कुमार शुक्ला के यहॉ सतसंग में मैं गया हूॅ। वहॉ पर मेरी गद्दी के बगल में उनके स्वर्गीय पिता जी बैठे हुए हैं और उनके गले में खूब फूल की मालाऍ पड़ी हैं। मैं उनको देखकर एक दम आश्चर्य में रह जाता हूॅ। वह बड़े तपाक से उठ कर मिलते हैं। जब मैं उनसे मिल रहा हूॅ तो दूसरी तरफ पूज्य ताऊजी और पूज्य बाबूजी तथा पूज्य दादाजी (पूज्य पं0 हरबंश लाल त्रिपाठी) बैठे हुए हैं। मैं पूज्य ताऊजी तथा पूज्य बाबूजी के पैर छूता हूॅ। पूज्य ताऊजी कहते हैं कि मुझे मालूम था कि तुम यहॉ आओगे, इसलिए मैं भी आया हूॅ और उनके (पिताजी) तरफ इशारा करके कहते हैं कि इनको आज सिलसिले के बुजुर्गो

ने अपना लिया। मुझसे खूब हॅस–हॅस कर बात कर रहे हैं और बहुत ही खुश हैं। पूज्य बाबूजी कहते हैं कि देखो हमारे यहॉ ओम शान्ति की यही तासीर है कि इतने साल पहले मृत्यु हुए भी अपने सिलसिले के बुजुर्ग अपनाते हैं और लोगों की मोक्ष हो जाती है। अब चाहे इनके लिए ओम शान्ति का जाप करों या न करो। दादाजी (पूज्य हरवंश लाल त्रिपाठी) एक तरफ खामोशी से बैठे हैं। सतसंग हो रहा है। जिन लोगों के नाम मुझे याद है, बाजपेयी जी (टी0 ओ0),मिश्रा जी, केशव बाबू ,बाबू राम जी। सतसंग समाप्त होने पर शुक्ला जी के पिताजी बहुत खुशी और तपाक से मिलते हैं और ऑख खुल गई। कुछ भी हो, बुजुर्गों की दया थी।

(50) दिनांक 14—12—1993

आज सुबह चार बजे यह ख्वाब देखा कि समस्तीपुर में सतसंग हो रहा है। वहॉ पर सेठ भाई साहब और हम गये हैं। सतसंग में बहुत से सतसंगी बाहर के एवं समस्तीपुर के आए हुए हैं। जिनका मुझे याद है वो बाबू रामदास जी, डा0 कर्ण, श्यामनन्दन जी, राज किशोर, जगदीश भाई साहब तथा अन्य भाई भी आये हैं पर कारू लकड़ा कहीं नहीं दिखाई दिए। मैंने एक साहब से पूछा कि कारू लकड़ा कहॉ गए हैं तो उन्होने बताया कि वो गाजियाबाद गए हुए हैं ताकि अम्मा जी से बेसन की सब्जी और अरूई की सब्जी लेने गए हैं तथा अच्छे पानी का बंदोबस्त करने गए हैं। क्योंकि पूज्य बाबूजी को

समस्तीपुर का पानी माफिक नहीं आता। इतने में कारू लकड़ा जी दोनों सब्जियॉ गरम–गरम और थरमस में पानी लेकर आते हैं और उसी कमरे में जहॉ बाबूजी रूके हुए हैं ले जाते हैं। पूज्य बाबूजी उनसे कहते हैं कि तुम क्योंकि बराबर खत लिखते रहते हो, इसीलिए तुम्हारी निस्बत हम सबसे इतनी जल्दी जुड़ गयी। हम लोग भी सब वहॉ खड़े हुए हैं। पूज्य बाबूजी कारू लकड़ा साहब को बहुत आशीर्वाद देते हैं। तभी ऑख खुल गयी।

(51) दिनांक– जनवरी, 1994

आज दिनांक 31–01–1994 को रात में यह सपना देखा कि कहीं बहुत बड़ा सतसंग हो रहा है, जहॉ पूज्य बाबूजी एवं माताजी भी हैं और हजारो लागों की तादाद उस सतसंग में है। पूज्य बाबूजी एक चारपाई पर बैठे हुए हैं जहॉ वह भण्डारे के दिनों में बैठते थे। मैं और सेठ भाई साहब नहा धोकर सतसंग में जाने की तैयारी कर रहे हैं। मैं भाई साहब से कह रहा हूॅ कि मैं नहा धोकर तैयार हूॅ, आप भी जल्दी तैयार हो जाइये। भाई साहब नहाने चले जाते हैं और मैं पूज्य बाबूजी के पास चला जाता हूॅ। वहॉ पर कोई व्यक्ति जहॉ तक ध्यान पड़ता है कि कृष्ण बिहारी त्रिपाठी मुझसे आकर मिलते हैं कि बहुत से लोग रात में श्री ओ0पी0 सिंह के यहॉ आकर रूक गये हैं और वह लोग सुबह सतसंग में आएंगे। मैं उनसे पूछता हूॅ कि क्या वहॉ मास्टर साहब व जय प्रकाश का

पूरा परिवार तथा अन्य भी कई लोग हैं। मैं अपने मन में सोचता हूँ कि उन लोगों को आते–आते 9 या 10 बज जायेगा। पूज्य बाबूजी कहते हैं कि बहुत अच्छा हुआ वो लोग वहॉ रूक गये। इतने लोगों में पाखाने व नहाने धोने की दिक्कत होती। हम लोग बात ही कर रहे थे कि तब तक देखा बाराबंकी के सभी लोक सतसंग में शामिल होने आ गये। पूज्य बाबूजी सेठ भाई साहब को बुलाने को कहते हैं और कहते हैं कि सतसंगं शुरू करो। पूज्य बाबूजी हम लोगों से कह रहे हैं कि यह अच्छा हुआ कि बाराबंकी का सेन्टर कायम हो गया। उस सतसंग में जिन लोगों का मुझे ध्यान है उन लोगों में जगदीश भाई साहब, प्रोफेसर राय साहब, गोरखपुर के कृष्ण बिहारी त्रिपाठी, बाराबंकी के सब लोग, अजय, बीना और ज्योति, बाजपेयी जी (T.O.), डा0 कर्ण तथा अन्य बहुत से भाई, जिनका ठीक से ध्यान नहीं मौजूद है। सतसंग समाप्त होने पर पूज्य बाबूजी ने कोई चीज लाने को कहा, उसे लाने के लिए मैं अपने लखनऊ वाले घर पर आया। यहॉ भी काफी भीड़ थी और मेरी कार के पास किसी को खड़ा देखा और एक व्यक्ति जिसको मैं नहीं जानता, वह मुझसे कह रहा है कि मुझे भूख लगी है और अपने खाने की जूठन दे दो। इतने में ऑख खुल गई।

(52) दिनांक 01–02–1994

आज रात को यह ख्वाब देखा कि कहीं बहुत बड़ा सतसंग हो रहा है और हम और सेठ भाई साहब सतसंग करा

रहे हैं। सतसंग समाप्त होने पर मैं और सेठ भाई साहब अपने कमरे में जहॉ हम लोग रूके हैं, जाते हैं। वहॉ पर देखा कि चारपाई पर पूज्य बाबूजी सिरहाने की तरफ और पायताने की ओर मदन भैया बैठे हैं। हम लोग पूज्य बाबूजी को देख कर बहुत खुश होते हैं और उनके तथा मदन भाई साहब के पैर छूते हैं। पूज्य बाबूजी कहते हैं कि हम मदन को यहॉ तक पहुॅचाने आये हैं और कहते हैं कि अब तुम लोगों की जिम्मेदारी है। एक अजब प्रेम का दरिया बह रहा है। मैं मन में सोचता हूॅ कि पाण्डाल में चलकर सभी भाइयों को बता दूॅ कि पूज्य बाबूजी आये हैं और वह सब लोग मिल लें। मैं और भाई साहब दोनों लोग पाण्डाल की तरफ जा रहे हैं। मगर जब पाण्डाल में वापस आते हैं तो पूज्य बाबूजी वापस जा चुके होते हैं और केवल मदन भैया ही मिलते हैं। पूछने पर मदन भैया प्रेम में रो–रो कर बता रहे हैं कि भाई चले गये और मुझे तुम लोगों के सुपुर्द कर गये। इतने में ऑख खुल गई।

(53) दिनांक 14–02–1994

आज दिनांक 14–02–1994 को सुबह शिवपुर डियर बलिया के बसंत के भण्डारे के समय सुबह के वक्त पूजा में यह साफ दिखाई पड़ा कि एक सफेद कपड़े में लिपटी हुई डेड बाडी हम लोगों के सामने रख दी और उस पर पूज्य बाबूजी ने दो गुलाब के फूल रख दिये। ऐसा कई मर्तबा दिखाई पड़ा। एक मर्तबा तो ऐसा लगा कि वह बाडी पूज्य

बाबूजी की है और पटना के सब लोग दिखाई पड़े। मेरा अपना ख्याल यह हुआ कि पटना के काफी लोग आये हुए हैं। इसलिए यह लोग बैठे दिखाई दिये हैं।

नोट :– बाद में शशिधर भाई के बेटे से पता चला कि डा0 कर्ण साहब के छोटे भाई की मृत्यु उसी रोज हुई थी। पूज्य बाबूजी का फूल चढ़ाना इस बात को Indicate करता हैं कि उनका आखिरी दम ख्याल, पूज्य बाबूजी के चरणों में था और उनको बुजुर्गो ने बुला लिया। वैसे तो यह सपना ही है।

(54) 28.02.1994

रात में कोई स्वप्न देखा, याद नहीं, परन्तु आज सुबह से ही बुजुर्गो की बड़ी दया रही। सुबह जब मैं बाथरूम गया तो कई मर्तबा पूज्य लालाजी महाराज और स्वामी राम कृष्ण परमहंस के दर्शन हुए। एक मर्तबा तो ऐसा लगा कि दोनों ही लोग मेरे अन्दर समा गए हैं। तबियत बड़ी शान्त थी और बहुत आनन्द मिल रहा था। नहाने के बाद पूज्य ताऊजी, पूज्य बाबूजी और पूज्य फूफा जी (सेवती प्रसाद जी) की दया बरस रही थी। पूजा में भी बहुत तबियत लगी। उठने का जी नहीं चाहता था।

(55) दिनांक 15—03—1994

आज दिनांक 15—03—1994 दिन मंगलवार की सुबह 4 बजे के करीब यह ख्वाब देखा कि गाजियाबाद में भण्डारा हो रहा है और पाण्डाल खचाखच आदमियों से भरा हुआ है।

पूज्य सेठ भाई साहब पाण्डाल में बैठ गये हैं और मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं भी पाण्डाल में जाने की तैयारी में हूॅ और गैलरी से होता हुआ हाल में पूज्य बाबूजी की समाधि पर माथा टेक रहा हूॅ। सेठ भाई साहब ने प्रोफेसर राय साहब को मुझे देखने के लिए भेजा कि मैं क्या कर रहा हूॅ। प्रोफेसर राय साहब ने मुझे माथा टेकते हुए देखकर हाल में एक तरफ खड़े हो गये। जब मैं माथा टेक कर उठा तो मैंने देखा कि दो लोग भी मेरे पीछे एक तरफ खड़े हो गये हैं। वह लोग मेरे पैर छूते हैं और कहते हैं कि भाई साहब 12 July को मेरी तबियत बहुत खराब थी और बुखार था और इसीलिए मैंने सेठ भाई साहब को भला–बुरा कहा और उनके विरूद्ध कहा। अभी यही बातचीत हो रही थी कि क्या देखता हूॅ कि बाहर वाले बरामदे में पूज्य बाबूजी आते हैं और उन लोगों को छड़ी से मारना शुरू कर दिया और कहा कि तू फिर यहॉ आ गया। मैं अभी तुझे ठीक करता हूॅ। पूज्य बाबूजी उनको मार–मार कर गेट के बाहर निकाल देते हैं। प्रो0 राय साहब सबसे कहने के लिए जाते हैं कि पूज्य बाबूजी आये हैं। मैं भी पूज्य बाबूजी के साथ पंडाल की तरफ जा रहा हूॅ। वहॉ अशोक के पेड़ के पास देखता हूॅ कि पूज्य ताऊजी, पूज्य बाबूजी तख्त पर बैठ जाते हैं और हम लोग नीचे। पूजा शुरू होती है और तभी ऑख खुल जाती है। सपने का कुछ तो मर्म था परन्तु लिखना उचित नहीं है।

(56) दिनांक 19—04—1994

हम लोग दिनांक 19—04—1994 को रीवर बैक कालोनी गये थे। खाना खाकर थोड़ी देर बाहर वाले कमरे में लेट गया। करीब तीन बजे एक इतनी अच्छी खुशबू तमाम जिस्म से आने लगी। बार—बार मैं अपने कपड़ों को सॅूघता था, इस ख्याल से कि शायद किसी ने बेहतरीन किस्म का सेन्ट छिड़क दिया हो या किसी ने बहुत अच्छी अगरबत्ती जलाई हो। पूॅछने पर ज्ञात हुआ कि कहीं कोई अगरबत्ती नहीं जल रही थी और न ही कपड़ों में सेन्ट था। क्योंकि मैं तो सुबह से यही कपड़े पहने था। मैं घर से आकर बाहर गेट पर खड़ा हो गया। खुशबू तब भी थी, वह इतनी तेज थी कि सभी को इसका अनुभव हुआ। वह खुशबू शाम 7 बजे तक बराबर बनी रही।

21 तारीख को दोपहर में जब मैं अमर (जज साहब) के यहॉ गृह प्रवेश में गया था फिर अचानक उसी तरह की खुशबू दिन में 11 बजे आने लगी। यह खुशबू उस दिन भी एक घन्टे तक बनी रही। इन दो वक्त के पूर्व भी एक दफे इसी तरह का अनुभव किया था, परन्तु समझ में नहीं आया। किसी किताब में पढ़ा था कि जब कोई अच्छी आत्मा निकट होती है तो उसी की खुशबू आती है।

(57) दिनांक 23—06—1994

आज दिनांक 23—06—1994 की रात को ख्वाब देखा कि लखनऊ वाले घर पर सतसंग हो रहा है, जिसमें बहुत

आदमी आये हुए हैं। घर में जितनी दरिया और कम्बल थे, बिछा दिये गये हैं, पर फिर भी लोग खड़े हैं। यादव जी मुझसे पूँछते हैं, अब क्या बिछायें। मैं उन्हें बताता हूँ कि वहाँ एक तिकोना सा अच्छा बोरा पड़ा है, उसी को बिछा दें। वह लाकर उसे बिछा रहे हैं। बाद में सभी लोग गाजियाबाद में जहाँ भण्डारे में पंडाल लगता है वहाँ पण्डाल में बैठ गये हैं। लोगों का मुझे याद है वो श्री सरदार जी भाई साहब, राधे एवं गोपाल भाई साहब एवं उनके परिवार, गौतम जी, सतीश बाबू और बहुत से लोग और भी हैं। हमारे यहाँ के सभी सतसंगी भाई मौजूद हैं। पूज्य ताऊजी की बड़ी लड़की शकुन्तला बोबो और उनका लड़का भैय्यन भी हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि परम पूज्य ताऊजी की जन्म शताब्दी मनाई जा रही है।

मैं पूज्य ताऊजी के जीवन के बारे में सब लोगों को बता रहा हूँ। मैं अपने बोलने में यह कह रहा हूँ कि आज हम सब लोग यहाँ परम पूज्य ताऊजी की जन्म शताब्दी मनाने के लिए इकट्ठा हुए हैं। बहुत से भाई यहाँ ऐसे हैं, जिन्होंने उस बेमिसाल हस्ती के दर्शन किए हैं। बहुत से ऐसे भी है जिन्होंने उनकी सोहबत उठाई है। कुछ ऐसे भी है जो उनके प्रेम के पात्र रहे हैं। बहुत से ऐसे हैं जिन्होने उनका दर्शन जीवन काल में नहीं किये हैं परन्तु निर्वाण के पश्चात आपने दया करके उन्हें दर्शन भी दिये हैं, मार्ग दर्शन भी किया है और हर तरह से कृपा भी किया है।

ऐसे ही एक भाई श्री जमुना प्रसाद राय यहॉ मौजूद हैं, जिन्होंने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया और आप बीती बताई। श्री जमुना प्रसाद राय और राजेन्द्र प्रसाद मिश्रा जो उस जलसे में थे, फूट–फूट कर रोने लगे। सभी प्रेम से विहवल हैं। अपने सत्संग में मैं ने यह कहा कि हममें से कोई भाई ऐसा न बन सका, जैसा वह चाहते थे। हम सबको छोटी–छोटी बातें छोड़कर उनकी जन्म शताब्दी पर संकल्प लेना चाहिये कि जैसा वह चाहते थे, वैसा बने। इतना कहना था कि राधे भैया फूट–फूट कर रोने लगे और प्रेम विभोर हो गये। रात में पुनः यही ख्वाब देखा, हो सकता यह मेरा अपने ही ख्याल का असर हो, पर बड़ी शान्ति रही और तबियत खुश थी।

(58) दिनांक 03–07–1994

आज 03–07–1994 को रविवार की सुबह यह ख्वाब देखा कि गोरखपुर सतसंग हो रहा है और जहॉ पर बहुत से सतसंगी भाई मौजूद हैं। गोरखपुर के सभी भाई ज्यादातर दिखाई पड़े। परन्तु जिनका मुझे ख्याल है, वह यह लोग है–राजेन्द्र मणि त्रिपाठी, कृष्ण बिहारी उनकी पत्नी, बेटा, बेटी तथा दामाद, शर्मा, घनश्याम जयसवाल मास्टर और भी लोग हैं। पर इतनो का मुझे खूब ख्याल है। परम पूज्य बाबूजी पधारे हैं। वो और सेठ भाई साहब मेरा इन्तजार कर रहे हैं कि मैं आ जाऊॅ और पूजा शुरू करें। मैं सोच रहा हूॅ कि सभी लोग आये हैं। केवल बाबू रामदास जी नहीं आये हैं और उन्हीं

के इन्तजार में बाहर खड़ा हुआ हूँ कि वो भी आ जायें तब चला जाये। पूज्य बाबूजी ने किसी से मुझे बुलाया और कहलाया कि मैं आ कर बैठूॅं, क्योंकि सतसंग में देर हो रही है। अब भी बाबू रामदास जी नहीं आ पाये और मैं पूज्य बाबूजी के पास बैठ गया और सतसंग शुरू हो गया। सतसंग समाप्त होने पर भी मुझे यह बराबर ख्याल आता रहा कि बाबू रामदास जी की कोई और खबर नहीं मिली, वह क्यों नही आये।

नोट:– आज दिनांक 07–07–1994 को बाबू रामदास जी का पत्र जो कि उन्होंने दिनांक 03–07–1994 को लिखा था, मिल गया, जिसमें उन्होने लिखा था कि वे सायटिका के दर्द से पीड़ित हैं और अकेले सफर नहीं कर सकते और इसी कारण इस बार 22–07–1994 को गुरू पूर्णिमा में आने में सन्देह है। उसमें उन्होने यह भी लिखा है कि अगर वे उन्हें अपने साथ ले चले तो बड़ी कृपा होगी, जिससे वह गुरू पूर्णिमा के सतसंग में शामिल हो सके। जब ह्रदय साफ हो जाता है तो एक का ख्याल दूसरे पर जरूर असर करता है और वह उसे Receive करता है।

(59) दिनांक 12–07–1994

आज सुबह 12–07–1994 दिन मंगलवार 4 बजे यह ख्वाब देखा कि फतेहगढ़ पूज्य लालाजी की समाधि पर बहुत बड़ा सतसंग हो रहा है, जिसमें खूब बड़े–बड़े टेन्ट लगे हैं।

रोशनी का प्रबंध और लाखों लोग बैठे हैं। एक तरफ तख्त का मंच बना है, जिस पर खूब सफेद चादर, पीली मसन्द लगी है। मंच पर मैं सेठ भाई साहब, बाबू रामदास जी, दिनेश जी, ओंकार भाई साहब बैठे हैं। मैं बीच में बैठा हूॅ। मेरी बाई ओर सेठ भाई साहब, उसके बाद बाबू रामदासजी, दिनेश जी, तथा ओंकार भाई साहब बैठे हैं। मैं प्रवचन दे रहा हूॅ और समस्त भाइयों को यह बता रहा हूॅ कि हमारे यहॉ का यह तरीका है कि पहले अपने हृदय के अन्दर ईश्वर का प्रेम खूब भर लो और फिर उस ईश्वर के प्रेम को दूसरों में बॉटो। प्रेम ही असली चीज है। यदि कोई ऐसा शख्स जिसके खुद के हृदय में ईश्वर का प्रेम नहीं है और वह इस काम को करता है तो यह केवल संस्था का प्रचार है, सच्चा परमार्थ नहीं है, जिसकी हम लोगों से अपेक्षा हैं। दूसरे हमें यह भी चाहिए कि हम अपने गुरू के अलावा अपने अन्य बुजुर्गो की भी बहुत इज्जत करें और प्रेम करें। बगैर इसके उनसे फायदा होना सम्भव नहीं है। यहॉ बहुत से ऐसे सतसंगी भाई भी है, जो कि पूज्य लालाजी के अलावा किसी और बुजुर्ग का नाम भी नहीं जानते। बहुतेरे तो ऐसे हैं जो सिवाय अपने गुरू को छोड़ कर पूज्यपाद लालाजी साहब से भी वाकिफ नहीं है। जहॉ हम लोग बैठे हुये हैं, वहॉ मंच के सामने की ओर पूज्यपाद लालाजी, पूज्य चच्चाजी, पूज्य ताऊजी, पूज्य बाबूजी, पूज्य श्याम बिहारी लाल जी, और एटा वाले डा0 चतुर्भुज सहाय

जी का बड़ा–बड़ा फोटो लगा है, जिनका मुॅह भाइयों की ओर है। जब मैं बोल रहा हूॅ, पीछे बहुत से बुजुर्ग खड़े हैं, जो फूल थोड़ी–थोड़ी देर में फेंक रहे हैं, जिसमें से कुछ हम लोगों पर गिरते हैं, बचे हुये फोटो के सामने गिर रहे हैं। मेरे बाद ओंकार भाई साहब के बोलने का नम्बर है, आपस में लोग कह रहे हैं कि बड़े सरल ढंग से समझा दिया हैं। लोग खुश हैं। मैं पूज्य श्याम बिहारी लाल जी साहब के बड़े लड़के से पॅूछ रहा हॅू कि अगर आपके पास कोई Photo उनका हो तो दे दें, जिससे Group फोटो में उनका नाम लिखवा दॅू। इतने में नींद खुल गई।

(60) दिनांक 14–07–1994

आज दिनांक 14–07–1994 की सुबह 4 बजे यह ख्वाब देखा कि कोई दौड़ता हुआ आया और मुझसे कहा कि पूज्य ताऊजी आ गये। मैं उससे पूछता हॅू कि सेठ भाई साहब, वो कहता है– नहीं, सिकन्द्राबाद वाले ताऊजी और उनके साथ 8–10 लोग हैं। वह जल्दी–जल्दी सोफे की गद्दियॉ ठीक करने लगा। मैंने कहा मशहरी के बिस्तर ठीक कर लो। मैं दरवाजे पर भागा हुआ गया और मैंने देखा पूज्य ताऊजी, पूज्य लालाजी महाराज, चाचाजी महाराज, बृजमोहन लाल जी, मो0 अब्दुल गनी साहब, पूज्य श्याम बिहारी लाल जी, पूज्य बाबूजी, डा0 चतुर्भुज सहाय जी, दो अन्य लोग जिन्हें पहचान न सका। सब आकर लॉन्ज में बैठे। पूज्य लालाजी

महाराज, चाचाजी महाराज, मो0 अब्दुल गनी साहब, सोफे पर बैठे और बाबू बृजमोहन लाल जी, डा0 चतुर्भुज सहाय जी, श्याम बिहारी लाल जी और पूज्य ताऊजी चारो लोग कुर्सियों पर बैठ गये। कुर्सी पर पूज्य ताऊजी के पास मशहरी पर मैं बैठा हूँ। पूज्य ताऊजी बहुत खुश हैं। सामने वाली मशहरी पर मेरी तरफ पूज्य बाबूजी तथा उधर की तरफ वह दो अन्य साहबान बैठे हैं। बाबूजी बहुत अदब से बैठे हैं। पूज्य ताऊजी बहुत खुश हैं और मुझसे कह रहे हैं कि मैं तो परसों ही तुम्हारे यहॉ आया था और उस दिन तुमने पोस्ट मास्टर साहब की फोटो के लिए मुन्ना बाबू से कहा था पोस्ट मास्टर साहब ने कहा चलो हम भी मिल आये और तब श्री अब्दुल गनी साहब ने कहा कि तुम लोग चल रहे हो तो मैं भी चलता हूँ और पूज्य लालाजी महाराज, पूज्य चाचाजी महाराज, बाबू बृजमोहन लाल जी, डा0 चतुर्भुज सहाय और तुम्हारे बाबूजी भी साथ हो लिये। मैं नाश्तें का इन्तजाम कर रहा हूँ और सोच रहा हूँ कि कहीं से पपीता मिल जाये, क्योंकि वह पूज्य ताऊजी को बहुत पसंद है। नाश्ते में केला, सेब, पपीता रखा गया जो सभी बुजुर्गो ने बड़े प्रेम से खाया। मैं तो ज्यादातर पूज्य ताऊजी की तरफ रागिब रहा। चलते समय सभी बुजुर्गो ने बहुत आशीर्वाद दिया। खासकर अब्दुल गनी साहब और पोस्ट मास्टर साहब ने गले लगा कर मुझे बहुत आशीर्वाद दिया। जब गेट पर पहुॅचे तो पूज्य बाबूजी ने आशीर्वाद दिया और

उनके ऑख से प्रेम के ऑसू निकल गये और कहा कि बेटे बहुत भाग्यशाली हो कि सभी बुजुर्ग पूज्य भाई साहब की बदौलत तुमको इतना आशीर्वाद दे गये। बस ऑख खुल गयी। तबियत में इतनी अन्दरूनी शान्ति व खुशी थी, जो कि बयान के बाहर है।

(61) दिनांक 02—08—1994

आज सुबह करीब चार बजे देखा कि कहीं बहुत बड़ा सतसंग हो रहा है। ऊपर गुलाबी और पीले रंग का बहुत सुन्दर टेन्ट लगा है। बहुत से सतसंगी भाई है। गाजियाबाद के भी काफी लोग हैं। बैठे हुए लोगों में जितना मुझे याद है, राम नारायण जी, नन्द जी, राजकुमार सिंह, जय किशन लालाजी एक तरफ बैठे हैं। आगे की ओर लखनऊ के सतसंगी भाई ज्यादातर और अजय, बीना भी बैठे हुए हैं। एक मकान है जहॉ कुछ लोग रूके हुए है। उस मकान में जब जाता हूॅ, देखता हूॅ उस मकान में पूज्य ताऊजी बैठे हैं। उनके एक तरफ सामने की ओर बाबू रामदास जी बैठे हैं, जैसा ख्याल पड़ता है सरदार जी का पुराना घर जो सतसंग भवन था, उसी का कमरा है। जहॉ टेन्ट लगा है, वह शायद जिज्जी का Plot ही है। जहॉ भण्डारा होता है। मैं ताऊजी को देख कर बहुत खुश होता हूॅ, पैर छूता हूॅ, वह बहुत प्रसन्न होते हैं और अपने पास बैठा लेते हैं और खाने के लिए प्रसाद देते हैं। उनसे मिलने के पश्चात दूसरे कमरे में जाता हूॅ, जब देखता

हूँ कि बाबू श्याम नन्दन जी, कारू लकड़ा, M.S. Verma पीले कपड़े पहने हैं। उनके परिवार के अन्य लोग भी हैं। बीच में जैसे कोई कथा या हवन की तैयारी हो रही है, वैसे आम की लकड़ी जलाकर हवन हो रहा है। मैं श्याम नन्दन जी से व कारू लकड़ा से पूँछता हूँ, वो कहते हैं कि श्याम नन्दन जी की लड़की की शादी है और पूज्य ताऊजी ने हम सबको पीले कपड़े पहनने को कहा है। उसके बाद मैं एक और कमरे में जाता हूँ जहॉ पर मैने स्व0 श्याम नन्दन जौहरी (कटिया वाले) को देखा जो पूज्य फूफाजी से दीक्षित थे। उनसे मैंने पूछा कि आप कैसे आये, वह कहते हैं कि हम तो मर गये हैं। हमें पता चला कि यहॉ बड़े गुरू जी आये हैं। बहुत बड़ा भण्डारा हो रहा है, उन्हीं के दर्शन हेतु आया हूँ। मैं उनसे कटिया के लोगों के बारे में पूँछता हूँ, वो कहते हैं कि अब अपने यहॉ तो वहॉ का कोई नहीं है। मेरे मन में ख्याल आता है कि जब ये मर गये हैं और फिर भी आये हैं तो परम काशीनाथ जी और महेश बाबू को भी आना चाहिए। मैं पाण्डाल में इन लोगों को देख रहा हूँ, पर ये लोग कहीं दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। मैं अपने मन में सोच रहा हूँ कि ये लोग तो इनसे इतने Connected थे। इन्हें क्यों नहीं मालूम पड़ा कि भण्डारा हो रहा है। तभी गोरखपुर के 20–25 सतसंगी भाई पाण्डाल में घुसे और आकर बैठ गये। पंडाल के सामने की ओर एक बहुत बड़ा हवन कुण्ड बना है, जिसमें हवन सामग्री जल रही

है। उस हवन कुण्ड के सामने एक आसन पर आकर पूज्य ताऊजी बैठ जाते हैं और मुझको बुलाते हैं। मैं वहीं पर उनके पास बैठा रहा। उनके बुलाने पर मैं उनके पैर छूता हॅू तो वह मुझे अपने साथ हवन कुण्ड के पास ले जाते हैं और कहते हैं कि आओ, आहुति देकर एक हो जाओ और अपना सर उस कुण्ड के सामने रखते हैं और मुझसे कहते हैं कि अपना सिर मेरे सिर से मिलाओ। हम दोनों के सिर के मिलते ही एक अजब सी रोशनी होती है, जिसका प्रकाश तमाम बैठे हुए लोगों पर छा जाता है और आप कहते हैं कि असली मिलन यही है। उसके बाद वह उसी कमरें में जाकर फिर चारपाई पर बैठ जाते हैं और समस्त सतसंगी भाई उनके पैर छू–छू कर रूपये भेंट कर रहे हैं। मेरे मन में आता है कि मैं भी उन्हें कुछ रूपये दॅू। अपना पर्स खोलता हॅू तो उसमें 50 रूपये का एक नोट, और 4 रूपये 75 पैसे थे। जब मैं उन्हें पैसे देता हॅू तो वो कहते हैं कि तेरा तो बहुत रूपया मेरे पास जमा है और बहुत कुछ तुझे देना है। मैं कहता हॅू कि यह तो इस भण्डारे के लिए है। वह कहते हैं कि इस भण्डारे में भी तेरे 100 रूपये आ गये। मैं मन में सोचता हॅू कि शायद जगदीश भाई साहब ने 100 रूपये दिये होंगे। उसी समय पंडाल में जगदीश भाई साहब खड़े दिखाई दिये। मेरे बार–बार कहने पर उन्होने कहा, लाओ 5 रूपये दे दो। मैं ने अपना पर्स खोला, जिसमें 4 रूपये 75 पैसे निकले। मन में ग्लानि हो रही है कि 5 रूपये

पूरे नहीं है। वही पैसे मैंने उन्हें दे दिये। उन्होंने बहुत आशीर्वाद दिया और नींद खुल गयी। पंडाल इतना अच्छा था कि अब भी बार–बार याद आ जाता है। तबियत खुश रही।

(62) दिनांक 10 / 11–08–1994

10–11 अगस्त दिन बुद्ध व बृहस्पतिवार को सुबह के समय यह ख्वाब देखा कि मेरे यहाँ सतसंग हो रहा है। उसमें गोरखपुर, बनारस, पटना, समस्तीपुर, बाराबंकी एवं लखनऊ के समस्त भाई मौजूद है। परम पूज्य बाबूजी, सेठ भाई साहब तथा बाबू रामदास जी की भी मौजूदगी थी। पूज्य बाबूजी हम लोगों के कमरे में रूके हैं और लगता है कि सतसंग कई दिन तक चलता रहा। कई दिन बराबर उसी समय यह ख्वाब देखता रहा।

(63) दिनांक 16–08–1994

16 तारीख दिन मंगलवार को सुबह के समय एक ख्वाब देखा कि गोरखपुर में सतसंग हो रहा है। पूज्य ताऊजी और पूज्य बाबूजी दोनों ही लोग हैं। सतसंग खत्म होने के बाद मैं पूज्य ताऊजी के कमरे में जाता हूँ, वहाँ बाबू रामदास जी बैठे हुए हैं। मैं पूज्य ताऊजी के पैर छूता हूँ और कहता हूँ कि बाबू रामदास जी अपनी लड़की की शादी की वजह से बहुत परेशान हैं तो हॅस कर कहते हैं कि 95 में हो जायेगी। उसके बाद मैं पूज्य ताऊजी से कहता हूँ कि कई लोग ऐसे हैं यहाँ जिनको आप नहीं जानते, मैं आपसे मिलवा दूँ। सबसे

पहले J.P. बाजपेयी जी तथा उनकी पत्नी को मिलवाता हूँ और कहता हूँ कि यह T.O. साहब है। यह बाद में आये थे। उनके साथ उनका लड़का श्यामज भी था। उसके बाद अमीनाबाद वाले श्री के0के0 शुक्ला, बाबू राम जी, राजाराम मिश्रा, के0के0 शुक्ला जी की बहन, श्री ओ0पी0 सिंह, अनिल और बाराबंकी वाले अम्बिका प्रसाद जी एवं उनकी पत्नी को उनसे मिलवाता हूँ। आप कहते हैं कि इन सबकों मैं जानता हूँ। यह कैसे हो सकता है कि जिसे तू चाहे और मैं न जानूँ और हम लोग खूब हँस–हँस कर पुराने दिनों की तरह बात कर रहे हैं। उसी समय मैंने देखा कि सतीश बाबू (K.B. Saxena) जा रहे हैं। उनकी तरफ इशारा करके आप कहते हैं कि बेटे इनका भी ख्याल रखना। इनको मैं भी जानता हूँ। मैं आवाज देकर सतीश बाबू को मिलाता हूँ, वो पूज्य ताऊजी को देखकर बहुत खुश होते हैं और उनके पैर छू रहे हैं। तभी ऑख खुल गयीं।

(64) दिनांक 18–19–11–1994

18–19 नवम्बर दिन शुक्रवार एवं शनिवार दोनो ही दिन सुबह ही ख्वाब देखा कि मेरे घर पर सतसंग हो रहा है। पूज्य बाबूजी, सेठ भाई साहब भी आए हुए हैं और ज्यादातर गोरखपुर, बनारस, समस्तीपुर, बाराबंकी एवं लखनऊ के सतसंगी हैं। औड़िहार वाले राजकुमार सिंह से पूज्य बाबूजी बात कर रहे हैं। लगता है कि सतसंग कई दिनों से चल रहा है। उसके आगे क्या देखा याद नहीं रहा।

(65) दिनांक 16–02–1995

दिनांक 16–02–1995 दिन बृहस्पतिवार समय सुबह चार बजे यह ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊजी एवं पूज्य बाबूजी, गुरू नानक देव जी के साथ आये हैं। गुरू नानक देव के एक ओर पूज्य ताऊजी तथा एक ओर पूज्य बाबूजी बैठे हैं। ताऊजी की तरफ मैं और मेरी पत्नी और अजय व उनकी पत्नी बीना बैठी हैं। बाबूजी की तरफ सेठ भाई साहब बैठे हुए हैं और अनमोल संत चरित्र की कुछ प्रतियॉ उनके सामने रखी हुई हैं। उनमें से एक किताब उठाकर पूज्य ताऊजी व बाबूजी कहते हैं कि किताब तो बहुत सुन्दर लिखी गयी है, इससे लोगों को लाभ हो सकता है जो कि इस सिलसिले से परिचित हैं। मैं चाहता हूॅ कि विश्व का भला हो और उसके लिए कोई जनरल किताब लिखी जाए, जिससे सबका भला हो, जैसे पूजा की विधि। पूज्य ताऊजी उनको समझा रहे हैं कि पूजा विधि, पूजा करने का तरीका बताती है, दोनो में बहुत अन्तर है। वह कहते हैं कि सभी के भले की सोचो। जब पूज्य ताऊजी उनसे बात कर रहे हैं तो मैं, सेठ भाई साहब, मेरी पत्नी और बीना चारों लोग बाजार जाते हैं ताकि 20–25 लोगों के नाश्तें का सामान खरीद लिया जाये। एक बिस्कुट की दुकान पर हम लोग तरह–तरह के बिस्कुट और नमकीन देख रहे हैं, जो बाबूजी को और ताऊजी को पसंद थी। जब हम लोग यह सामान खरीद रहे हैं, वो दोनों मेरी पत्नी और

बीना बिना बताये कही चली जाती हैं। जब दुकानदार सामान पैक करता है तब मैं पूज्य भाई साहब से कहता हूँ अरे मैं तो अपना पर्स ही लाना भूल गया हूँ। सेठ भाई साहब कहते हैं कि कोई बात नहीं मेरे पास पैसे हैं। तभी मुझे अपने पीछे की जेब से पैसे मिल जाते है और मैं सब Payment कर देता हूँ और हम लोग सीधे वहॉ पहुॅचते हैं जहॉ पूज्य बाबूजी एवं ताऊजी हैं। वहॉ पहुॅच कर हम देखते हैं कि पूज्य लालाजी की महासमाधि स्थल पर बहुत बड़ा Tent लगा है जो कि बहुत ही खूबसूरत है। बहुत सुन्दर दरियॉ बिछी हैं और उनके एक तरफ बहुत से साधू लोग बैठे हैं, जिनके सिर पर पीले–पीले साफे हैं और माथे पर तिलक लगे हैं। उस लाइन में लाइन से अलग सामने सबसे अलग अनमोल खामोश बैठे हैं और मंच पर पूज्य गुरू नानक देव, पूज्य ताऊजी, पूज्य बाबूजी, सेठ भाई साहब मैं और मेरी पत्नी एवं बीना भी वहॉ बैठी हैं और दूसरी तरफ सतसंग के तमाम लोग बैठे हैं, जिनमें से ज्यादातर को हम पहचान रहे हैं। मैं मन ही मन सोच रहा हूँ कि खाने का इन्तजाम तो बस 20–25 लोगो का ही है। इतने लोगों का कैसे होगा और मन ही मन में हिचक रहा हूँ कि कैसे सबको खाने को कहूँ। तब तक पूज्य ताऊजी कहते हैं कि चलो बेटा सबको खाना खिलाओ। मैं पूज्य ताऊजी से कहता हूँ कि खाना तो कुल 25 लोगों का है, यहॉ तो हजारो लोग हैं। वे कहते हैं कि कोई बात नहीं इसी में सब

खा लेंगे और सबसे पहले पंगत में पूज्य गुरू नानक देव जी, तथा साधु लोग बैठते हैं खाने के लिए। पंगत पर पंगत लोग खाना खा रहे हैं। मैं और पूज्य ताऊजी जहॉ लोग खाना खा रहे हैं, खड़े हुए हैं। मेरी पत्नी तथा बीना (पत्नी अजय कुमार) खाना परोस रही हैं। मैं मन ही मन डर रहा हूॅ कि कहीं कोई आकर यह न कह दे कि खाना खत्म हो गया है परन्तु आश्चर्य है कि उसी में सब साधु संत खाना खा लेते हैं, पर खाना खत्म नहीं होता। जब सब खा चुके तो पूज्य ताऊजी , पूज्य बाबूजी मुझे सेठ भाई साहब को मेरी पत्नी और बीना को बहुत आशीर्वाद देते हैं और चले जाते हैं। इतने में नींद खुल गई। उसी दिन फतेहगढ़ में पूज्य माताजी पत्नी श्री जगमोहन लाल जी, पूज्य लालाजी साहब की पुत्रवधु का देहान्त 16—02—1995 को सुबह 9 बजे हुआ था। अपने सिलसिले के बुजुर्गो की मौजूदगी से जाहिर होता है कि उनको सभी ने कुबूल किया। 19—02—1995 को उनके दाह संस्कार के समय जो पंडित पीला साफा पहने मंत्र उच्चारण कर रहे थे, वह सब वही शक्ल थी जो मैंने स्वप्न में देखा था और सम्भव है कि आगे का दृश्य उनकी तेरहवीं का होगा।

(66) दिनांक 01—03—1999

आज दिनांक 01—03—1999 समय सुबह चार बजे दिन सोमवार को सपना देखा कि किसी जगह बहुत बड़ा उर्स हो रहा है, जिसमें बहुत से बुजुर्ग बैठे हैं। मैने पूज्य लालाजी महाराज, चाचाजी महाराज, बाबू बृजमोहन लाल जी (Brij

Mohan Lal Ji), पूज्य ताऊजी व पूज्य बाबूजी को अपने साथ देखा। मैं पूज्य ताऊजी की बगल में बैठा हूँ और पूज्य बाबूजी, पूज्य ताऊजी के बगल में बैठे हैं। उस उर्स में बहुत जोरों से कव्वाली हो रही है और एक तरफ मुसलमान जिनकी काली दाढ़ी है बहुत मस्त होकर ढोलक पर गा रहे हैं। कव्वाली इस प्रकार है–

इधर मौत अपने घर से चली थी ।
उधर रहमते इलाही भी उसके पीछे लगी थी।।
झटक दामने मौत का
कहा मौत से मत आना इधर को।
मर्जी ऐसी ही मेरे पीर की है।
मौत एक तरफ खौफ जदा खड़ी थी।

यह कव्वाली चल रही थी इतनें में अंकुर वहॉ आ जाते हैं और मैरे पैर छूने को झुकते हैं तब मैं उनसे कहता हॅू कि पहले पूज्य ताऊजी और पूज्य बाबूजी के पैर छुओ और फिर सब बुजुर्गो के। सब लोगों को एक मस्ती सी आती है और सब बुजुर्ग खड़े होकर गाने लगे –

मर्जी मेरे पीर की,..........मर्जी मेरे पीर की

उसी समय ऑख खुल गई। (यह स्वप्न बाद में सच हुआ। अंकुर को आशीर्वाद देना ही एक विशेष कारण था। उसका बहुत भयंकर एक्सीडेंट हुआ जिसमें मौत पक्की थी पर उस आशीर्वाद ने मौत को वापस कर उसे नई जिंदगी प्रदान की।)

(67) दिनांक 25—09—2003

आज सुबह 5 बजे यह ख्वाब देखा कि गाजियाबाद समाधि स्थल पर भण्डारा हो रहा है और उसमें दो तरह के Invitation Card बॉटे जा रहे हैं। एक अपने यहॉ का सादा कार्ड है जैसा अपने यहॉ का होता है और एक दो Page का पन्ने जैसा है। पूज्य ताऊजी महाराज एवं पूज्य बाबूजी महाराज दो पेज के निमंत्रण को फाड़ते जा रहे हैं। सारे फाड़े हुए कागज समाधि के बाहर फेंके जा रहे हैं। पूज्य भाई साहब एक तरफ कुछ लोगों को बहुत डांट रहे हैं।

जिनका मुझे ख्याल है पर नाम लिखना उचित नहीं है। उसके बाद भण्डारा बहुत कुशलपूर्वक हो रहा है। फिर मेरी नींद खुल गई। बाद में भण्डारा उन सबकी दया से बहुत अच्छा रहा और बाद में सबकी चिट्ठी से पता चला कि भण्डारा बहुत ऐतिहासिक रहा। यह सब बुजुर्गो की दया है। सभी ने उनके असर और फैज को कुबूल किया।

नोटः— भण्डारा उस वर्ष 2 अक्टूबर, 2003 में पड़ा और यह मेरा स्वप्न करीब—करीब सच था। गुरुदेव की दया है कि भविष्य में होने वाली बातों का कुछ भान पहले ही करा देते हैं, उनकी दया का शुक्राना अदा करना भी मेरे वश में नहीं है।

(68) दिनांक 02–11–2003

आज सुबह 4:30 बजे यह ख्वाब देखा कि फतेहगढ़ में दो समाधियॉ बन रही हैं और प्लास्टर हो गया है। उन दोनों समाधियों के ऊपर बहुत बड़ी नॉदें बनी हैं और दोनों नॉदों में लोग ला–ला कर हलुआ भर रहे हैं। वो दोनों नादें समाधि के नीचे एक टनल से जुड़ी हुई हैं और दोनों समाधियों के आगे सामने लाखों लोग खड़े होकर हलवा का प्रसाद ले रहे हैं और कोई बुजुर्ग कह रह हैं कि यहॉ इतना आदमी आयेगा कि हलुआ हाथ से बॉटना नहीं हो पायेगा। इसीलिये यह इन्तजाम किया गया है। वहॉ मैंने महात्मा जगमोहन नारायण जी को बहुत साफ साफा बांधे देखा, उसके बाद ऑख खुल गई।

बाद में Sunday को सतसंग में पूजा करते समय बहुत साफ देखा कि सेठी के पास बाबू जगमोहन नारायण बहुत साफ बैठे हैं। हम लोगों ने उनके लिये ओम् शान्ति का जाप किया। कितने दयालु हैं हमारे सिलसिले के बुजुर्ग। तब याद आया कि वह उनके जन्मदिन का दिन था।

(69) दिनांक 21–01–2004

आज करीब 11 बजे पूजा खत्म की और नाश्ता करने के बाद कुछ करने का मन नहीं हुआ। आकर बिस्तर पर लेट गया। करीब 12 बजे के ऑख लग गई तो क्या देखता हूॅ कि कहीं भण्डारा हो रहा है और बहुत से लोग

इकट्ठे हैं और पूजा हो रही है। पूज्य लालाजी महाराज साहब इसी मशहरी पर जिस पर मैं सोता हूॅ, बैठकर सबको पूजा करा रहे हैं। बहुत से लोग मौजूद हैं, लेकिन जिनका मुझे ख्याल है, उनमें समस्त लखनऊ के, पटना तथा बनारस के लोग हैं, और लोग भी हैं, क्योंकि काफी भीड़–भाड़ है। पर मुझे ध्यान नहीं है।

पूज्य लालाजी महाराज के बिल्कुल सामने मैं बैठा हूॅ। पूजा अभी चल ही रही है और पूज्य लालाजी कुछ फर्मा रहे हैं, जिसमें यह कह रहे हैं कि आज मैंने सोचा कि बहुत दिन हो गये चलें तुम सबसे मिल आयें और मैंने कहा कि आपने बड़ी मेहरबानी की। हम लोग तो रोज ही आपको याद करते हैं। अभी बात चल ही रही थी कि किसी दरवाजे से पूज्य ताऊजी भी आ जाते हैं। वह पूज्य लालाजी महाराज को देखकर बहुत खुश होते हैं और उनके पैर छूते हैं। मैंने उठकर अपनी सफेद गद्दी पूज्य लालाजी महाराज के दायीं तरफ डाल दी,। पूज्य ताऊजी उस पर बैठ गये।

मैं बहुत खुश हूॅ और उनके पैर छुए। पूज्य ताऊजी परम पूज्य लालाजी महाराज से कह रहे हैं कि अरे! मुझे उम्मीद नहीं थी कि यहॉ आपके दर्शन होंगे और बहुत खुश हो रहे हैं।

पूज्य लालाजी महाराज कहते हैं कि मैंने सोचा कि मिले बहुत दिन हो गये, चलो मिल आयें। मैं खुशी के मारे

यह भी भूल गया कि पूज्य लालाजी महाराज बैठे हुए हैं और पूज्य ताऊजी से यह पूछता हूँ कि इतने दिनों बाद पूज्य लालाजी महाराज को देख कर आपको कैसा लग रहा है। वे उत्तर देते हैं कि जैसी खुशी तुझे मुझे देखकर हो रही है, वैसी ही खुशी मुझे भी हो रही हैं।

उसके बाद पूजा खत्म हो जाती है और पूज्य ताऊजी महाराज दूसरे कमरे में चले जाते हैं। मैं उन्हीं के साथ उसी कमरे में चला जाता हूँ।

पूज्य ताऊजी महाराज कहते हैं तुम सभी लोगों को बुला लो, मैं मिलना चाहता हूँ और सबसे पहले पटना के लोग मिलते है। डा0 आर0एन0 दास को बहुत आशीर्वाद दे रहे हैं। बनारस के लखनऊ के ज्यादातर लोग उनसे फरदन–फरदन मिल रहे हैं और सबको आशीर्वाद दे रहे हैं। काफी खुश हैं। जब लखनऊ के लोगों को मिला रहा था तो बाजपेयी जो को जब मिलाता हूँ तो पूज्य ताऊजी कहते हैं इनसे हम मिल चुके हैं। इसी समय टेलीफोन की घंटी बज गई और नींद खुल गई।

(70) दिनांक 18–03–2004

आज दिनांक 18–03–2004 बृहस्पितवार को सुबह के समय एक ख्वाब देखा कि बहुत से लोग सफेद धोती पहने हुए हाथ में लोटा लिए हुए चले आ रहे हैं। सभी लोग नंगे जिस्म हैं। सभी के हाथ में लोटा है। ऐसा लगता है कि लोग

शमशान घाट से आ रहे हैं। सतसंग का कोई भी नहीं है पर सबसे आगे पूज्य बाबूजी चल रहे हैं। उनके पीछे और लोग चल रहे हैं। पूज्य बाबूजी को ऐसी स्थिति में देख कर एक दम से ऑख खुल गई।

नोट :– बाद में 25 तारीख को दूसरे बृहस्पिवार को ज्ञात हुआ कि पूज्य मदन भाई साहब का निधन (स्वर्गवास) हो गया। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे।

(71) दिनांक 20–03–2004

दिनांक 20–03–2004 दिन शनिवार को रात में यह ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊजी, पूज्य बाबूजी, पूज्य सेठ भाई साहब, शर्मा बहन जी तथा कुछ सतसंगी भाई सभी लोग बड़े खुश और लाइट मूड में है। खासकर भाई साहब को उनके बिसाल के बाद इतना खुश पहली बार देखा। शर्मा बहन जी ने पूज्य ताऊजी से कहा कि देखिये मेरे भैया ने यह काम कर दिया और आश्रम और स्मृति–स्थल के बारे में जिकर किया। पूज्य भाई साहब बड़े खुश हैं और वह पूज्य ताऊजी से कह रहे हैं कि मैंने तो कहा ही था कि मेरा भइया ही करेगा सब कुछ। पूज्य ताऊजी बड़े जोर से हॅस कर कहते हैं कि तेरा भइया कब से हो गया, पहले तो मेरा बेटा ही है। बड़ी खुशी का वातावरण है। इसके बाद पूज्य ताऊजी हम सबको कुछ

बता रहे हैं, जिसका ध्यान नहीं। तभी ऑख खुल गई। तबियत में बड़ी खुशी रही।

(72) दिनांक 11–08–2005

दोपहर खाना खाने के बाद ऑख लग गई। मैंने ख्वाब देखा कि मेरे छत पर सतसंग हो रहा है। हाल तथा पूरा बरान्डा भरा हुआ है। मैंने अपने यहॉ के सभी सतसंगी भाइयों को खासकर लखनऊ, बनारस, पटना, गोरखपुर, गाजियाबाद सब को देखा। दूसरी Sect के भी बहुत से लोग आये हैं। उनमें से एक साहब मुझसे कह रहे हैं कि मैं गायत्री परिवार से हूॅ। उनके साथ 20–25 लोग है। गोरखपुर के बाबू रामदास जी, त्रिपाठी जी, शर्मा जी, केदार बाबू भी एक तरफ थोड़ी देर बाद आकर बैठ गये। किचेन में खाना बन रहा है, वहॉ पूड़ियॉ बेली जा रही हैं। मेरी पत्नी, कमलेश, बीना, रमा, रेनू तथा कई और Ladies परेशान है कि आदमी बहुत हो गये। मैं अपनी पत्नी से कह रहा हूॅ कि तुम हमेशा भण्डारे को Underestimate करती हो। अब इतने लोगों का कैसे खाना होगा। नागेन्द्र जी घूम–घूम कर प्रसाद एवं खाने का इन्तजाम कर रहे हैं और कह रहे हैं कि साहब परेशान मत होइये, थोड़ी देर में सब इन्तजाम हो जायेगा। उसी समय मैंने देखा कि प्रताप सर पर अंगौछा बांधे आ गया और कह रहा है कि साहब परेशान न हों अभी सब पूड़ी बगैरह बना देते हैं। ऐसा लगा कि प्रताप हनुमान

जी का रूप धर कर आ गया और कहता है कि थोड़ी देर आपके चरणों में बैठता हूॅ। फिर सब काम कराता हूॅ। एक छोटा सा बच्चा 4—5 साल का आकर मेरी गाड़ी में बैठ जाता है। लोग उसे हटाते हैं वह फिर आकर बैठ जाता है। सभी लोग खाना खा रहे हैं और मैं अपनी पत्नी से कहता हूॅ कि आज पूज्य लालाजी महाराज का निर्वाण दिवस था, इसी में यह सब लोग आये थे। मैने पूज्य ताऊजी, पूज्य बाबूजी तथा अन्य लोगों को भी उसमें देखा। उसी समय ऑख खुल गई।

(73) दिनांक 12—08—2005

सुबह पांच बजे ख्वाब देखा कि एक बुजुर्ग जिनकी सफेद दाढ़ी थी और उनकी उम्र काफी मालूम पड़ती थी, एक जगह ले गये हैं। जहॉ पर बहुत सी मजार है। वो मुझसे कह रहे हैं कि मैं अपने सिलसिले तथा अन्य सिलसिले की सब बुजुर्ग की मजार, जिनकी निस्बत हमसे है, यहॉ ले आया हूॅ। एक मजार के पास ले आते हैं और बताते हैं कि यह हजरत मुस्तफा साहब की मजार है। उस समय अनमोंल भी मेरे साथ है। वह मजार हल्के हरे रंग की है और सफेद संगमरमर पत्थर तकिये पर लगा है और खूब चमक रही है। वो मुझे बार—बार उसी मजार को दिखा रहे हैं। मैं और अनमोल घूम—घूम कर सब मजार देख रहे हैं। उसमें सरहिन्द वाले, श्री नूर मोहम्मद साहब की, मौलवी अहमद अली साहब, फजल अहमद साहब, देवा शरीफ, बुलहसन साहब,

नसीराबादी तथा निजामुद्दीन साहब व अन्य की है। पर सबसे ज्यादा जो Shine कर रही है वह हजरत मुस्तफा साहब की है। वो बुजुर्ग बार–बार उसी को Highlight कर रहे हैं और कह रहे है कि सबकी है और हम दोनों घूम–घूम कर देख रहे हैं। तभी ऑख खुल गई।

(74) दिनांक 26–08–2005

आज सुबह करीब चार बजे यह ख्वाब देखा कि फतेहगढ़ में बहुत बड़ा सतसंग हो रहा है और जैसे भण्डारे में पण्डाल लगता है, वैसा ही लगा हुआ है। अपने यहॉ के तथा अन्य स्थान के सतसंगी भाइयों को देखा। चारो तरफ काफी भीड़ है। मैं और पूज्य भाई साहब एक कमरे में रूके हुए हैं। उस कमरे में दो चारपाई हैं। जो चारपाई लम्बाई में है, उस पर मैं लेटा हूॅ, पूज्य भाई साहब खामोशी से लेटे हुए हैं। उनके सामने एक दरी पड़ी है। लोग आ रहे हैं और पैर छू कर चले जा रहे हैं। उसके बाद ऑख खुल गई।

(75) लखनऊ दिनांक 15–02–2006

आज सुबह 4 बजे के यह ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊजी महाराज हाल से होकर जिस कमरे में मैं रूकता हूॅ, उस कमरे में आये हैं। बहुत खुश थे। कहने लगे, उन सब लोगों को बुला लो, जिनको तुमने दीक्षा दी है। मैं अपना आशीर्वाद दे दूॅ। जिन लोगों को उन्होंने आशीर्वाद दिया, उनमें सबसे पहले अंकुर, अंकित, छोटे (बनारस), एस0एन0 लाल बम्बई, और

डा0 सतीश बनारस इनका मुझे खूब याद है और लोग भी हैं, जिनका मुझे याद नहीं।

(76) (अनमोल के घर) दिनांक 17—03—2006 दिल्ली

आज 17 मार्च, 2006 दिन शुक्रवार जब मैं अपने छोटे बेटे अनमोल के घर दिल्ली में सोया था तो सुबह 4 — 5 बजे ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊजी महाराज देवस्थली आश्रम के हाल में आये और बीना पत्नी अजय कुमार को बहुत आशीर्वाद दिया। उनको देखकर मैं ने अचंभित होकर उनके पैर छुए और पूछा कि आप कैसे आये, तो कहा इन लोगों को आशीर्वाद देने आया हूॅं। वे बहुत खुश नजर आ रहे थे और ऑंख खुल गई।

(77) (मंगलवार) दिनांक 09—05—2006

09—05—2006 को शाम को 5 बजे जब कि खाना खाने के बाद सो गया था, ख्वाब देखा कि आश्रम वाले हाल में काफी बड़ा सतसंग हो रहा है, जिसमें बहुत से लोग हैं। ज्यादातर लोग लखनऊ सतसंग तथा गाजियाबाद के परन्तु परम पूज्य ताऊजी, पूज्य सेवती प्रसाद फूफाजी, पूज्य हरी भाई साहब (परम पूज्य ताऊजी के पुत्र), जय नारायण गौतम और कुछ लोग भी है, जिनका याद नहीं। सतसंग समाप्त होने पर सब खाना खाने छत पर गये जहॉं खाना खाने का Arrengement मेज, कुर्सी पर था। मेजो पर

सफेद बहुत साफ चादर बिछी हुई थी। जीने से घुसते ही जो मेज है उस पर पूज्य ताऊजी, सेवती प्रसाद फूफाजी, हरी भाई साहब तथा कुछ अन्य लोग बैठे हुए हैं और सब मेजें, जो लाईन में लगी हैं, उसमें खाना बॅट रहा है। मैं, अनमोल, अंकित जहॉ खाना बन रहा है। वहॉ का Arrengement देख रहे हैं और सब लोग खाना खा रहे हैं। इतने में देखता हूॅ कि डा0 एच0पी0 श्रीवास्तव फतेहगढ़ वाले जीने से होते हुए सीधे मेरे पास आते हैं और पैर छूते हैं। मैं उन्हें गले लगा लेता हूॅ और कहता हूॅ आप बड़े मौके से आ गये और रसगुल्ला खाने को देता हूॅ और कहता हूॅ कि चलिए पूज्य ताऊजी से मिला दॅू। पूज्य ताऊजी, फूफाजी, हरी भाई साहब से कह रहे हैं कि तुम मेरी तरफ से दिन्ना को Thanks दे दो जो ऐसी व्यवस्था अच्छी की है। इतने में मैं डा0 H.P. Srivastava को लेकर वहॉ पहुॅचा वो उनके पैर छूते हैं। आप खूब आशीर्वाद देते हैं और पूछते हैं कि आप फतेहगढ़ में हैं। पूज्य ताऊजी कहते हैं, सब बच्चों को बुला लो, उन्हें भी आशीर्वाद दे दॅू। अनमोल, अंकुर, अंकित आ कर उनके पैर छूते हैं और उनको भी वो आशीर्वाद देते हैं। इतने में ऑख खुल जाती है। इतने में आंख खुल जाती है।

(78) “बुद्धवार” दिनांक 31—05—2006

आज शाम के 4 बजे जबकि मैं खाना खा के सो गया था तो ख्वाब देखा कि बहुत अच्छी Luxury Bus जिसमें मैं

और पत्नी सवार हैं और ड्राईवर हम लोगों को एक जगह ले जाता है, जहॉ पर कुछ सीढ़ियॉ चढ़ कर ऊपर जाते हैं। वहॉ पर एक साहब किताबें रखें हुए हैं। किताबों का नाम कुरान शरीफ की आयते हैं। किताब हल्के पीले रंग की है। उन्होंने एक किताब दी और कहा देवा शरीफ देखने जाइये, तब हम लोगों को यह ख्याल आया कि हम लोग बाराबंकी आए हैं। हम दोनों जनों ने देवा शरीफ के दर्शन किए और उनका आशीर्वाद लिया। वही कह रहे हैं कि आज के दिन सब शरीफ यही है। सबके दर्शन कर लें। ऐसा लग रहा है कि यही पर विहार शरीफ, अजमेर शरीफ, कलियर शरीफ आदि सब हैं। हम लोग घूम–घूम कर दर्शन कर रहे हैं। मन में यह ख्याल आ रहा था कि सबको ले आए होते तो बहुत अच्छा रहता। तभी मेरे चचेरे भाई दिनेश ने घंटी बजाई, जिससे ऑख खुल गई। लेकिन तब से एक अजब सी हालत है।

रात में मैं जब लॉज में चारपाई पर सोया तो मेरी मशहरी के चारो तरफ बुजुर्ग परिक्रमा कर रहे हैं। यह क्रम बहुत देर तक रहा। मैं उठने की कोशिश कर रहा हूॅ पर उठ न पाया। उसमें से किसी बुजुर्ग ने फरमाया यही हालत है, जिसको शजरे में बयान किया गया है कि –

या इलाही पुल पे और महशर में हो पीरों का साथ।
ख्वाजये एहरार रासुल इतकिया के वास्ते।

सुबह तक तबियत बहुत हल्की और खुशगवार थी। सुबह पूजा में भी बड़ी अच्छी हालत रही।

(81) बुद्धवार , दिनांक 02–08–2006

बुद्धवार की रात सुबह चार बजे (बृहस्पतिवार) को एक ख्वाब देखा कि किसी जगह सतसंग हो रहा है। जहॉ करीब–करीब 40 आदमी दो लाईन में बैठे हैं। दोनो लाइने आमने–सामने हैं। पूज्य बाबूजी बीच में बैठे हैं। उनके ठीक सामने वाली लाइन में हापुड़ में जगदीश भाई साहब, राम औतार जी, श्री ओम प्रकाश जी बैठे हैं। जिन लोगों का मुझे याद है खलीलाबाद के मिश्रा जी, मगहर के श्रीवास्तव मास्टर साहब और ढ़काइच के प्रधान जी तथा उनके साथ एक और व्यक्ति है, जिनकी शक्ल याद है, पर नाम नहीं मालूम, पहचानते नहीं हैं। ऐसा लग रहा था कि मैं पूजा करा रहा था। पूज्य बाबूजी बाद में आ कर बैठ गये ठीक जगदीश भाई साहब के सामने। मैंने पूज्य बाबूजी से अपनी जगह बैठने को कहा, परन्तु पूज्य बाबूजी ने हाथ के इशारे से मुझे बैठे रहने को कहा और कहा कि हम यहीं ठीक हैं। इसी बीच एक व्यक्ति जो मेरे सामने जो दूसरे end पर बैठा था, उसने कुछ भजन गाना शुरू कर दिया, जो किसी को अच्छा नहीं लगा। विशेषकर पूज्य बाबूजी को पूजा बहुत अच्छी चल रही थी। पूज्य बाबूजी ने कहा जाओ बेटे तुम नहा धो कर आओ, उसके बाद बैठेगें और सबसे नाश्ता

बगैरह के लिये कह दिया। मैं जब छत पर नहाने गया तो देखा प्रधान जी एवं उनके साथ के व्यक्ति तख्त पर बैठ कर नाश्ता कर रहे हैं और मुझे भी नाश्ता करने को कहते हैं। मैंने कहा नहीं मैं नहा धोकर पूज्य बाबूजी के पास जा रहा हूॅ। जब मैं नीचे नहा कर पूज्य बाबूजी के पास आया तो उन्होंने कहा कि जब दूसरी जगह के लोग आ जाते हैं तो उन्हें यह नहीं मालूम कब क्या करना चाहिए। जब मैं नहाने गया तो पूज्य बाबूजी ने पंकज से कहा कि जाओ खलीलाबाद वाले मिश्रा जी को बुला लो। दिन्नू उनकी तारीफ करते हैं। मैं उन्हें अकेले में बैठा लूॅ। उसके बाद ऑख खुल गयी।

नोटः– मेरा अपना ख्याल है कि 4 तारीख को Fortis में जगदीश भाई साहब का हार्निया का आपरेशन था। उन्हीं को आशीर्वाद देने आये थे।

(80) "Sunday" दिनांक 24–09–2006

आज दिनांक 24 सितम्बर 2006 की सुबह करीब चार बजे यह ख्वाब देखा कि सरदार जी भाई साहब मेरे घर आये हैं। उनके साथ श्री के. बी. सक्सेना सतीश बाबू के करदादा और एक और सतसंगी, जिनका मुझे ध्यान नहीं है (लगता है लखनऊ के ही है) मुझसे कह रहे हैं कि चलिए पूज्य लालाजी की समाधि पर चलें और करदादा की Wife के लिये ॐ शान्ति का जाप करें। हम लोग सीधे समाधि पर जाते हैं और वहॅा बैठ कर जाप कर रहे हैं। ऐसा मालूम हुआ

कि जैसे कल उनकी आत्मा को शान्ति मिली। मैं करदादा से कह रहा हूँ कि तुम्हारी पत्नी वाकई भाग्यशाली हैं। उसके बाद हम लोग वापस लखनऊ आते हैं और यहाँ आने पर उन्होने कहा कि चलिये बाबू बृजमोहन लाल जी की समाधि पर चले। वहाँ पहुँचने पर देखते हैं कि स्व0 सतीश वर्मा नोएडा वाले वहाँ बैठे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं । हम लोग और कुछ और लोग भी वहाँ बैठ जाते हैं। इसी बीच ओंकार भाई साहब समाधि पर आते हैं, हम लोग उनसे मिलते हैं। ओंकार भाई साहब खूब तंदरूस्त दिखाई पड़ते हैं। मैं उनसे कह रहा हूँ कि अमेरिका से लौटने के बाद आपकी तंदरूस्ती ठीक हो गयी। समाधि के बाहर की तरफ फाटक के अन्दर लान में एक लाइट वायलेट कलर की एक्सीडेन्ट हुई टूटी बड़ी गाड़ी खड़ी है। मैं ओंकार भाई साहब से पूछता हूँ कि क्या इस गाड़ी का एक्सीडेन्ट हो गया। उन्होंने कहा कि हाँ परन्तु हम लोग बच गये। तभी ऑख खुल गयी।

(81) दिनांक 23/24–08–2007

आज दिनांक 24–08–2007 को सुबह 3:40 मिनट पर यह ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊजी महाराज मेरे ही ड्राइंग रूम में सेटी के आगे जहाँ बैठ कर मैं पूजा करता हूँ, वहाँ आकर बैठ गये और उनकी बायी तरफ जरा सा हट कर पूज्य बाबूजी बैठ गये। पूज्य ताऊजी के ठीक सामने थोड़ी दूर पर ओंकार भाई साहब बैठे हैं। ओंकार भाई साहब के पीछे

10—12 सतसंगी भाई जिनको मैं ठीक से देख भी नहीं पाया बैठे हैं। मैं ड्राइंग रूम में देखने जाता हूँ कि कौन आया है। पूज्य ताऊजी मुझे बहुत प्रेम से बुलाते हैं कि आओ, बेटे नन्हे तुम भी मेरी दाहिनी ओर आ कर बैठ जाओ। मुझे वह और पूज्य बाबूजी बहुत आशीर्वाद देते हैं। सामने ओंकार भाई साहब को पहचान पाया। खॉसी आने से नींद खुल गई। उठने पर यह ख्याल आया कि आज मेरे जन्मदिन के कारण आशीर्वाद देने आये हैं। ओंकार भाई साहब के बारे में कुछ कह नहीं सकता हूँ।

(82) दिनांक 20—12—2007

आज दिनांक 20—12—07 को सुबह करीब चार बजे के करीब यह ख्वाब देखा कि पूज्य ताऊजी महाराज साहब तथा बहुत से बुजुर्ग एक जगह बैठकर सतसंग करा रहे हैं। वातावरण चारो तरफ बिल्कुल गॉव का था और खुला मैदान था। आपने यहॉ के भी कुछ सतसंगी भाई हैं और भी बहुत लोग हैं, जिनको मैं नहीं पहचानता। अगल—बगल में बहुत से बुजुर्ग बैठे हैं। उनके बीच में पूज्य ताऊजी बैठे हैं, उनके बिल्कुल बगल में परम पूज्य बाबूजी बेठै हैं। मैं उठ के परम पूज्य ताऊजी एवं परम पूज्य बाबूजी के पैर छूता हूँ। आप कहते हैं कि बेटे यही है " पुल पर और महशर में हो पीरो का साथ " मैंने पूज्य ताऊजी एवं पूज्य बाबूजी के पैर छुए परन्तु ऐसा करते ही मुझे सब बुजुर्ग आशीर्वाद देने लगे। सब लोग

मुझे आशीर्वाद दे रहे थे उसी समय ग्वालियर के मास्टर साहब पूज्य ताऊजी के पैर छूते हैं और वह उनको भी आशीर्वाद दे रहे हैं। मैं सोच रहा हूँ कि सब लोग चलकर आश्रम में ही पूजा करते। वतावरण गॉव का ही था। नींद खुल गयी।

(83) "Sunday" दिनांक 06–04–2008

इतवार तारीख 6 अप्रैल की रात सुबह यानी सोमवार की सुबह चार बजे यह ख्वाब देखा कि कहीं बहुत बड़ा सतसंग हो रहा है। बहुत बड़ा पण्डाल लगा है, जहॉ काफी लोगों के बैठने की व्यवस्था है और एक तरफ मंच सा बना है, उस पर बैठने की व्यवस्था है और लोग थोड़ी ऊँचाई पर टोली बनाकर बैठे हैं और आपस में बातचीत कर रहे हैं। एक बुजुर्ग जिनको नहीं पहचानता हूँ, मुझको ले जाकर सिंहासन पर बैठा देते हैं। सब लोग अदब से खड़े होते हैं। काफी भीड़ है। सब लोग मुझसे मिलने अपनी टोली के साथ आते हैं। सबसे पहले श्री सेवती प्रसाद मुख्तार अपने टोली के साथ मुझसे मिलने आते हैं और मुझे देख कर बहुत खुश होते हैं। मैं उठकर उनके पैर छूता हूँ और वो उन बुजुर्ग से पूछ कर मुझे और टोलियों को बड़े हर्ष के साथ मिलवाते हैं और खुशी से रिश्ता बताते हैं। वहॉ पर मैंने अलग–अलग टोलियों में परम पूज्य चच्चाजी महाराज के तीनों पुत्र परम पूज्य बृज मोहन लाल जी साहब, पूज्य राधा मोहन लाल जी और पूज्य ज्योति

बाबू तथा उनके पोते श्री नरेन्द्र जी एवं श्री सत्येन्द्र जी को देखा। परम पूज्य डा0 चतुर्भुज सहाय जी तथा अन्य बहुत से बुजुर्गों को देखा, जिन्हें मैं पहचानता भी नहीं हूँ। सभी लोग बहुत प्रसन्न चित्त एवं खुश थे। मुझे यह ख्याल नहीं कि कौन सी जगह थी, तभी ऑख खुल गई।

(84) दिनांक 01—08—2008

आज सुबह चार बजे यह ख्वाब देखा कि डा0 योगेन्द्र जो कि श्री ओ0पी0 सिंह बाराबंकी वाले के पुत्र हैं। योगेन्द्र बड़ी दुखी हालत में खड़े हुए हैं और परेशान हैं। इतने में ऑख खुल गई। दूसरे दिन 2 तारीख शनिवार को डा0 एस0एन0 राय के यहॉ सतसंग था। वहॉ पर श्री जे0पी0 श्रीवास्तव जी से मैंने पूछा। उन्होंने अपने मोबाइल फोन से बात कराई। योगेन्द्र ने बताया कि तबियत मेरी ठीक है। मेरा ख्याल हुआ। शायद यह मेरा अपना ख्याल है आज दिनांक 05—08—08 को मंगलवार के दिन श्री जे0पी0 श्रीवास्तव जी से पता चला कि सोमवार के दिन रात में उनकी तबियत ज्यादा खराब हो गई और वह शेखर नर्सिंग होम, इन्द्रा नगर में भर्ती हो गये। बाद में श्री ओ0पी0 सिंह जी से बात हुई। उन्होने बताया कि उनकी हालत पहले से बहेतर है।

नोटः— आज कल एक अजब सी हालत चल रही है कि सपने में या जागृत अवस्था में होने वाली चीजों का ज्ञान हो जा रहा है और जिस चीज पर ख्याल की धार जाती है, वैसा ही हो

जाता है। लेकिन साथ–साथ बहुत झुँझलाहट भी आती है। डा0 योगेन्द्र का निधन हो गया, सख्त अफसोस है।

(85) सोमवार, दिनांक 04–08–2008

आज रात को सुबह चार बजे यह ख्वाब देखा कि बहुत बड़ी सफेद रंग की गाड़ी में मैं तथा बहुत सारे बुजुर्ग, जिनमें पूज्य बाबूजी महाराज को छोड़कर सभी के दाढ़ी थी, बैठे हुए हैं। पीछे एक Dead Body Covered रखी हुई है, जिसका चेहरा नहीं दिखाई दिया। आगे की सीट पर ड्राइवर के साथ श्री महेन्द्र लाल दास तथा डा0 वी0के0 दास बैठे हैं। जो बुजुर्ग मेरे साथ बैठे हैं, उनमें मैं परम पूज्य लालाजी, पूज्य चाचाजी, पूज्य ताऊजी, परम पूज्य बाबूजी महाराज को ही पहचानता हूॅ। परन्तु हैं बहुत से लोग। वह गाड़ी नदी के किनारे पर रूकती है। ऐसा लग रहा है जैसा गंगा का किनारा हो और वही जगह है जहॉ परम पूज्य बाबूजी की Dead Body जलाई गयी थी और पुल भी दिखाई दिया। ऐसा लग रहा है कि गढ़मुक्तेश्वर का ही घाट हो। सभी लोग वहॉ उतर गये और Dead Body रख दी गयी। उसमें आग भी लगा दी गयी तथा सब बुजुर्ग वहीं पर खड़े थे वो सफेद गाड़ी में श्री एम0एल0 दास और वी0के0 दास ड्राईवर को लेकर चले गये। जब गाड़ी पुल पर पहुॅची तो ड्राईवर ने कहा अरे भैया जी तो हैं ही नहीं। दास साहब और डा0 दास ने कहा कि वो आ जायेगे। अभी उन्हीं लोगों के साथ खड़े हैं।

ड्राईवर ने कहा कि मैं बिना भैया जी को लिए गाड़ी नहीं ले जाऊॅगा। वह मुझे लेने आया और लेकर मुझे एक जगह ले गया जहॉ काफी बड़ा भण्डारा हो रहा है। वहॉ पर काफी लोग इकट्ठा हैं और सतसंग चल रहा है। वहीं पर हम तीनों लोग एक चारपाई पर बैठे हैं। थोड़ी देर बाद हापुड़ के जगदीश भाई साहब बहुत दुर्बल अवस्था में आकर खड़े हो गये। मैं उनसे कह रहा हॅू कि भाई साहब आप तो वाकई बहुत कमजोर हो गये। आपकी उमर क्या है। इसी बीच में ऑख खुल गई।

सुबह मीना बहन का पटना से फोन आया कि उनकी मॉ (धर्मपत्नी डा0 जे0पी0 कर्ण) की हालत बहुत खराब है, आक्सीजन लगी थी। थोड़ी देर के लिए होश में आ गई तो अपने बड़े लड़के अरविन्द से बोली तुम भैया जी के पास लखनऊ चले जाओ। आज 5 तारीख की रात में खबर आयी कि उनका निधन हो गया है।

(88) दिनांक 07—08—2008

आज दो दिन से लगातार सुबह के समय पूज्य ताऊजी महाराज एवं परम पूज्य बाबूजी महाराज को देख रहे हैं। 6 तारीख की सुबह करीब 5 बजे यह देखा कि पूज्य ताऊजी महाराज एवं परम पूज्य बाबूजी महाराज आश्रम आये हुए हैं। ताऊजी जिस कमरे में मैं रूकता हॅू, मेरी वाली चारपाई पर बैठे हैं और पूज्य बाबूजी और मैं सामने कुर्सी पर बैठे हैं।

दोनों जने काफी खुश हैं और कुछ कह रहे है। ऑख खुलने पर मुझे याद नहीं कि क्या कह रहे थे।

दूसरे दिन 7 तारीख को करीब 5 बजे यह ख्वाब देखा कि कहीं पर Double Story Building है और ऊपर की Story पर सतसंग हो रहा है और काफी लोग आये हैं लखनऊ, वाराणसी, गोरखपुर सभी जगह के। जब मैं अपने कमरे में जहॉ रूके हुए हैं, चाय ब्रेक में पहुॅचता हूॅ तो वहॉ पर पूज्य ताऊजी, पूज्य बाबूजी चारपाई पर बैठे हैं और काफी खुश हैं। उसी समय ऊपर के सतसंग का भी चाय ब्रेक होता है और सब लोग जीने से नीचे आ रहे हैं जब पूजा कराने के बाद मैं कमरे में पहुॅच कर उन दोनों (परम पूज्य ताऊजी, परम पूज्य बाबूजी) को देखता हूॅ तो बहुत खुश होता हूॅ। वह दोनों लोग बहुत आशीर्वाद दे रहे हैं। उसी समय गोरखपुर के एक सतसंगी भाई जिनका नाम राम सूरत है, मुझसे पूछते हैं कि गोरखपुर के त्रिपाठीजी कहॉ रूके हैं, उनकी पत्नी की तबियत खराब है। थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि सरदार जी भाई साहब के एक शिष्य जो कि लखनऊ में ही रहते हैं, जिनका नाम राजेन्द्र कुमार सक्सेना (राजन) उस कमरे में आते हैं और कहते हैं अरे आप लोगों का सतसंग भी यहीं हो रहा है। जिस समय मैं अपने कमरे में गया तो वहॉ पर मेरे पीछे–पीछे श्याम नन्दन जी समस्तीपुर वाले भी चले आते हैं। पूज्य ताऊजी पूज्य बाबूजी की मौजूदगी में पूजा के बारे

में मुझसे पूछते हैं वह मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा। मैंने कहा बाद में बता देंगे। ऐसा लग रहा है कि दोनों जगह का चाय पानी साथ–साथ हो रहा है। चाय नाश्ते की जगह बहुत से पुराने लोग जो सिकन्द्राबाद में आते थे, उनको देखा। तभी ऑख खुल गई।

(89) रविवार, दिनांक 10–08–2008

आज सुबह यह ख्वाब देखा कि लखीमपुर खीरी में सतसंग हो रहा है। लेकिन मैंने देखा कि वहॉ के लोग Serious नहीं है मुझे बहुत बुरा लग रहा है। श्री उमा शंकर शुक्ला जी, उपाध्याय जी, त्रिवेदी जी, प्रो0 राम सिंह इस सम्बन्ध में कुछ कह रहे हैं। परन्तु उनकी बातें मुझे अच्छी नहीं लगती हैं। ऐसा लग रहा है कि कुछ सफाई दे रहे हैं। इन सब चीजों से मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है और तबियत दुखी भी हुई। उसी समय कुलदीप श्रीवास्तव बाराबंकी वाले भी यहॉ आ गये, उनकी हालत भी अच्छी थी। मैंने उनके माथे पर टीका लगाया और उनसे मिलकर काफी खुशी हुई। कोई गा रहा है–

“तेरी रहमत की तजल्ली जिसमें हो ।
कर मयस्सर ये खुदा वह दिल मुझे।
गर्चे नाकिस हूॅ बना दे ये करीम
कामिलों के जिक से कामिल मुझे।।”

तभी ऑख खुल गयी।

(88) दिनांक 17–11–2008

इधर बराबर ही दो तीन हफ्ते से रात में सतसंग देखते थे और बुजुर्गो की Presence और पूज्य बाबूजी, पूज्य ताऊजी की Presence मालूम होती थी और लगता था कि हर जगह सतसंग हो रहा है, जिसमें अपने यहाँ और जगह के सतसंग शामिल हैं और बड़ा अच्छा लगता था, परन्तु आज रात को मैंने ख्वाब देखा कि पूज्य बाबूजी आये हैं और मुझसे कह रहे हैं कि बेटे होशियार हो जाओ, कुछ बाहर के लोगों के नाम उन्होंने बताये जो इस प्रकार है– 1,2,3,4 और यह कहा कि कुछ हमारे यहाँ के भी लोग हैं जो तुम्हारे विरूद्ध बहुत बड़ा षडयंत्र रच रहे हैं, होशियार हो जाओ। बड़ी हिम्मत और होशियारी से काम लेना और मेरा तथा बुजुर्गो का काम हमेशा ही करते रहना। ईश्वर चाहेगा सफलता मिलेगी। मेरे पास कुछ लोग आये हैं और कहा फलाने जगह सतसंग हो रहा है आप अवश्य पधारें। हम लोग और अजय वहाँ गये हैं। वहाँ पर सतसंग भी attend किया, परन्तु वहाँ का वातावरण ठीक नहीं था। सतसंग समाप्त होते ही मैंने कहा मुझे जल्दी अपने यहाँ सतसंग में जाना है। कोई पास का रास्ता बता दीजिए। उन लोगों ने मुझे गलत रास्ता बता दिया। जिसमें सड़क पर जगह–जगह रास्ता कटा था। मजदूरों ने बताया कि यह गलत रास्ता है। इससे आप वहाँ नहीं पहुँच पायेंगे और आपका सतसंग छूट जायेगा। इन लोगों से बेबसी में दुखी हो

कर परम पूज्य बाबूजी महाराज को याद किया। आपने कहा हमारे पीछे–पीछे चले आओ। ऐसा लगा लोग हम लोगों का बुरी तरह इन्तजार कर रहे थे, जहॉ सतसंग हो रहा था और वहाँ पहुँचकर सतसंग में शामिल हो गये।

नोट :– 18 तारीख को एक साहब अपने यहॉ आए और 20 तारीख को उनके व्यवहार से सपने की पुष्टि हो गई।

(89) दिनांक 15–11–2009

आज दिनांक 15 नवम्बर, 2009 दिन इतवार मैंने सपने में देखा कि गौरव अपना होलडाल बांध रहे हैं और नौकरी पर जाने की तैयारी कर रहे हैं। परम पूज्य बाबूजी कह रहे हैं कि बेटे इसे जाने दो बहुत दिन हो गये। इसे नौकरी पर जाने दो। इसने तुम्हारा काफी काम निपटा दिया। ऑख खुल गई।

नोट :– मैंने करीब दो बजे इससे पूछा था कि तुम्हारा Order आया? उसने कहा– नहीं। इसी बीच राय साहब के लड़के बब्बू का मद्रास जाने का Order आ गया। मेरे मुॅह से अचानक निकल गया कि बंगलौर हो जाता तो बड़ा अच्छा रहता। सतसंग भी चलता रहता। कुछ ऐसी दया हुई कि बगैर किसी Source के बब्बू का फाइनल Order बंगलौर का आया और उसने Join भी कर लिया। मेरा ख्याल यह हुआ कि हो सकता है कि बब्बू को देखा हो और ख्याल गौरव का आ गया हो क्योंकि वह रोज आता है। दूसरे दिन गौरव

की भी पोस्टिंग आर्डर आ गया। उसकी Posting की बहुत खुशी हुई। ईश्वर उसे हमेशा खुश रखें। मेरे ख्वाब की पूर्ति हो गयी।

(90) दिनांक 20—02—2010

20—02—2010 से बराबर रात में सतसंग एवं भण्डारा देख रहा हूॅ और हर जगह पर परम पूज्य ताऊजी, पूज्य बाबूजी महाराज तथा बुजुर्गों को देखता हूॅ। एक जगह अनमोल और अंकुर की प्रजेन्स बहुत साफ मेरे साथ थी और सतसंगी भाई थे जिनका अब मुझे ध्यान नहीं। अंकुर की प्रेजेन्स एक दिन और मेरे साथ थी।

आज 25 तारीख को सुबह के समय मैंने स्वप्न देखा कि बाजपेई जी से कह रहा हूॅ कि आप अपनी गाड़ी से एक मजार पर मुझे पहुॅचा दें। वे बुजुर्ग मुझे बुला रहे हैं। मैं बाजपेयी जी की गाड़ी से अपने हाथ में एक लाल डिब्बा प्रसाद का लेकर हजरतगंज पहले चौराहे से दाहिनी तरफ मुड़ कर (लालबाग) डी0एम0 कोठी के पीछे तरफ जाता हूॅ। वहॉ अब कुछ इसाई लोग रहते हैं, वहीं पर एक मजार सी है, वहॉ गया। बाजपेयी जी मुझे छोड़कर वापस चले गए थे। तभी एक बुजुर्ग आते हैं और मुझसे कहते हैं कि मैं यहीं रह रहा हॅू। मैं भी सरहिन्द के अलफसानी साहब से वास्ता रखता हॅू और उन्हीं का खानदानी हॅू। मैं उनके पीछे—पीछे जाता हॅू क्या देखता हॅू कि हम लोग सरहिन्द पहॅुच गये हैं और वो

मुझसे कह रहे हैं कि लाओ तुम्हारा प्रसाद बुजुर्गों को चढ़ा दूँ। मैं और वो भीतर जाकर प्रसाद चढ़ातें है वो कह रहे हैं तुम्हारा प्रसाद कुबूल हो गया। जब हम लोग मजार की तरफ जा रहे हैं तो मेरे साथ अनमोल, अंकुर, मेरी धर्मपत्नी तथा कुछ लोग और भी दिखाई पड़े, जिनका मुझे ध्यान नहीं।

(91) दिनांक 18—03—2012

आज सुबह 4:30 AM को यह ख्वाब देखा कि परम पूज्य लालाजी महाराज की समाधि पर फतेहगढ़ में भण्डारा हो रहा है और चारों ओर आदमी ही आदमी से पंडाल भरा है। समाधि पर मैं और ओंकार भाई साहब एक तरफ बैठे हैं और लोग भी समाधि मंदिर के अन्दर बैठे हैं। ओंकार भाई साहब और मेरे गले में फूलों की माला पड़ी है। इतने में पूज्य सेठ भाई साहब आकर दूसरी तरफ बैठ जाते हैं और लोग उनके गले में गुलाब के फूलों की माला से पूरे गरदन को ढक देते हैं और केवल उनका सर ही दिखाई देता है। पूज्य सेठ भाई साहब थोड़ी देर में चले जाते हैं और अपने गले की सब मालायें उतार कर मेरे गले में डाल देते हैं और हर तरफ गुलाब के फूलों की बारिश हो रही है। इसी बीच ऑख खुल गई और तबियत हल्की और खुश थी।

(92) "Sunday" दिनांक 21—04—2013

21 तारीख की रात में करीब 2:15 तथा 4:30 बजे दो बार एक ही सपना देखा कि कोई बड़ी जगह है। जहॉ

चन्द्राकार में कुर्सियॉ पड़ी हैं और उस पर बहुत से बुजुर्ग बैठे हैं। ठीक बीच में परम पूज्य बाबूजी महाराज बैठे हैं। उनके बगल में कोई बुजुर्ग बैठे हैं, जिनकी शक्ल सूरत कबीर साहब से मिलती जुलती है और सामने 100–200 गायें जो बहुत सुंदर एवं सफेद रंग की हैं (छोटी सींग वाली, काली सींग वाली) जो लाइन से बैठी हैं। उन गायों के पीछे बहुत से लोग खड़े हैं। ऐसा लग रहा है कि जितनी गायें हैं, उतने ही लोग हैं, क्योंकि वह मेरे पीछे हैं। इसलिए लोगों की शक्ल अच्छे से न देख सका। मैं पूज्य बाबूजी की तरफ मुॅह करके खड़ा हूॅ। वह बुजुर्ग पूज्य बाबूजी से कह रहे हैं कि मुझसे कहें कि इतने और लोगों की जिम्मदारी दे दो। गो कि पूज्य बाबूजी उनसे कुछ नहीं कह रहे हैं। लेकिन उनके चेहरे के भाव से मुझे यह लग रहा है कि उनको लग रहा है कि वह मुझसे Over Due ले रहे हैं और कह रहे हैं कि बेटे यह भी काम कर दो। एक गाय के किनारे मैंने नन्द जी को खड़े हुए देखा। उसी समय मेरी ऑख खुल गई। सपने का आशय समझ नहीं पाया, सपना तो सपना ही है।

<u>नोटः– तीन विशेष बातें हैं–</u>

इतने बुजुर्गो को एक साथ बैठे मैंने कभी नहीं देखा था। पूज्य बाबूजी ठीक बीच में उन बुजुर्ग के साथ बैठे हैं।

इतनी सुन्दर सफेद गाय और सुन्दर काले सींग मैंने जिन्दगी में नहीं देखा।

सपने को दो बार देखा बिल्कुल वही और नन्द जी की Presence और तबियत बहुत हल्की है।

(93) "मंगलवार" दिनांक 03–09–2013

मई 2013 से जब से शाम को सतसंग शुरू हुआ उस वक्त से बराबर शाम के 6 बजे से 10 बजे तक ख्याल की धार परमार्थ की तरफ ही रहती है और दिन–दिन बढ़ रही है। रात में भी परमार्थी सपने देख रहा हूँ, उसमें से कुछ भूल गये और कुछ याद हैं। 02–09–2013 को यह ख्वाब देखा कि कहीं बहुत बड़ा सतसंग हो रहा है, जिसमें बहुत बड़ा सफेद रंग का पण्डाल है और उसका झालर एक दम केसरिया रंग का है। वह जगह रेतीली है और अगल–बगल कहीं भी गंगा या किसी नदी का किनारा है। उसी टेन्ट में बहुत से केबिन लोगो के रूकने के लिए बनाये गये हैं। उन्हीं में से एक केबिन में मैं भी रूका हूँ। मेरे साथ मेरी पत्नी, मेरा पुत्र अनमोल कुमार, अजय का पुत्र अंकुर, और त्रिभुवन सिंह का पुत्र गौरव मेरे साथ उसी केबिन में रूके हुए हैं। बहुत जबर्दस्त भीड़ है। वहॉ सभी लोग सफेद रंग के कपड़े पहने हुए हैं और केसरिया रंग का साफा बॉधे हुए, सिवाय हम लोगों के और कुछ और लोग भी हैं। तभी एक बुजुर्ग आये हैं जो कि Head हैं और केबिन में रूके सब लोग उनसे मिल रहे हैं। उन्हीं में से कोई कह रहा है कि जो उधर रूके हैं वो केसरिया साफा नहीं बॉधे हैं।

ऐसा लग रहा है कि वो व्यक्ति चाहते हैं कि उनसे न मिला जाये क्योंकि हम लोग कोई Outsider हैं। मगर वह Head कहते हैं कि यहॉ जो भी आया है, उनसे मिलना ही चाहिये और मिलने आते हैं। मैं उनके Head जी के बड़ी अदब से पैर छूता हूॅ । वह बहुत खुश होते हैं और कहते हैं कि बहुत अच्छा हुआ तुम आ गये, उनसे मैं अपनी पत्नी, अनमोल, अंकुर और गौरव का परिचय कराता हूॅ। वह लोग भी उनके पैर छूते हैं और वह आशीर्वाद देते हैं। ऐसा मालूम होता है कि वह मुझको अपने साथ डायस पर जो थोड़ा ही ऊॅचा हैं, ले जाना चाहते हैं। स्वयं वह एक कुर्सी पर बैठ गये और मुझे सामने बिठा कर कहने लगे, जब तुम आ गये हो तो तुम्हीं इन लोगों को परमार्थ के बारे में कुछ बताओ। जितने केसरिया साफे वाले थे, सब आगे बैठे थे, पर कपड़े सबके बिल्कुल सफेद थे। मैंने उन लोगों को यह बताया कि ईश्वर कहॉ रहता है। उसने सृष्टि की रचना क्यों की और हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है और जो बताया, याद नहीं है। उन्होंने मुझे बहुत आशीर्वाद दिया और गले से लगा लिया। जो बताया वह भी याद नहीं है। फिर नींद खुल गई। सुबह मन बड़ा हल्का और अच्छा रहा।

(94) "Sunday" दिनांक 08–09–2013

आज रात में करीब सुबह चार बजे के करीब ख्वाब देखा कि पूज्य कबीर साहब, परम पूज्य ताऊजी के साथ तशरीफ

लाये हैं। पूज्य ताऊजी ने कहा कि बेटे उठो मेरे साथ कबीर साहब भी तुम्हें आशीर्वाद देने आये हैं। कबीर साहब ने मुझे एक कागज दिया, जिस पर उर्दू में कुछ लिखा था। नीचे उनके दस्तखत थे। दस्तखत के नीचे 7 points लिखे थे, जिन पर 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 करके नम्बरिंग थी। कबीर साहब और गुरूदेव ने कहा कि बेटे यह 7 बातें और सब को बता दो। बहुत सोचने पर भी वह याद नहीं आ रही है। हालांकि उस समय सब याद था। उन्होने मुझसे कहा कि तुमने सब बातें बहुत अच्छी तरह बता दी, बस यह सात बातें और बता दो। बस नींद खुल गई। तबियत बहुत खुश और हल्की थी।

(95) दिनांक 26–10–2013

आज शनिवार की सुबह 5 बजे उठा, बाथरूम में गया फिर कमजोरी के कारण फिर लेट गया और सोचा कि 6 बजे उठूँगा। क्योंकि Saturday था। Mr. K.D.Srivastava Ji के यहॉ सतसंग था। एक ख्वाब देखा कि कोई बुजुर्ग आये हैं। मुझे साथ ले गये हैं और कह रहे कि आओ मैं तुम्हें सब बुजुर्गों की मजार दिखा दूँ, क्योंकि आज के दिन यहॉ सब बुजुर्ग अपनी मजार के साथ आते हैं। वे मुझे हर मजार पर ले गये हैं। मैंने देखा हर मजार फूल और लाइट से बहुत सुन्दर सजी हुई है। हर मजार पर उर्स की तरह कव्वाली हो रही है और मोमबत्ती तथा अगरबत्ती जल रही है। मैंने देखा इसी बीच सेठ भाई साहब आते हैं और कहते हैं कि मुझे मालूम

हुआ कि तुम आ रहे हो, इसलिए मैं आ गया कि मुलाकात भी हो जायेगी और दर्शन भी हो जायेगा।

दो मजार जिसका मुझे अच्छी तरह ख्याल है कि एक मजार कुबेरपुर कायमगंज हजरत मौलवी अहमद अली साहब की पुरानी मजार की तरह थी, जिस पर छत नहीं थी और एक मजार नसीराबाद वाले बुजुर्ग बुल हसन साहब की तरह मालूम होती थी, जिस पर बहुत सुंदर सफेद फूल चढ़े थे। सब मजार एक हजार एक थीं, जिसे मैंने और सेठ भाई साहब ने साथ–साथ दर्शन किये। वही बुजुर्ग बताते हैं कि यहॉ पांचों शरीफ बुजुर्गो की मजार हैं। मैं ख्याल करता हूॅ कि शायद हम लोग अजमेर में हैं। वहॉ से हम दोनों चलकर सड़क पर आये जो मजारो से काफी ऊॅची थी। मैं भाई साहब से कह रहा हूॅ कि आप भी मेरे साथ चलिये, मेरे पास Second Class का टिकट है। स्टेशन पर बड़ी भीड़ है। वहॉ मुझे बुलंदशहर वाले Dr. R.C. Saxena मिले, मुझसे कह रहे हैं कि मुझे मालूम हुआ कि आप लोग आये है, इसीलिए मैं भी आ गया और सोचा कि आपके साथ ही सब मजारों का दर्शन कर लॅूगा और आपको Train पर बिठा दॅूगा। भाई साहब कहते हैं कि हम चलते हैं और जाने लगे। मैंने पूछा कि आप कहॉ रहते हैं। इसका उन्होंने कुछ जवाब नहीं दिया। कुछ मजारे पूरी मस्जिद की तरह थी, जिसमें से एक श्री फजल अहमद साहब की तरह लग रही थी। सब

जगह सफेद फूल और कही–कहीं लाल फूल भी है और दृश्य बहुत सुंदर है। मैं और Dr R.C. Saxena साथ–साथ आये फिर वह कहॉ गये पता नही। मैं अपने घर आ गया। तबियत काफी अच्छी और हल्की रही। Mr. K.D. Srivastava के यहॉ हालत बहुत अच्छी रही। जो बुजुर्ग मुझे ले गये वो लम्बे से हैं, पर मैं उन्हें पहचानता नहीं हूॅ । सभी मजार सफेद रंग की थी और कहीं–कहीं बहुत भीड़ थी और कही–कहीं कुछ कम, परन्तु भीड़ बहुत है।

(96) दिनांक 29–10–2013

आज दिनांक 29–10–2013 दिन मंगलवार को सुबह 5 बजे देखा कि परम पूज्य बाबूजी एवं पूज्य माता जी, मुन्नी बहन कुसुम एक छोटे बच्चे के साथ मेरे घर आये हैं। उस बच्चे को कुछ तकलीफ है, उसको दिखाने के लिए किसी का नया घर है, जहॉ सभी दिवाले flexible हैं अर्थात् दिवाल हटा दो तो हाल जैसा हो जाता है। वहॉ सतसंग में गया हूॅ। एक कमरा जिसमें परम पूज्य लालाजी महाराज , पूज्य चच्चाजी महाराज, पूज्य बाबूजी का खूब बड़ा Photo रखा है। एक fix दीवाल है, उस पर पूज्य ताऊजी का Photo टंगा हुआ है। वहॉ बैठे 5–6 लोग सतसंग कर रहे हैं। मैं भी फोटो की तरफ बैठा हुआ हूॅ । वे ज्यादातर वे लोग हैं जो सुंदर लाल मामाजी या राणा जी के यहॉ जाते हैं। इतने में किसी ने बताया कि पूज्य बाबूजी और पूज्य माताजी आये हैं।

उन्होंने मकान देखा और मकान उन्हें बहुत पसंद आया। एक दीवाल को हटाया तो देखा कि बहुत से सतसंगी बैठे हुये हैं। पूरा हाल भरा हुआ है। परम पूज्य बाबूजी महाराज साहब ने मुझे बहुत आशीर्वाद दिया। बहुत खुश थे। मैंने एक डाक्टर को बुलाकर मुन्नी के साथ के बच्चे को दिखला दिया। मैंने पूज्य बाबूजी से आज्ञा मांगी कि डाक्टर साहब को गेट तक पहुॅचा दूॅ।

जब डा0 साहब को गेट तक पहुॅचा कर वापस आता हूॅ तो देखा कि पूज्य बाबूजी, माताजी, मुन्नी तथा उनके साथ का बच्चा कोई नहीं है। सब सतसंगियों को प्रसाद बांटा जा रहा है। उसी समय मेरी पत्नी ने मुझे उठाया कि उठिये, 6 बज गये, देर हो गई और ऑख खुल गई। मन बड़ा हल्का था और तबियत भी ठीक है।

(97) दिनांक 30—10—2013

आज दिनांक 30—10—2013 दिन बुधवार को यह ख्वाब करीब 5 या साढ़े 5 बजे देखा कि कहीं पंडाल लगाकर बहुत बड़ा सतसंग हो रहा है, जिसमें लाखों लोग हैं और सब लोग बैठ कर पूजा कर रहे हैं। एक बहुत ऊॅचा सा सिंहासन है, जिस पर परम पूज्य ताऊजी विराजमान हैं और उनके गले में, हाथ पर, पैरों पर, बहुत सुंदर सफेद बेला और पीले गेंदे के फूल हैं। उनके पैरों के नीचे एक तख्त है, जिस पर पूज्य सेठ भाई साहब विराजमान हैं। उनके गले में भी फूलों की माला

है। सेठ भाई साहब जिस तख्त पर बैठे हैं, जगह खाली है, वहॉ फूल रखें हैं। सबसे नीचे एक तख्त है, जिस परम पूज्य बाबूजी साहब और अनमोल बैठे हैं और सबको सतसंग करा रहे हैं।

परम पूज्य ताऊजी महाराज और सेठ भाई साहब बार–बार इधर–उधर देख रहे हैं जैसे किसी का इन्तजार कर रहे हों। इसी बीच, मैं पंडाल में पहुॅचता हूॅ तो आप (पूज्य ताऊजी) बुलाते हैं। आओ नन्हे तुम इधर मेरे पास आ जाओ। तभी नींद खुल गई। पंडाल का दृश्य सुन्दर था और सभी लोग खुश थे। पंडाल में मैंने फतेहगढ़ वाले प्रिय विनय को भी देखा था। बहुत से पुराने लोगों जैसे ठा0 शिव नरेश सिंह, ठा0 रघुराज सिंह जी, राम नारायण जी, नन्द जी, सबको देखा था। मैं सोच रहा हूॅ कि इतना बड़ा हाल है तो सतसंग पंडाल में क्यो हो रहा है। पूज्य ताऊजी, पूज्य बाबूजी यह कह रहे हैं कि इतने लोगों का किसी हाल में आना सम्भव नहीं था, इसलिये टैन्ट लगाया है। वहॉ पर पूज्य राधे भाई साहब, पूज्य गोपाल भाई साहब और डा0 शक्ति को भी देखा। जो भी हो दृश्य बहुत सुंदर था।

(98) शनिवार, दिनांक 06–11–2013

आज सुबह समय 5:30 बज ख्वाब देखा, बल्कि कह सकता हूॅ कि ऐसा लग रहा था कि खुली ऑखों देख रहा हूॅ कि किसी जगह पर बहुत बड़ा सतसंग हो रहा है। वहॉ पर

Gate पर बैनर लगा हुआ है। जिस पर लिखा है "महासंत समारोह" नीचे कुछ छोटा–छोटा सा लिखा है, मुझे याद नहीं। बैनर पीले एवं गेरुवे रंग का है और बहुत Shining है। वहॉ हजारों टेन्ट लगे हुए हैं, जिनमें लोग रुके हुए हैं। बहुत से लोगों को मैं पहचानता भी नहीं हूॅ। वहॉ सरदारजी भाई साहब भी कुछ लोगों के साथ अलग–अलग टैन्ट में है। मेरे वाले टेन्ट में मैं, परम पूज्य बाबूजी महाराज और कुछ और सतसंगी भी है। एक और टैन्ट है, जिसमें परम पूज्य लालाजी महाराज एवं पूज्य ताऊजी महाराज रूके हैं। एक तरफ को बहुत बड़ा सा पंडाल लगा हुआ है। वहॉ एक तख्त पर एक बुजुर्ग बैठे हुए हैं वो एक List से पुकार–पुकार कर लोगो को बुलाते हैं। वो हर एक से कुछ सवाल करते हैं और लोग उत्तर देते हैं, फिर उन्हें वापस कर देते हैं। वो हर एक से एक ही प्रश्न पूछते हैं, उसका उत्तर सुनते हैं। यदि वह व्यक्ति उसका सही उत्तर देता हैं तभी दूसरा प्रश्न करते हैं नहीं तो उसको वापस कर देते हैं। उन्होने एक अभ्यासी से जिसमें वह खुद इन्टरेस्टेड थे, एक प्रश्न पूछा, जिसका वह संतोषजनक उत्तर न दे पाया और बुजुर्गो को ऐसा लगा कि वह उसमें विशेष रुचि ले रहे हैं और यह बात उन लोगों को नागवार लगी कि क्यों वह उससे इतनी बार प्रश्न कर रहे हैं। जब कि वह उत्तर नहीं दे पा रहे हैं। उसके बाद मेरा नम्बर आया और उन्होंने मुझको बुलाया। मैंने जाकर बड़ी अदब से

उनके पैर छुए जिससे वह बड़े खुश हुए थे। क्योंकि ज्यादातर लोगों ने उन्हें प्रणाम ही किया था। उन्होने सबसे पहले यह प्रश्न किया कि :–

बरखुरदार लय होना किसे कहते हैं और किसमें लय होना चाहिए। मैंने उत्तर दिया कि अपने गुरू में लय होना चाहिये और अपने गुरू का ख्याल मुतवातिर बना रहे, इसी को गुरू में लय होना कहते हैं। फौरन ही उन्होंने पूछा कि:–

फनॉ होना क्या है, बका होना क्या है, फनाफिल बका क्या है?

मैंने चारो प्रश्नों के उत्तर सही दे दिये। मेरे प्रश्नों के उत्तर सुनने के बाद परम पूज्य लालाजी महाराज एवं परम पूज्य ताऊजी महाराज बहुत खुश हुए। उन्होंने यह कहा कि हाजरीने जलसा (ये जिसके भी शिष्य हैं) उन्होंने सभी प्रश्नों के उत्तर बहुत ही बेहतरीन तरीके से दिया है, जिससे मैं पूर्ण रूप से संतुष्ट हॅू। मगर इन्साने अवल्लीन घोषित करने के लिए मैं चाहता हॅू कि फिर एक मौका कुछ लोगों को दिया जाये। इनकी इस घोषणा के बाद परम पूज्य ताऊजी महाराज बहुत तेजी से पहॅुच गये और पूज्य लालाजी महाराज उन्ही के पीछे थे और उन्होने उन बुजुर्ग से कहा कि यह सरासर भेद–भाव है क्योंकि आपका वो शागिर्द कुछ उत्तर न दे सका, इसलिये आप ऐसा कह रहे हैं और उन्होने उन बुजुर्ग की कुर्सी ढकेल दी और उनकी जगह परम पूज्य

लालाजी महाराज को बिठाल के यह घोषित किया कि मेरा यह शिष्य जो कि डा0 श्याम लाल जी का पुत्र है, इस प्रतियोगिता में सबसे श्रेष्ठ घोषित किया जाता है। जिसको परम पूज्य लालाजी महाराज ने भी Approve किया। परम पूज्य लालाजी महाराज तथा परम पूज्य ताऊजी, परम पूज्य बाबूजी महाराज को बहुत खुश देखा। इस प्रतियोगिता में हजारो लोग शामिल है, जिनको मैं नहीं जानता। मैंने परम पूज्य लालजी महाराज, परम पूज्य ताऊजी तथा पूज्य बाबूजी के पैर छुए, उन्होंने बहुत आशीर्वाद दिया। तभी ऑख खुल गई।

(99) जब से इस वर्ष गाजियाबाद भण्डारे 2013 अक्टूबर से लौट कर आये हैं। बराबर हर दूसरे–तीसरे दिन यह देखता हूॅ कि जगह–जगह बहुत बड़े–बड़े सतसंग हो रहे हैं। जिनमें मैं बहुत से गुजरे हुए बुजुर्गो को देखता हूॅ, विशेषकर परम पूज्य लालाजी महाराज, पूज्य चाचाजी महाराज, पूज्य ताऊजी महाराज, पूज्य बाबूजी महाराज, पूज्य डा0 चतुर्भुज साहब, पूज्य बाबू बृजमोहन लाल जी, ठाकुर राम सिंह जी तथा बहुत से मुसलमान संत। जगह–जगह मन्दिर तथा मस्जिदें भी दिखाई पड़ती है। ज्यादातर यह अवस्था करीब–करीब हर दूसरे–तीसरे दिन होती है तथा समय 4 से 5 बजे सुबह का होता है। इसलिए मैंने अलग–अलग सपनों को लिखना भी छोड़ दिया है। कभी–कभी अस्पताल तथा मरीजों को भी देखा है परन्तु बहुत कम। हर सपने के अन्त में यह देखता हूॅ

कि पहाड़ की ऊँचाई पर एक बहुत सुन्दर कुटिया भी है। वहॉ एक खाट है उसी पर जाकर लेट जाता हूॅ। उसमें एक तरफ सितार–वीणा रखी है। वहां विश्राम करते हुए मेरी ऑखें खुल जाती हैं। एक अजब सी शान्ति है, जिसके अनुभव का वर्णन करना सम्भव नहीं है।

(100) दिनांक 21–02–2014

आज दिनांक 21–02–2014 दिन शुक्रवार को सुबह 5 बजे यह ख्वाब देखा कि कानपुर में कहीं टेन्ट में बहुत बड़ा सतसंग हो रहा है। बहुत भीड़ है। वहॉ पर मैंने बहुत से पुराने सतसंगी भाइयों को देखा, जो इस दुनिया में नही हैं, जिनके मुझे नाम ख्याल और याद हैं, परम पूज्य चाचाजी महाराज के तीनों बेटे, पूज्य बाबू बृजमोहन लाल जी, पूज्य राधा मोहन लाल तथा पूज्य ज्योतिन्द्र मोहन, पूज्य हरबंश लाल त्रिपाठी जी, पूज्य गांधी जी, विशम्भर नाथ श्रीवास्तव (लखनऊ वाले) पंडित त्रिभुवन दत्त बाजपेयी, काली शंकर, अमीनाबाद वाले के0के0 शुक्ला के पिताजी, अनिल श्रीवास्तव के पिताजी, गिरिजादयाल, इनके अतिरिक्त जो जीवित लोगों में के0के0 शुक्ला अमीनाबाद, बाबू राम जी, गिरीश बाबू, राजेन्द्र, लालाजी, दयाराम व अपने यहॉ के बहुत से लोग जो अब शरीर में नहीं हैं और इतने नये लोग जिन्हें मैं पहचानता भी नहीं हूॅ।

मैं ओंकार भाई साहब को भी चारों तरफ ढूॅढ़ रहा हूॅ और पूछ रहा हूॅ कि क्या ओंकार भाई साहब आये है। लोग

कह रहे हैं कि वो कहीं दिखाई नहीं पड़े। मैं वहॉ पहुॅचता हूॅ जहॉ परम पूज्य चाचाजी महाराज सतसंग करा रहे हैं और जब उनके पैर छूता हूॅ तो खड़े होकर मुझे गले लगाते हैं। उनके पीछे पूज्य बाबूजी महाराज साहब और पूज्य चाचाजी के तीनों पुत्र खड़े हैं। वहॉ से परम पूज्य चाचाजी महाराज साहब जो कि बहुत खुश हैं, वो एक हाथ पूज्य बाबूजी महाराज के कंधे पर तथा दूसरा मेरे कंधें पर रख कर शायद जहॉ रूम है, वहॉ पण्डाल से निकल कर चले गये। तभी ऑख खुल गई।

(101) दिनांक 01–03–2014

दिन शनिवार करीब 3 या 4 बजे एक ख्वाब देखा कि एक जगह बहुत बड़ा सतसंग है जहॉ पूज्य सेठ भाई साहब पूजा करा रहे हैं। बहुत से लोग हैं। सेठ भाई साहब की कुर्सी चारों तरफ से फूलों से सजी है। जहॉ तक ख्याल है गाजियाबाद ही जैसा है, पर मैदान है। वहॉ कोई भी बिल्डिंग नहीं है।

उस सतसंग में बहुत से पुराने सतसंगी पूज्य ताऊजी के यहॉ के तथा हमारे यहॉ (पूज्य बाबूजी के यहॉ के) और जो लोग गुजर गये हैं, उनको भी सतसंग में पूजा करते देखा। वो लोग वहीं मौजूद हैं मैं वहॉ पूज्य भाई साहब की तलाश में जाता हूॅ तो देखता हूॅ कि पूज्य भाई साहब बहुत खुश होते हैं और अपने पीछे एक कुर्सी डलवाते हैं, जो कि उसी तरह

फूलों से सजी है। मुझे कहते हैं कि तुम उधर मुॅह करके बैठ जाओ, जिससे सबको तवज्जो मिले। मैं जब उधर मुॅह करके बैठता हॅू तो देखता हूं कि पूज्य सेवती प्रसाद फूफा जी, सरदार करतार सिंह जी और के0बी सक्सेना बैठै हैं। मैं के0बी सक्सेना को पूज्य भाई साहब से मिलवाता हॅू । मैं तथा सेठ भाई साहब दोनों लोग बहुत खुश हैं। तभी ऑख खुल जाती है।

(102) अप्रैल, 2014

अप्रैल 2014 से बराबर रात में हर पाँच–छः दिन के अन्तराल पर यह सपना दिखाई पड़ता है कि कहीं छोटे–छोटे गाँव में सत्संग हो रहा है और मैं ही सत्संग करा रहा हूँ। सत्संग के बाद एक बहुत पहाड़ की ऊँचाई पर एक झोपड़ी में चारपाई पर लेट जाता हूँ, वहाँ कोई सामान नहीं है, केवल चारपाई है, उस पर कोई बिस्तर नहीं है। वहाँ कभी पूज्य ताऊ जी महाराज और कभी पूज्य बाबूजी महराज को वहीं पाता हूँ और कभी अपने को अकेले ही पाता हूँ। जब उन लोगों को देखता हूँ, बहुत खुश होता हूँ, वो लोग भी बहुत खुश हैं। पिछले 5–6 महीने से यही देख रहा हूँ।

(103) दिनांक 25/26 सितम्बर 2014

रात को ख्वाब देखा कि कहीं बहुत बड़ा भण्डारा हो रहा है। सब लोग कह रहे हैं कि हम लोग भैया जी के ही हाथ से प्रसाद लेंगे। बहुत लम्बी लाइन लगी है। उस लाइन में चौथे नम्बर पर श्री नागेन्द्र राय (लखनऊ) खड़े हैं। बजाए

सामने देखने के वो झुक–झुक कर मेरी तरफ ही देख रहे हैं। मैंने भी उन्हें देख लिया। मैंने भी दोनों हाथों से प्रसाद बाँटना शुरू किया जिससे उन्हें मिल जाय जो तीसरे नम्बर पर जो शख्स था, वह समझ गया कि मैं उन्हें पहले देना चाहता हूँ। वह मुस्कराने लगा। एक तरफ खड़े होकर देखने लगा कि मैं प्रसाद एक ही हाथ से बाँट रहा था। सुबह होते ही उनका फोन आया कि भण्डारा गाजियाबाद के बारे में पूछने के लिए, जिससे सिद्ध होता है कि इस अवस्था का उन्हें एहसास हुआ होगा।

(104) दिनांक 30.05.2015 दिन शनिवार

स्थान–बी–1/26 सेक्टर–के, अलीगंज, लखनऊ

आज दिनांक 30.05.2015 दिन शनिवार को समय करीब 2.30 बजे रोज की तरह दिन को खाना खाकर सो गया। सपने में देखा कि मैं, मेरी पत्नी, मेरी दोनों पोती (रूपाली व काव्या) और पोता अर्थ, संतान अतुल कुमार, कहीं गये हैं, जहाँ पर सड़क के किनारे एक टी स्टाल है, उसके किनारे एक बेंच पड़ी है, जहाँ हम लोग बैठे हुए हैं। पीछे की तरफ से कुछ लोग निकल कर बाहर आ रहे हैं। मैंने पूछा वहाँ कोई रह रहा है, उन्होंने कहा कि वहाँ सत्संग हो रहा है, एक बड़े सन्त आये हुए हैं। मैं अकेले ही यह देखने कि वहाँ कौन है, अन्दर गया।

वहाँ देखा कि कमरे में एक किनारे पर गद्दी पर परम पूज्य ताऊ जी महाराज बैठे हें। बिल्कुल गुरुपूर्णिमा वाला

पोज था, पर माला गले में नहीं है। आपने बड़े प्रेम से मुझको अपने बगल में बिठा लिया। मुझे देखकर खुश तो बहुत हुए पर कुछ बोलते नहीं हैं। बस देखे ही चले जा रहे हैं, न तो किसी के बारे में कुछ पूछ रहे हैं, न कुछ और कह रहे हैं। मैं मन ही मन में सोच रहा हूँ कि ताऊ जी तो वही हैं, पर कुछ बदले बदले से हैं। बस मुझे उठने नहीं दे रहे हैं, मेरे गले में हाथ डाले बैठे हैं। बहुत से लोग है, किसी को नहीं पहचानता हूँ, ऐसा लग रहा है कि राजस्थान के लोग हैं। वह लोग आपस में बातचीत भी कर रहे हैं। सुबह से शाम हो गयी और शाम के 5 बजे मैं देखता हूँ कि मेरी पत्नी उसी कमरे में आ जाती हैं और शिकायत कर रही हैं कि खुद आके बैठ गये, हमें नहीं बताया। इस पर वह कुछ बोलते नहीं है, लग रहा है पहचानने की कोशिश कर रहे हैं। मैं मन में सोच रहा हूँ कि लगता यह है कि यह उनका दूसरा जन्म है, वह किसी को पहचान नहीं रहे हैं। इतने में 6 बज जाते हैं। वह घूमने चले जाते हैं और फिर आकर चारपाई पर बैठकर सत्संग कराने लगते हैं। इस समय भी शक्ल गुरुपूर्णिमा वाली है, पर गले में माला है। सब मिलाकर 100 से ज्यादा लोग सत्संग में है। मेरी आँख खुल गई, तबियत बहुत खुश है और रात तक हल्की रही। इतनी देर रहे पर वह किसी के बारे में कुछ नहीं पूछा, बस पूजा होती रही और मुझे बार–बार अपने पास खींच कर बैठाते रहे। करीब 4.30 बजे ऑख खुल गयी।

(105) दिनांक 4 सितम्बर, 2015

दिनांक 1 सितम्बर से वायरल फीवर के कारण मुझे कुछ भी होश नहीं रहा था। उसी अवस्था में स्वप्न में देखा कि दिनांक 04 सितम्बर की रात्रि में ढाई बजे रात में मुझे पेशाब करने जाने के लिए चप्पल पहननी थी परन्तु चप्पल नहीं मिल रही थी और मैंने देखा कि मेरी चप्पल की जगह एक नई चप्पल मिली। मैं हैरान था कि मेरी चप्पल कहाँ गयी। मैंने अपनी पत्नी जो कि सो रही थीं, उनसे पूछा मेरी चप्पल कहाँ है। कहा कि कोई हमारी चप्पल ले गया और नई चप्पल छोड़ गया है। मैंने वह चप्पल उठाकर अपनी पत्नी को दिखाया। उसी समय मैंने साफ देखा कि कमरे का दरवाजा खोलकर कोई आकृति आई और पैरों के पास मेरी पुरानी चप्पल उठाकर पहन ली और नई चप्पल छोड़कर कहा कि अब इसी नई चप्पल को पहन कर कुछ दिन काम करो। उस आकृति को पहचान न सका परन्तु आवाज पूज्य ताऊ जी की ही थी, ऐसा मालूम होता है लेकिन सही नहीं पहचान सका। उसके बाद तबियत ठीक हो गयी। मैं 4, 5 व 6 तीनों रात बिल्कुल नहीं सोया, परन्तु बिल्कुल थकान नहीं था, दिनांक 6 को रविवार था। हम 4 लोग बदस्तूर देवस्थली आश्रम सत्संग के लिए गये। पूजा में खूब तबियत लगी। बक्सर भण्डारे का भी अन्तिम दिन था। जब प्रसाद के समय मैं अस्सलाम पढ़ रहा था तो परम पूज्य बाबूजी महाराज जैसे

कपड़े पहने बिल्कुल उन्हीं जैसे व्यक्ति आते हैं (चेहरा न देख सका) और प्रसाद में से एक केला और कुछ प्रसाद उठाकर मेरी समाधि का पत्थर उठाकर उसमें रख दिया। कुछ प्रार्थना करके वापस आते हैं। 5–5 मिनट के अन्तराल में इसी क्रिया को रिपीट (दोहराते हैं) करते हैं। पहली और दूसरी बार पत्थर खोलकर रखा परन्तु दूसरी बार समाधि के ऊपर ही चढ़ाके प्रार्थना पढ़ी, जब तक अस्सलाम पढ़ा जा गया। जैसे ही अस्सलाम खत्म हुआ, तभी स्पष्ट परन्तु हल्की आवाज में सुनाई पड़ा अब ज्यादा समय नहीं है। इसके पूर्व लखीमपुर भण्डारा से आने के बाद 24 या 25 अगस्त को वही पुराना सपना जो कि ऊँची पहाड़ी पर बहुत सन्दर झोपड़ी में जहाँ एक खाली चारपाई पड़ी है, परम पूज्य ताऊ जी महाराज, परम पूज्य बाबूजी सीने से लगाकर बहुत प्यार करते हैं और कहते हैं बेटे तुम आराम करो, बहुत थक गये हो।

(106) दिनांक 06.02.2016

शनिवार की रात को यह ख्वाब देखा कि कहीं बहुत बड़ा सत्संग हो रहा है। मैं बहुत से सत्संगी भाई कुछ को मैं पहचानता हूँ, कुछ को नहीं। सभी लोग एक जगह इकट्ठे हो रहे हैं, जहाँ उनके रुकने की व्यवस्था हो रही है। वह जगह हास्टल की तरह है, छोटे–छोटे कमरे हैं और सभी कमरों की तरफ बराण्डा है, चारों और एक–एक गेट है, जहाँ से घुसना है, वह गेट बहुत बड़ा है। सभी लोग आकर पूछ रहे हैं, कहाँ रुकें, ऐसा प्रतीत होता है, उन लोगों के ठहराने की

जिम्मेदारी मुझे दी गयी है। सभी मुझसे कहते हैं कि इस वर्ष हम लोग केवल आपके दर्शन को आये हैं। बढ़ती हुई भीड़ को देखकर चिंतित हो रहा हूँ कि इतनी भीड़ की व्यवस्था कैसे होगी। इतने में क्या देखता हूँ कि वहाँ पर पूज्य लालाजी महाराज, पूज्य ताऊ जी महाराज, पूज्यबाबूजी महाराज कह रहे हैं कि परेशान न हो, सामने समाधि पर रुकने की व्यवस्था करो। पहले तो मुझे समझ नहीं आया कि यह आवाज किसकी है, फिर बहुत सोचने पर समझ आया कि यह आवाज पूज्य ताऊ जी की है और बाउन्ड्री फतेहगढ़ पूज्य लालाजी की समाधि की ही है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह दृश्य फतेहगढ़ की समाधि तथा सामने का है। इसके बाद आँख खुल गयी। दिन भर तबियत बहुत हल्की रही।

(107) दिनांक 10.04.2016

करीब सुबह चार बजे ख्वाब देखा कि हजरत मौलवी फजल अहमद साहब (रायपुरी) और हजरत अहमद अली साहब (कुबेरपुरी) कुछ मुसलमान बुजुर्गों के साथ मेरे घर के हाल में आये हैं और मुझसे कह रहे हैं कि तुम मेरे उर्स में रायपुर नहीं आते हो, इसीलिए मैं सबके साथ यहाँ आ गया हूँ ताकि यहाँ पर उर्स मना लिया जाये। मौलवी अहमद अली साहब ऊपर सेटी पर बैठ गये। मौलवी फजल अहमद साहब नीचे जहाँ मैं बैठता हूँ, वहाँ बैठ गये और सब लोग सामने बैठ गये और मराकबा शुरू हुआ। पूरा हाल, लाज जहाँ गाड़ी

खड़ी होती है, वहाँ तक लोग बैठ गये। मेरे मन में ख्याल आया कि इतने लोगों के प्रसाद की व्यवस्था कर दी जाये। मैंने आँख खोलकर देखा तो वहाँ मेरी पत्नी और के0डी0 श्रीवास्तव के अलावा कोई अपने यहाँ का नहीं था। मैं परेशानी में घर से बाहर आया कि कोई व्यवस्था की जाये तो मैंने देखा कि पूज्य ताऊ जी तथा पूज्य बाबूजी सबको बूँदी बॉट रहे हैं। सबको प्रसाद बँट गया। सब लोग आशीर्वाद देकर चले गये। तभी मेरी आँख खुल गयी।

घड़ी पर निगाह गई तो 5 बजकर 3 मिनट हुए थे, तबियत बहुत खुश रही।

(107) दिनांक 28.04.2016

आज रात के 10 बजे के बाद से मन और शरीर की एक अजब सी स्थिति है। ऐसा लगता है कि इसी स्थिति को बुजुर्गों ने व सन्तों ने आत्मा के आनन्द (Complete mental peace) की अनुभूति कहा होगा। करीब ढाई घण्टे बीत चुके हैं, पर अभी भी वही आनन्द, शान्ति की स्थिति है। ईश्वर और बुजुर्गों से प्रार्थना है कि उनकी दया से यही स्थिति स्थायी (Permanent) हो जाये।

आशीर्वाद–1

इधर मौत अपने घर से चली थी।
उधर रहमते इलाही उसके पीछे लगी थी।।
कहा मौत से इधर को कभी आना नहीं।
यह ही है मरजी मेरे पीर की।।
उधर मौत खौफजदा सी खड़ी थी।

आशीर्वाद–2

इस जिन्दगी को हमने जिन्दा दिली से देखा।
मौत को हम हॅसते हुये गले लगायेंगे।।
इस फानी दुनियॉ से हम खाली हाथ जायेंगे।
याद अपने पीरों मुर्शिद की अपने साथ ले जायेंगे।।
यकीन तुमको दिलाते हैं कि हम
वा वक्त मौत तुमको लेने आयेंगे।
वचनों को अपनी मौत के बाद भी निभायेंगे।।
मेरे पीर और मुर्शीद की बगिया को
तुम शाद और आबाद रखना।
वरना हम तुमसे जरूर रूठ जायेंगे।।

आशीर्वाद–3

तेरी रहमत का कैसे चलेगा मुझको पता।
बेटे वादे वफात मैं खुद आकर दूॅगा बता।।
मेरी वसीयत ही होगी जिसकी गवाह।
हर संभव करूॅगा तुम्हारी निगरानी और दूॅगा दुआ।
उसी से चलेगा तुमको मेरी रहमत का पता।।

आशीर्वाद—4

जगत में दो ही सुन्दर नाम।
चाहे कृष्ण कहो चाहे श्याम।।
दोनों ही हैं एक समान।
जिसने जीवन में इस रहस्य को जाना।
उसने ही जीवन अपना पहिचाना।।
जगत में दो ही सुन्दर नाम।
चाहे कृष्ण कहो चाहे श्याम।।

आशीर्वाद—5

सच हुआ जो कुछ कहा था तुमने अंतिम काल में।
मेरे भक्तों के लिये उदीप्त हो उठेगा दीप।।
अनकहे दौड़ेंगे उस पर खुद विवेकी प्रेम से।
आज है तेरी कृपा से प्रज्जवलित शुभ दीप।।
वह दिव्यता पाते हैं जिससे सद्भिलाषी ब्रह्म ज्ञान।
भाग्योदय होंगे स्वतः ही जो रमे गुरू प्रेम में।।

परम पूज्य डॉ0 श्याम लाल सक्सेना जी महाराज
उर्फ बाबू जी महाराज व परम पूज्य डॉ0 आर के सक्सेना उर्फ सेठ भाईसाहब

देवस्थली आश्रम
श्री कृष्ण - द्वार
राम